नदी का पानी

एवं

अन्य नाटक

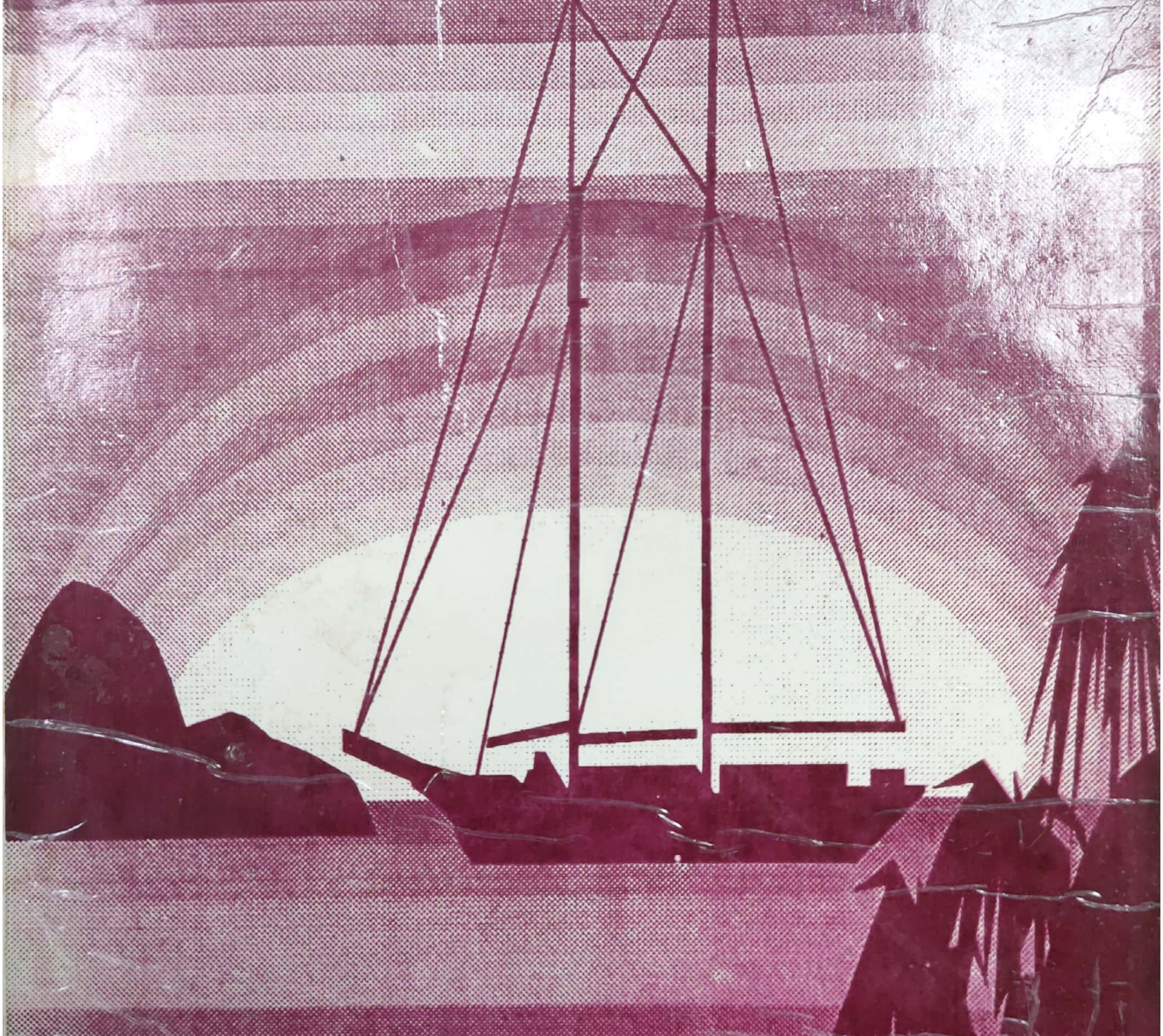

डॉ. चतुर्भुज

Scanned with OKEN Scanner

नदी का पानी

एवं

अन्य नाटक

लेखक

डॉ. चतुर्भुज

प्रकाशक

मगध कलाकार प्रकाशन

106, श्रीकृष्णनगर, पटना-800 001 (बिहार)

Scanned with OKEN Scanner

'Nadi ka Pani' and Other Dramas
by
Dr. Chaturbhuj

© सर्वाधिकार लेखकाधीन

प्रथम संस्करण, अगस्त, 1998
मूल्य – 60 रुपये

Printed by
Vatayan Media & Publications Pvt. Ltd.
Adision Arcade, Leyland Compound
Fraser Road, Patna-800 001

लेखक के दो शब्द

इस पुस्तक में कुल तीन नाटक हैं-**नदी का पानी** (सामाजिक), **उर्वशी** (पौराणिक) और **शेरशाह** (ऐतिहासिक)। इन दिनों बड़े नाटकों के मंचन की प्रथा लगभग समाप्त हो रही है। छोटे नाटकों की मांग अधिक है। उस दृष्टि से ये नाटक पसन्द किये जायेंगे-ऐसी आशा है।

'नदी का पानी' नाटक में 1942 से अगस्त 1947 तक की कथा है। सन् 42 में देश में हर जगह विदेशी हुकूमत के खिलाफ आन्दोलन हुआ। उसी का प्रभाव था कि 15 अगस्त 1947 को भारत आजाद हुआ और अंगरेजों को यह देश छोड़ कर जाना पड़ा। आजादी के इन पचास सालों में हमने क्या खोया और क्या पाया-यह किसी से छिपा नहीं है। आजादी प्राप्त करते समय हमारे बड़े-बड़े सपने थे। भारतीय स्वाधीनता की स्वर्ण जयन्ती के अवसर पर यह नाटक रंगकर्मियों को समर्पित है।

'उर्वशी' पौराणिक नाटक है। इसमें प्रतिष्ठानपुर के महाराज पुरुवा और स्वर्ग की अप्सरा उर्वशी की प्रेम-कथा है। दूरदर्शन के लिए लिखा गया यह खोजपूर्ण नाटक कुछ परिवर्तनों के साथ, स्टेज पर भी मंचित हो सकता है। इसमें पात्र अनेक हैं। उसी विषय पर महाकवि कालिदास का सुप्रसिद्ध नाटक **'विक्रमोर्वशीयम्'** है।

'शेरशाह' ऐतिहासिक नाटक है। शेरशाह का मूल नाम फरीद खाँ था और वह बिहार के सासाराम का रहने वाला था। अपनी बुद्धि और वीरता से वह भारत-सम्राट बना और इतिहासप्रसिद्ध व्यक्ति हुआ। इसने सिर्फ पाँच साल (1540-1545) तक शासन किया, लेकिन उतने कम समय में ही अपनी योग्यता, शासन सुधार और लोकहित कामों के कारण प्रसिद्ध हुआ। ग्रैंड कौर्ड रोड (सड़क) आज भी इसकी याद दिलाती है।

इस नाटक के प्रकाशन में मुझे पत्नी मनोरमा देवी, पुत्र अशोक प्रियदर्शी और कुमार शान्तरक्षित से बड़ी मदद मिली है। सुनील कुमार सिन्हा ने बहूमूल्य सुझाव दिये। **'वातायन'** के राजेश शुक्ल और कमलेश जी ने बड़ी मिहनत से इस पुस्तक को इतना शीघ्र प्रकाशित किया। मैं इन सब का आभारी हूँ।

एक अगस्त 1998
(भारतीय आजादी की स्वर्ण जयन्ती)

चतुर्भुज
106 श्रीकृष्ण नगर
पटना-800 001

नदी का पानी

(सामाजिक नाटक)

पात्र–परिचय

यशवन्त राव	:	जमींदार
रहमत अली	:	जमींदार का नौकर
कद्दे खाँ	:	दारोगा
मि० रेनर	:	पुलिस सुपरिंटेंडेन्ट
रानी	:	यशवन्त राव की पत्नी
बेहस्पत, झगडू, मंगरू, किसान आदि	}	ग्रामीण

नदी का पानी

(सामाजिक नाटक)

पहला दृश्य

स्थान : जमींदार यशवंत राव की हवेली।
समय : दोपहर।

(हवेली पुराने ढंग की है। बैठने के लिए कुछ कुर्सियाँ, मेज आदि। कुछ ग्रामीण सहमे ढंग से प्रवेश करते हैं। धीरे-धीरे उनका शोरगुल बढ़ता है।)

बेहस्पत : भाई, यहाँ तो कोई नहीं है। किससे बातें करें?

मंगरू : चिन्ता न करो। बड़ी हवेली है। कोई न कोई तो आयेगा ही।

झगडू : अरे, यह तो बताओ-किससे बातें करनी हैं? क्या बातें करनी हैं?

बेहस्पत : तुम्हारा सर। महामूर्ख हो। यहाँ तक आ गये। अब पूछते हो-किससे बातें करनी हैं?

झगडू : मैं यहाँ तक अपनी मर्जी से थोड़े ही आया हूँ।

मंगरू : फिर किसकी मर्जी से आये हो?

बेहस्पत : मेरी मर्जी से आये हो-यही न कहना चाहते हो झगडू भाई?

झगडू : और नहीं तो क्या?

बेहस्पत : झगडू भाई, पानी बरसा नहीं।

झगडू : यह तो सब को मालूम है कि पानी नहीं बरसा है। फिर-
बेहस्पत : अब हम सबकी फसलें मारी जायेंगी।
मंगरू : अरे, पानी नहीं बरसा तो क्या फसल नहीं होगी?
बेहस्पत : कैसे होगी मंगरू-तुम ही बताओ।
झगडू : रेखा नदी का पानी किस दिन काम आयेगा?
झगडू : हम उसी पानी को अपने-अपने खेतों में ले जायेंगे।
बेहस्पत : रेखा नदी का पानी क्या तुम्हारे बाप का है?
झगडू : इसमें बाप कहाँ से आ गया बेहस्पत भाई?
बेहस्पत : (समझाते हुए) रेखा नदी का पानी हमारे जमीन्दार साहब का है। मतलब राजा साहब का है। उनकी मर्जी है-दें या न दें।
मंगरू : नदी का पानी किसी का खरीदा हुआ नहीं होता ।
झगडू : नदी के पानी पर सबका हक होता है। कोई एक आदमी उसका मालिक नहीं हो सकता।
बेहस्पत : है एक आदमी का हक। और वह हैं हमारे राजा साहब-यशवन्त राव साहब। उनका हुक्म है कि नदी का पानी कोई न ले।
झगडू : अजीब बात है।
बेहस्पत : अजीब बात होने पर भी यही सच है। इसे जान लो।
मंगरू : अगर हम पानी ले लें तो क्या होगा?
बेहस्पत : क्या होगा? जानना चाहते हो?
मंगरू : हाँ-हाँ।
बेहस्पत : काका रहमत अली को जानते हो?
झगडू : जानता क्या, पहचानता भी हूँ।
बेहस्पत : काका रहमत अली राजा साहब के खास आदमी हैं। अगर किसी ने राजा साहब के हुक्म के खिलाफ कुछ भी किया तो काका रहमत अली उसकी जान ले लेंगे।
झगडू : तब तो मामला बड़ा पेचीदा है।
बेहस्पत : है न पेचीदा?
मंगरू : बेशक पेचीदा है।
झगडू : काका रहमत अली का सामना कोई नहीं कर सकता।
बेहस्पत : अब समझ गये न कि हम यहाँ क्यों आये हैं?
झगड : काका रहमत अली से भेंट करने आये हैं?
बेहस्पत : नहीं, राजा साहब से भेंट करने आये हैं। उन्हीं से निवेदन करने आये हैं। उनकी दया से ही हमारी फसल बच सकती है।
मंगरू : बेहस्पत भाई, अगर राजा साहब ने पानी नहीं दिया तो?
बेहस्पत : फिर तो अनर्थ हो जायेगा मंगरू। पानी नहीं मिला तो हम सब की फसल सूख जायेंगी। हम सब भूखों मरेंगे।

मंगरू : हे भगवान! वैसा दिन मत दिखाना। अनर्थ हो जायेगा।
यशवन्त : (नेपथ्य में) रहमत अली।
यशवन्त : (नेपथ्य में) बन्दूक कहाँ है?
रहमत : (नेपथ्य में) हाजिर है सरकार।
बेहस्पत : सामने से राजा साहब आ रहे हैं। साथ में काका रहमत अली हैं। उनके कंधे पर बन्दूक है। अब चुप रहो।

(सब चुप हो जाते हैं। सबके चहरे पर भय व्याप्त है। आगे-आगे यशवन्त राव, पीछे-पीछे रहमत अली। रहमत अली के कंधे पर बन्दूक। रहमत अली का पहलवानी चेहरा। वस्त्र अति साधारण। यशवन्त राव के आते ही सब लोग अभिवादन की मुद्रा में। यशवन्त राव अपने इलाके में राजा साहब कहे जाते हैं। चेहरे पर रोब। कड़ी-कड़ी मूंछें। शिकारी के वस्त्र। ब्रीचेज-शर्ट। कठोर स्वर)

यशवन्त : रहमत अली।
रहमत : जी सरकार।
यशवन्त : बन्दूक रख दो।

(रहमत अली दीवार से सटा कर बन्दूक रख देता है। यशवन्त राव अब मुड़ कर देखते हैं। सब लोग फिर सलाम करते हैं।)

यशवन्त : रहमत अली।
रहमत : जी हुजूर।
यशवन्त : ये भीड़ आज कैसी है? बात क्या है?
रहमत : लगता है, रियाया हुजूर से कुछ कहने आयी है।
यशवन्त : फिर भीड़ बनाने की क्या जरूरत थी? जिसको कुछ कहना होता, वही आता। रहमत, मुझे इस भीड़ से सख्त चिढ़ है। पूछो इनसे-क्या चाहते हैं?
रहमत : भाइयो, राजा साहब जानना चाहते हैं। तुमलोग क्या चाहते हो?
यशवन्त : हाँ, बताओ-इस भीड़ का मतलब क्या है?
बेहस्पत : हमलोग एक ही काम से आये हैं मालिक।
यशवन्त : कैसा काम?
बेहस्पत : मालिक, बारिश नहीं हो रही है। इसलिए हमलोग दुखी हैं।
यशवन्त : तो फिर मैं क्या करूँ? भगवान से प्रार्थना करो। पूजापाठ करो।
मंगरू : सब हमलोग कर चुके। अब आपका ही आसरा है।
यशवन्त : मेरा आसरा? क्या मेरे कहने से पानी बरस जायेगा?
झगड : नहीं हुजूर।
यशवन्त : तो फिर?
मंगरू : दया चाहिये।
यशवन्त : पहेली मत बुझाओ। साफ-साफ बोलो।

Scanned with OKEN Scanner

बेहस्पत : अगर मालिक चाहें तो रेखा नदी का थोड़ा सा पानी मिल सकता है। **(यशवन्त बेहस्पत की तरफ क्रोध भरी आँखों से देखते हैं। खामोशी।)**

यशवन्त : तो ये बात है। बताओ, फिर मेरे खेतों के लिए पानी कहाँ से आयेगा?

मंगरू : थोड़ा सा पानी मालिक।

बेहस्पत : नदी भरी है। थोड़ा सा पानी मिल जाये तो बड़ी मेहरबानी हो।

यशवन्त : तुम ये चाहते हो कि तुम्हारे खेतों में फसल लहलहाये और मेरे खेतों में बर्बादी आ जाये?

झगड़ू : हम ऐसा कभी नहीं चाहते।

मंगरू : हमलोग तो आपकी रिआया हैं मालिक। आपके सुख में हमारा सुख है। आपके हुक्म के आगे हमलोग अपनी जान तक दे सकते हैं।

बेहस्पत : नदी का थोड़ा सा पानी लेने से कोई फर्क नहीं पड़ेगा मालिक। हमारे बाल- बच्चे आपकी जय जयकार करेंगे।

यशवन्त : नहीं चाहिये हमें तुम्हारी जय जयकार। पानी नहीं मिलेगा-नहीं मिलेगा।

रहमत : हुजूर, हुक्म मिले तो कुछ अर्ज करूँ।

यशवन्त : क्या कहना चाहते हो रहमत?

रहमत : हुजूर मालिक हैं। हम सबके माई बाप हैं। ये लोग भूख से तड़प तड़प कर मर जायेंगे हुजूर। नदी में पानी भरा है। थोड़ा सा पानी इन गरीबों को देने में..........

यशवन्त : हर्ज है। मैं पहले कह चुका हूँ। रहमत, तुम भी इन कमीनों की तरफदारी करने लगे? भूल रहे हो कि तुम मेरे नौकर हो। मैं जो चाहूँगा, वही होगा। **(रहमत सिर झुका लेता है।)**

मंगरू : फसल नहीं होने से हम भूखों मर जायेंगे। हम लगान भी नहीं दे सकेंगे।

यशवन्त : लगान नहीं दे सकेंगे? कौन बोल रहा है? कौन ललकार रहा है मुझे?

मंगरू : **(सकपका कर)** कसूर मुझ से हुआ हुजूर। लेकिन मैं ललकारने की हैसियत नहीं रखता मालिक।

यशवन्त : बदमाश! कमीने! ललकारने के बाद भी कह रहे हो कि हैसियत नहीं रखता? देख रहे हो इस बन्दूक को? लगान तो देना ही पड़ेगा। रोकर दो या हंस कर दो। यह भी सुन लो-रेखा नदी का पानी तुमलोगों को नहीं मिल सकता। नदी मेरी है-मेरी। पानी मेरा है। अगर तुमलोगों में से किसी ने पानी की एक बूँद भी लेने की कोशिश की तो वह मेरी गोली का निशाना बनेगा। अब तुमलोग भागो यहाँ से।

बेहस्पत : मालिक, दया करें। **(सब पैरों पर गिरते हैं। यशवन्त सबको ठोकर मारता है। सब रोते हैं।)**

यशवन्त : रहमत अली, तुम आज से, अभी से, नदी पर पहरा दो। यह देखना तुम्हारा काम है कि नदी के पानी की चोरी न हो। नदी मेरी है, पानी मेरा है। (चिल्लाकर) भागो तुमलोग। कहता हूँ-भागो। **(सबलोग दुखी मन लेकर चले जाते हैं। यशवन्त राव भी दूसरी ओर से प्रस्थान करता है। रहमत बन्दूक उठा कर कंधे पर रखता है और जाना चाहता है। इसी बीच चुपके से मंगरू, बेहस्पत तथा अन्य लोग पुनः प्रवेश करते हैं। इधर-उधर देखते हैं कि कोई आ तो नहीं रहा है। रहमत खड़ा होकर उन लोगों की ओर देखता है।)**

बेहस्पत : काका!

रहमत : **(जैसे नींद से जागा हो)** तुमने मुझे पुकारा बेहस्पत?

बेहस्पत : हाँ काका!

रहमत : कहो, क्या कहना चाहते हो?

झगड़ू : ये जो कुछ हो रहा है, क्या ठीक हो रहा है काका?

रहमत : नहीं, गलत हो रहा है।

मंगरू : तो हम लोग क्या करें? **(रहमत खामोश। बन्दूक टटोलता रहता है)**

बेहस्पत : तुम कुछ बोलते नहीं हो?

मंगरू : हाँ काका, कुछ तो बोलो।

रहमत : क्या बोलूँ-कुछ समझ में नहीं आता।

बेहस्पत : काका, जमींदार साहब ने तो साफ इन्कार कर दिया है। हमलोग ऐसा पहले से जानते थे।

मंगरू : अब तुम्हारा ही आसरा है काका। **(रहमत शून्य में देखता है)**

झगड़ू : हमें मारो या बचाओ।

रहमत : मैं भला क्या कर सकता हूँ?-मेरे हाथ में क्या है-तुम्ही बताओ।

मंगरू : तुम यशवन्त राव के दाहिने हाथ हो। तुम अगर उनकी बात न मानो तो वे रास्ते पर आ जायेंगे।

रहमत : मैं उनका नमक खाता हूँ। मैं मुसलमान हूँ। नमकहरामी नहीं करूँगा।

बेहस्पत : तुम मुसलमान हो रहमत काका?-ये क्या कहते हो? अगर तुममें धर्म होता, इतनी कट्टरता होती तो हिन्दू तुम्हें इतना आदर नहीं देते।

मंगरू : सही बात है। इस गांव में कौन ऐसा घर है जहां के लोग तुम्हें काका का आदर नहीं देते हैं?

झगड़ू : तुम्हारे अहसान से हम दबे हैं काका। हर मुसीबत में तुमने हमलोगों का साथ दिया है। तुम्हारी ईमानदारी में भी किसी को शक नहीं।

मंगरू : तुम पहलवान हो। इलाके के सभी पहलवान तुम्हें अपना उस्ताद मानते हैं। यह तुम्हारी ईमानदारी है कि जमींदार सुखचैन की नींद सोते हैं और तुम्हारी झोपड़ी पर सही छप्पर तक नहीं है।

Scanned with OKEN Scanner

रहमत : मंगरू, मैं जानता हूँ कि सारे गांव की निगाहें मुझ पर टिकी हैं। लेकिन जमींदार साहब के हुक्म के सामने मैं क्या कर सकता हूँ?

बेहस्पत : क्या कर सकते हो-यह तो तुम जानो। हम तो तुम्हारी दया की भीख चाहते हैं।

(कुछ ठहराव। सभी लोग रहमत की ओर देख रहे हैं और रहमत पूर्ववत् शून्य में)

रहमत : **(अचानक जैसे जागकर)** तो सुन लो।

बेहस्पत : कहो, कहो काका।

रहमत : आज रात जितना पानी चाहो, ले लो। रेखा नदी में एक बूँद भी पानी न बचे तो कोई बात नहीं। तुम्हारे खेतों में पूरा पानी मिलेगा। आज ही की रात। कल नहीं। इसे अच्छी तरह समझ लो।

बेहस्पत : लेकिन जमींदार साहब?

रहमत : मैं जानता हूँ-उनका गुस्सा मुझ पर कहर बन कर गिरेगा। वे गोली चलाकर मेरी जान भी ले सकते हैं। लेकिन मैं नहीं डरता।

मंगरू : नहीं डरते? उनकी बन्दूक से भी नहीं?

रहमत : बेटे, मैं किसी से नहीं डरता। सिर्फ पाक परवारदिगार से डरता हूँ। मेरी जान जाये लेकिन तुमलोगों की, तुम्हारे बाल बच्चों की, जान बचँ जाये। यही चाहता हूँ।

बेहस्पत : तुम महान् हो काका।

रहमत : सुन रे मंगरू, एक काम और करना है। सुना है, तू बहुत बड़ा पहलवान है। क्यों?

मंगरू : तुमसे बहुत छोटा हूँ काका।

रहमत : सुना है, तुम अपनी लाठी को रोज तेल पिलाते हो और गँड़ासे पर रोज धार लगाते हो।

मंगरू : हाँ काका।

रहमत : तो फिर अपनी लाठी और गँड़ासे को भी लेते आना।

मंगरू : यह क्यों काका?

रहमत : बहुत मत कर। जैसा कहा है, वैसा ही करना। अब जा। तुमलोग भी जाओ। **(आपस में बातें करते सबलोग जाते हैं। रहमत दूसरी तरफ जाता है। कुछ देर बाद यशवन्त राव और उनकी पत्नी रानी का प्रवेश)**

रानी : क्या मैंने जो कुछ सुना है, वह खबर ठीक है?

यशवन्त : क्या सुना है तुमने?

रानी : यही कि आपने गाँव वालों को नदी से पानी लेने के लिए मना कर दिया है।

यशवन्त : हाँ, मैंने मना कर दिया है। क्या मेरा फैसला गलत था?

रानी : बिल्कुल गलत था।

यशवन्त : यह तुम कहती हो रानी? तुम? मेरी पत्नी?

रानी : हाँ, मैं-आपकी पत्नी-मैं ही कह रही हूँ।

यशवन्त : तो, क्या मैं अपनी फसल मरने देता?

रानी : यह किसने कहा?

यशवन्त : तुम कह रही हो। वे जंगली कमीने कह रहे हैं।

रानी : राजा साहब, यह किसी ने नहीं कहा कि आपकी फसल मर जाये और जिन्हें आप जंगली कमीने कह रहे हैं, वे भी आप ही की तरह इन्सान हैं। यह उन्हीं की कृपा है कि आप बिना मेहनत के सुख चैन से रह रहे हैं। अगर वे चाहें तो न आप रहें और न आपकी यह जमीन्दारी जिसके आप राजा कहलाते हैं।

यशवन्त : यह किसकी हिम्मत है कि मेरी जमींदारी मुझसे छिन ले। मेरी बन्दूक किस दिन काम आयेगी?

रानी : राजा साहब, जन आन्दोलन के सामने आपकी बन्दूक धरी की धरी रह जायेगी। अभी देश में आजादी की लहर उठ रही है। अंगरेज चाह कर भी इस आन्दोलन को कुचल नहीं पा रहे हैं। उनके पास क्या तोपों और बन्दूकों की कमी है?

यशवन्त : अंगरेजों के पास ताकत है। वे इस आन्दोलन को कुचल कर रहेंगे। इसे जान लो रानी।

रानी : यह नामुमकिन है। यह तो समय बतायेगा कि क्या होगा।

यशवन्त : **(कुछ हंस कर)** लगता है, इन दिनों तुम अखबार ज्यादा पढ़ने लगी हो। पढ़ना अच्छा है, लेकिन इतना पढ़ना कि दिमाग घूम जाये-यह अच्छा नहीं है रानी। **(रानी हंसती है)**

रानी : पढ़ना बुरा नहीं है राजा साहब। मैं तो कहती हूँ कि आप भी पढ़िये। आप अंधेरे से प्रकाश में आ जायेंगे। आपके पिताजी और दादाजी ने जो कुछ किया, उसे भूल जाइये। जमाने के हिसाब से चलिये। यही बुद्धिमानी है।

यशवन्त : देखता हूँ-तुम्हारे मुँह से बगावत की बू आ रही है। यह अच्छा नहीं है।

रानी : सही बात कहना बगावत करना नहीं है राजा साहब।

यशवन्त : लगता है कि तुम रैयतों की रहनुमा बनना चाहती हो।

रानी : नहीं, ऐसा कोई शौक नहीं है। सही बात कहना रहनुमाई करना नहीं है राजा साहब। मैं आपसे निवेदन करती हूँ कि नदी का पानी उन गरीबों को लेने दीजिये। आपका भला होगा।

यशवन्त : भला होगा? मैं ऐसी बेवकूफी कभी नहीं कर सकता कि उनके खेत आबाद हों और मेरे खेत बर्बाद हों।

Scanned with OKEN Scanner

रानी : आप भ्रम में हैं। उनके पानी लेने से नदी सूख नहीं जायेगी। बचा पानी आपके लिए काफी होगा।

यशवन्त : यशवन्त राव बार-बार हुक्म नहीं देता। जो एक बार कह दिया, वो कह दिया। उसमें परिवर्त्तन की गुंजाइश नहीं है।

रानी : इस पर आप फिर से विचार करें राजा साहब।

यशवन्त : रहमत अली को मैंने नदी के पहरे पर तैनात कर दिया है। उसके रहते कोई उधर जाने का दुस्साहस नहीं कर सकता।

रानी : फिर कहती हूँ-गरीबों पर तरस खाइये। फसल नहीं होने पर उनके बाल-बच्चे भूखों मरेंगे।

यशवन्त : भूखों मरेंगे तो शौक से मरें। हाँ, मैं तुमसे पूछता हूँ-उनका पक्ष क्यों ले रही हो?

रानी : वे हमारी प्रजा हैं। उनके दुख-सुख को देखना हमारा कर्त्तव्य है।

यशवन्त : मेरा फैसला अटल है रानी। नदी का पानी उन लोगों को नहीं मिलेगा-नहीं मिलेगा। इसे अच्छी तरह जान लो।

(सवेग प्रस्थान। रानी देखती रहती है।)

दूसरा दृश्य

स्थान : नदी का तट

समय : रात

(रात का सन्नाटा। झिंगुर की आवाज। सियार-कुत्ते की आवाज। पानी की धारा की ध्वनि। सामने पीपल का एक घना वृक्ष। कई लोग धीमे स्वर में बातें कर रहे हैं। सबके पास कुदाल। नीला प्रकाश। दृश्य शैडो में दिखलाया जा सकता है।)

रहमत : **(दूर में)** कौन है रे? जानता नहीं, रहमत अली अभीं जिन्दा है? खबरदार। नदी की तरफ मत बढ़ना। खबरदार! खबरदार!

बेहस्पत : लो मंगरू, काका तो एकदम बदल गये। एक तरफ हमलोगों को यहाँ आने को कह गये और दूसरी तरफ चिल्ला भी रहे हैं।

मंगरू : काका को समझना कठिन है बेहस्पत।

झगड़ू : मुझे तो डर लग रहा है। उधर देखो, गाँव के लोग झुंड के झुंड इधर ही आ रहे हैं। सबके हाथों में कुदाल है।

मंगरू : सब ठीक है। देखो, शोर न हो।

झगड़ू : शोर कौन करता है? शोर तो खुद काका रहमत अली मचा रहे हैं।

(बीच-बीच में रहमत का "खबरदार खबरदार" सुनाई पड़ता है)

बेहस्पत : काका रहमत अली जो कुछ भी करते हैं, काफी समझ बूझ कर। देखो, सभी लोग अपने-अपने खेतों में पानी ले जाने लगे।

(शैडो में कुछ किसान कुदाल से तट काटते नजर आते हैं। पानी की कलकल ध्वनि)

किसान1 : भइया, एतना फरके होके मत चल।

किसान2 : एकरा में हरजा कउची हे?

किसान1 : सोच रहली हे भइया कि अगर भुतवा................?

किसान2 : कउची होल भुतवा के?

किसान1 : कहीं भुतवा इ पीपर के गाछ से हम्मर माथा पर कूद गेल तब?

किसान2 : तू भी कइसन बकलोल अयसन बात कर रहले हे?

किसान1 : बकलोल?

किसान2 : अरे बकलोल, तोरा माथा भी हे?

(किसान-1 अपने सिर को छूता है)

किसान1 : इ देख, इ हम्मर माथा नय हे त का हे?

किसान2 : इ तोर माथा एकदम नय हे।

किसान1 : तब फिर का हे?

किसान2 : एकरा मगज कहल जा हे। जब तोरा माथे नय हे तब भुतवा कूदत कइसे तोर माथा पर?

(किसान-1 प्रश्न वाचक चेहरे से सबों को देखता है)

अरे मूरख, हम कउची बिगाड़ गेली हे भूतवा के जे हमरा उ तंग करे आत?

किसान1 : अरे भइया, जब हमरा अइसन आदमी के अक्किल नय हे समझे के तब उ भूतवा के भला अक्किल होत?

किसान2 : उ भूतवा के तोरा से जादे अक्किल हे। बात बात में उ तोरा जयसन बेफजूल के बात नय सोचऽ हे। काहे भाय?

बेहस्पत : ठीक कहते हो। डरने की कोई बात नहीं है। सबसे बड़े भूत तो काका रहमत अली हैं।

(सब हंसते हैं।)

रहमत : **(दूर से)** मंगरू।

मंगरू : हाँ काका।

रहमत : वहीं ठहरो। मैं आ रहा हूँ।

बेहस्पत : काका आ रहे हैं। पता नहीं, क्या बात है?

(कुछ देर खामोशी। रहमत का प्रवेश।)

रहमत : क्यों रे बेहस्पत, सभी किसान आ गये?

बेहस्पत : हाँ काका। **(धीरे से)** वो सब अपना काम कर रहे हैं।

रहमत : खेत सभी पट गये या नहीं?

Scanned with OKEN Scanner

मंगरू : सब लोग उसी में जुटे हैं।
रहमत : सुन, रात भर का मौका है। सुबह का उजाला तुम्हें कुछ करने नहीं देगा। सुबह होने के पहले सब लोग यहाँ से चले जायें।
किसान1 : काका ठीक्के कहते हैं। भोर होवे से पहिले फुर्र। समझ ल सबलोग।
किसान2 : अरे मर्दे, हम तो काका के सभ्भे बात जरी सा में ही समझ जा ही। बाकि तू बता कि तोर समझ में आल कि नय?
रहमत : बेहस्पत, जा, तू सबको कह दे। चुपचाप।
बेहस्पत : चल रे मंगरू।
रहमत : मंगरू यहीं रहेगा। तुमलोग चले जाओ।
(मंगरू और रहमत के अलावा सबका प्रस्थान)
रहमत : मंगरू, तुम्हारी लाठी कहाँ है?
मंगरू : पास में है काका।
रहमत : और गँड़ासा?
मंगरू : वह भी है।
रहमत : तू बड़ा समझदार है रे मंगरू। अब चलाओ अपनी लाठी।
मंगरू : किस पर?
रहमत : मुझ पर। देखूँ कितनी ताकत तुममें है।
मंगरू : आप पर मैं लाठी चलाऊँ? यह नहीं हो सकता काका। मुझे माफ कर दें।
रहमत : क्यों नहीं चला सकता लाठी?
मंगरू : आप हमारे काका हैं, दुश्मन नहीं।
रहमत : (चिल्लाकर) मैं तुम्हारा दुश्मन हूँ मंगरू। दुश्मन। मैं जमींदार यशवन्त राव का आदमी हूँ।
मंगरू : लेकिन आप हम सब के काका हैं। इसे मैं कैसे भूल सकता हूँ?
रहमत : अगर तू वार नहीं करेगा तो मैं तेरा खून पी जाऊँगा। चला लाठी।
मंगरू : **(घबराकर)** काका!
रहमत : चला लाठी मूरख। जल्दी कर। चला लाठी।
(मंगरू की लाठी की कई चोट पड़ती है। लाठी टूट जाती है। मंगरू लाठी फेंक देता है। रहमत का अट्टहास।)
रहमत : यही है तुम्हारी लाठी जिसे तुम रोज तेल पिलाया करते थे? अब उठा गँड़ासा। उठा, देर मत कर। चला मुझ पर गँड़ासा।
मंगरू : (रोकर) काका। काका। मैं ऐसा पाप नहीं कर सकता । आप पर लाठी चलाई। अब गँड़ासा? नहीं काका। ऐसा कड़ा इम्तेहान मत लो। मत लो काका। हाथ जोड़ता हूँ।
रहमत : मूरख, कुछ देर में सूरज नजर आयेगा। वक्त कम है। मैं इन्तेजार नहीं कर सकता। जल्दी कर। चला गँड़ासा।

मंगरू : हे भगवान, मैं क्या करूँ?
रहमत : **(चिल्लाकर)** चला गँड़ासा मंगरू।
मंगरू : **(आर्त्त स्वर)** काका!
रहमत : काका नहीं, दुश्मन हूँ मैं। चला गँड़ासा।
मंगरू : मुझे माफ करो काका।
रहमत : **(पागल की तरह)** नहीं। चला गँड़ासा। चला।
(मंगरू गँड़ासा चलाता है।)
रहमत : आह! **(गिरता है)**
मंगरू : अरे। दौड़ो। दौड़ो।। काका रहमत अली घायल होकर गिर गये।
(लोग दौड़ते हुए आते हैं।)
रहमत : बेवकूफों, यहाँ क्यों आये हो? भागो यहाँ से। सूरज निकलने वाला है। खेतों को पटा लो। जाओ। आह! आह!
(सभी लोग चले जाते है। सिर्फ मंगरू रह जाता है।)
मंगरू : काका, मुझे माफ करो। कसूर मेरा है। सजा दो।
रहमत : नहीं रे! तुम्हारा कोई कसूर नहीं है। गाँव के लोग खुशहाल रहें। काका रहमतअली की यही तमन्ना है।
मंगरू : लेकिन राजा साहब का गुस्सा?
रहमत : मुझे कोई डर नहीं है। अब-अब तुम भी जाओ। लाठी और गँड़ासा उठा लो।
मंगरू : और आप-आप काका?
रहमत : मैं यहीं रहूँगा। तू फौरन चला जा। जा। चला जा।
(मंगरू रोते हुए जाता है। साथ में लाठी और गँड़ासा। रहमत वहीं रह जाता है)

तीसरा दृश्य

स्थान : यशवन्त राव की हवेली
समय : सुबह

(यशवन्त राव अखबार पढ़ रहे हैं। रानी का प्रवेश)
रानी : कुछ सुना आपने?
यशवन्त : **(अखबार देखते हुए)** क्या?
रानी : रेखा नदी के पानी से रैयतों के खेत तर हैं?
यशवन्त : क्या? क्या कहा?
रानी : रेखा नदी के पानी से रैयतों के खेत तर हैं।
यशवन्त : क्या कहती हो रानी? रैयतों के खेतों में पानी?
रानी : ठीक कहती हूँ। सारे गाँव में यही चर्चा है।

Scanned with OKEN Scanner

यशवन्त : क्या रहमत अली पहरे पर नहीं था?
रानी : था। फिर भी ऐसा हुआ।
यशवन्त : यह नामुमकिन है।
रानी : लेकिन ऐसा हुआ है-मेरा यकीन कीजिये।
यशवन्त : रहमत के रहते किसी में ऐसी हिम्मत नहीं है।
रानी : राजा साहब, आप मेरा यकीन क्यों नहीं करते?
यशवन्त : **(सोचते हुए)** लेकिन रहमत के रहते? ओह! यह कैसे हो सकता है? यकीन नहीं होता। रहमत के रहते? नहीं, नहीं। यह नामुमकिन है।
रानी : हाँ, रहमत के रहते ऐसा हुआ है।
यशवन्त : क्या रहमत ने कुछ ले देकर तो ऐसा नहीं किया?
रानी : रहमत ऐसा आदमी नहीं है राजा साहब। वह आपके हुक्म पर अपनी जान दे सकता है, लेकिन धोखा नहीं दे सकता ।
यशवन्त : रहमत कहाँ है? कहाँ मर गया रहमत? **(पुकारता है।)** कोई है?
नौकर : **(अन्दर से)** हुक्म मालिक।
यशवन्त : रहमत को जल्दी भेज दो।
(रहमत का प्रवेश। माथे पर पट्टी लगी है।)
रहमत : हाजिर हूँ मालिक। बन्दगी हुजूर। बन्दगी रानी माँ।
यशवन्त : यह क्या? यह क्या रहमत? तुम्हारे माथे पर खून के दाग? माथे पर पट्टी? बात क्या है रहमत?
रहमत : हुजूर, मैं गुनाहगार हूँ। मुझे सज़ा दीजिये।
यशवन्त : क्या तुम्हें गाँव वालों ने मारा है?
रहमत : नहीं हुजूर।
रानी : फिर किसने की तुम्हारी यह हालत?
यशवन्त : नाम बताओ रहमत। मैं उसे फौरन गोली से उड़ा दूँगा। तुम पर हमला करने का मतलब है मुझसे दुश्मनी मोल लेना। मैं उस बदमाश का खून पी जाऊँगा। बेखौफ उसका नाम बताओ।
रहमत : हुजूर.......
रानी : हाँ-हाँ, नाम बताओ रहमत।
यशवन्त : नाम बताओ रहमत। थाना-कचहरी सब मैं समझ लूँगा।
रहमत : नहीं हुजूर, मुझे किसी ने नहीं मारा है। मैं किसका नाम बताऊँ?
(यशवन्त प्रश्नवाचक दृष्टि से रानी की तरफ देखते हैं)
रानी : तुम झूठ बोलते हो रहमत।
यशवन्त : तुम उस कसूरवार को बचा रहे हो रहमत। लेकिन मैं उस बदमाश का खुद पता लगाऊँगा। मैं उसे ज़िन्दा नहीं छोड़ूँगा। तुम यह अच्छी तरह समझ लो रहमत।

रहमत : हुजूर सच मानें। गाँव वाले बेकसूर हैं और आप तो जानते हैं कि दस-बीस आदमियों के लिए मैं अकेला काफी हूँ। इस इलाके में कोई इन्सान आपके इस गुलाम का मुकाबला नहीं कर सकता।
यशवन्त : फिर किसने किया तुम्हारा यह हाल? नदी के पानी की चोरी कैसे हुई?
रानी : सुना है, रात में किसानों के खेत खुद-ब-खुद पानी से भर गये । ऐसा कैसे हो सकता है?
रहमत : आपने ठीक सुना है रानी माँ। मैं तो देखकर आ रहा हूँ।
यशवन्त : तुम मामले को उलझा रहे हो। साफ साफ बताओ।
रहमत : क्या बताऊँ मालिक?
यशवन्त : इन सब बातों की जड़ में है कौन?
रहमत : भूत।
यशवन्त : क्या बकते हो रहमत? दिमाग तो सही है तुम्हारा?
रहमत : दिमाग अपनी जगह पर है मालिक। भूत-भूत! ओह! ओह, वही भूत।
रानी : कौन भूत? कैसा भूत? क्या बक रहे हो रहमत?
रहमत : ठीक कह रहा हूँ रानी माँ। वही पीपल पर का भूत-वही सब फसाद की जड़ है।
यशवन्त : तुम्हारा दिमाग खराब हो गया है रहमत। तुमने कोई सपना देखा है।
रहमत : नहीं मालिक, मैंने भूत को देखा है-असली भूत को। हुजूर तो पीपल के भूत की कहानी सुन चुके हैं।
रानी : हाँ सुना है, उस पीपल पर कोई भूत रहता है। लेकिन उस भूत को किसी ने देखा नहीं है।
यशवन्त : सब बकवास है। कहीं कोई भूत नहीं है। यह बिल्कुल झूठ है।
रहमत : पहले मैं भी ऐसा ही समझता था। लेकिन मैंने अपनी आँखों से उसे देखा है। उसकी हरकत भी देखी है मालिक। सब उसी भूत का फसाद है।
यशवन्त : **(हंसकर)** मजा आ रहा है तुम्हारे बयान में। भूत तो कमाल का है जिसने तुम्हें ही अपना निशाना बनाया। **(हंसना)**
रहमत : मालिक, कल रात मैं उसी पीपल के पास चक्कर लगा रहा था। आधीरात का वक्त रहा होगा। चारों तरफ सन्नाटा था। अन्धेरे में कुछ नजर नहीं आता था। अचानक कोई भारी चीज मेरे माथे पर गिरी और सामने खड़ा था लम्बा-चौड़ा-काला भूत। जी हाँ, भूत। मैं गिर पड़ा। एक जोर का ठहाका सुनाई पड़ा। मैं बेहोश था। सुबह जब होश आया तो देखा-सूरज मुस्करा रहा है, खेत पानी से तर थे। मेरे माथे से खून चू रहा था।
यशवन्त : कहानी अच्छी गढ़ लेते हो रहमत।
रानी : अगर रहमत कह रहा है तो कहानी सच ही होगी।
यशवन्त : सच होगी? भूत प्रेत की कहानी औरतों को तो सच ही लगेगी।

Scanned with OKEN Scanner

रानी : मैं वैसी जाहिल औरत नहीं हूँ राजा साहब। लेकिन जब रहमत जैसा ईमानदार आदमी, भूत को देखकर, ऐसा कहता है तो यकीन करना ही होता है।

रहमत : मालिक, रहमत अली नमकहराम नहीं है। अगर यकीन न हो तो मेरी जान हाजिर है। जो सजा देना चाहें, गुलाम हाजिर है।

यशवन्त : यही बात तो मुझे चक्कर में डाल रही है रहमत। मैं तुम्हारी ईमानदारी को जानता हूँ। तुम सब कर सकते हो, लेकिन धोखा नहीं दे सकते। तुम्हारे खून में धोखा है ही नहीं। लेकिन मुझे ताज्जुब है। पीपल का दरख्त! भूत! भूत! खेतों में पानी! ओह! कुछ समझ में नहीं आता। नहीं आता। **(प्रस्थान)**

रानी : रहमत!

रहमत : हुक्म रानी माँ।

रानी : जाओ, आराम करो। मैं तुम्हारा यकीन करती हूँ।
(रहमत सलाम करता है। रानी का प्रस्थान)

रहमत : (ऊपर देखकर और हाथ फैलाकर) या खुदा । मेरी लाज रखना।
(धीरे धीरे प्रस्थान। अन्धकार। फिर प्रकाश। यशवन्त राव बैठे हैं। दारोगा कड़े खाँ खड़ा है।)

यशवन्त : दारोगा जी।

कड़े खाँ : दारोगा कड़े खाँ हुजूर।

यशवन्त : मैं आपका नाम भूल गया था।

कड़े खाँ : दारोगा कड़े खाँ, हुजूर। अगर मेरे नाम से आप कड़े खाँ हटा देंगे तो फिर मेरा रोबदाब ही खत्म हो जायेगा।

यशवन्त : यह कड़े खाँ नाम आपको कहाँ से मिला दारोगा जी।

कड़े खाँ : हुजूर, यह मेरे अब्बा मरहूम का दिया नाम है। मेरे बाप थे दिलावर खाँ। इलाके में उनका बड़ा नाम था। उन्होंने ही मुझे कड़े खाँ के नाम से सजाया-संवारा। वे चाहते थे कि मैं पुलिस में नौकरी करूँ। चुनांचे मैंने एक अर्जी फेंक दी। बुलावा आया। अफसरों ने पूछा-नाम? मैंने झट कह दिया-कड़े खाँ और बस मैं हो गया-दारोगा। जहाँ जाता हूँ, मेरा नाम पहले जाता है। फिर इलाके के सारे बदमाश हाथ जोड़कर मेरे सामने खुद चले आते हैं।

यशवन्त : सुना है नाम आपका। आपके नाम में जादू है दारोगा जी।

कड़े खाँ : सही फरमाया आपने। कड़े खाँ नाम में ही जादू है हुजूर। **(मूँछों पर हाथ फेरते हैं)**

यशवन्त : हमने आपको एक खास काम से बुलवाया था।

कड़े खाँ : फरमाइये राजा साहब, क्या हुक्म है?

यशवन्त : मैं बड़ी मुश्किल में पड़ गया हूँ।

कड़े खाँ : मुश्किल? दारोगा कड़े खाँ के रहते मुश्किल ? बताइये उस मरदूद का नाम जिसने आपके सामने मुश्किल खड़ी की है। उसने दारोगा कड़े खाँ का नाम नहीं सुना है शायद।

यशवन्त : भूत......भूत देखा है आपने?

कड़े खाँ : भ.......भ........भूत? यह किस परिन्दे का नाम है?

यशवन्त : भूत का कोई नाम नहीं होता दारोगा जी । भूत सिर्फ भूत कहलाता है।

कड़े खाँ : ठीक। अब बताइये, कहाँ है भूत?

यशवन्त : नदी के किनारे एक पीपल का पेड़ है-बड़ा पुराना। उसी पर रहता है भूत।

कड़े खाँ : अजीब बात है। पीपल पर भूत? अब उसकी शरारत बताइये।

यशवन्त : उसने कल रात मेरे आदमी-रहमत अली का सिर फोड़ दिया और साथ ही नदी का पानी रैयतों के खेतों में पहुंचा दिया।

कड़े खाँ : माशाअल्ला! भूत बड़ा करामाती मालूम पड़ता है।

यशवन्त : उस भूत का कोई इलाज है आपके पास?

कड़े खाँ : राजा साहब, पुलिस फोर्स में हमें इन्सान से लड़ने की ट्रेनिंग दी गई है, भूत से लड़ने की नहीं। लेकिन इसका एक इलाज मेरे जेहन में आ रहा है।

यशवन्त : वह क्या?

कड़े खाँ : हम आज ही एस. पी. साहब के पास रपट भेजते हैं। उनसे गुजारिश करेंगे कि पुलिस की ऐसी टुकड़ी मेरे हवाले की जाये जिसको भूतों से लड़ने में महारत हासिल हो।
(यशवन्त राव हँसते हैं)

कड़े खाँ : हुजूर हँसे क्यों?

यशवन्त : क्या आपके एस. पी. साहब के पास भूतों से लड़ने वाली कोई टुकड़ी रहती है? मैंने तो ऐसा कभी नहीं सुना।

कड़े खाँ : सुना तो मैंने भी नहीं है हुजूर। लेकिन आखिर वो एस. पी. हैं-अंगरेज एस. पी.। वो तो खुद भूत हैं। क्या समझे?

यशवन्त : अच्छा, यह बताइये दारोगा जी....

कड़े खाँ : दारोगा कड़े खाँ।

यशवन्त : हाँ, दारोगा कड़े खाँ साहब कि इलाके में अमन चैन तो है न?

कड़े खाँ : यही तो रोना है हुजूर। इधर गाँधी के चेलों ने कुछ ज्यादा ही हंगामा खड़ा कर रखा है। जुलूस, नारेबाजी का बोलबाला है। पता नहीं, गाँधी बाबा ने इन लोगों को कौन सी भंग पिला दी है कि आजादी के लिए शोर मचा रहे हैं।

यशवन्त : तो इससे आपको क्या फर्क पड़ता है?

कड़े खाँ : फर्क कैसे नहीं पड़ता है जनाब? लॉ एण्ड आर्डर तो हमारी ड्यटी है। मैं एक एक बदमाश को देख लूँगा। गाँधी की वह आँधी इस इलाके में भी आ चुकी है। आप खबरदार रहें हुजूर। और फिर मैं हूँ किस दिन के लिए? दारोगा कड़े खाँ उन इन्क्लाबियों के लिए काफी है।

यशवन्त : आपके एस. पी. साहेब कहाँ हैं?

कड़े खाँ : रेनर साहब? वही एस. पी. हैं। इस इलाके के दौरे पर आने वाले हैं। आते ही मैं आपसे उनकी भेंट कराऊँगा। हाँ, जरा एक बात का ख्याल रखियेगा।

Scanned with OKEN Scanner

यशवन्त : कौन सी बात का?

कड़े खाँ : दारोगा कड़े खाँ की तारीफ कर दीजिएगा। एस. पी. बड़ा हाकिम होता है हुजूर। उनकी निगाह में मैं सुरखुरू बना, बस मेरा प्रोमोशन तय है। जी, हुजूर।
(यशवन्त हंसते हैं। कड़े खाँ सलाम करके जाता है। अन्धकार। फिर प्रकाश। दूर में आजादी का गीत सुनाई पड़ता है।)

दूर में : **(सामूहिक गान)**
सरफरोशी की तमन्ना अब हमारे दिल में है।
देखना है, जोर कितना बाजु-ए-कातिल में है।

नारे : इन्कलाब जिन्दाबाद।
भारत माता की जय।
महात्मा गांधी की जय।
अंगरेजों-भारत छोड़ो।
(नारे बार-बार। दूर होती आवाजें)

यशवन्त : **(चिल्लाकर)** रहमत अली।

रहमत : **(आते हुए)** आया मालिक।

यशवन्त : यह शोर कैसा है?

रहमत : ये इन्क्लाबी लोग हैं मालिक।

यशवन्त : इन्क्लाबी? इस इलाके में इनका क्या काम है?

रहमत : हुजूर, यह तो वक्त की पुकार है। गोरी सल्तनत के दिन अब खत्म होने वाले हैं मालिक।

यशवन्त : क्या बकते हो? अंग्रेजों की तोपों और बन्दूकों के समाने ये निहत्ये कब तक टिक सकेंगे?

रहमत : टिकेंगे मालिक-टिकेंगे। गाँधी बाबा ने इन इन्क्लाबियों को अमर होने की जड़ी सुंघा दी है। ये मरेंगे, लेकिन फिर जी उठेंगे। ये इन्क्लाब मामूली नहीं हैं। गाँव-गाँव, शहर-शहर में, ये लोग सिर पर कफन बांधे, आजादी की मांग कर रहे हैं।

यशवन्त : आजादी मांगने से नहीं मिलती रहमत। इसके लिए ताकत चाहिए और वह ताकत सिर्फ अंगरेजों के पास है जो कुचलना जानते हैं।

रहमत : वैसी कोशिश तो वे कर रहे हैं, लेकिन कामयाबी कहाँ मिल रही है। लगता है हुजूर कि मुल्क आजाद होकर रहेगा।

यशवन्त : तुम क्या खुदा हो जो यह दावे के साथ कह सकते हो?

रहमत : मैं खुदा का एक बन्दा हूँ सरकार। अपनी बूढ़ी आँखों से दूर आसमान में देख रहा हूँ। भारत माता की बेड़ी टूट रही है। अंगरेज भाग रहे हैं। अपनी हुकूमत आ रही है।

यशवन्त : बकवास है, लगता है, उन सिरफिरों ने तुम्हें कुछ खिला दिया है जो तुम इस तरह की बातें कर रहे हो।

रहमत : नहीं हुजूर, मुझे ये लोग क्या खिलायेंगे? मैं तो आपका दिया अन्न खाकर ही खुश हूँ।

यशवन्त : अंगरेज चले जायेंगे तो क्या हमलोग सुरक्षित रहेंगे रहमत? अरे, आपस में ही कट मरेंगे सबलोग। इसे लिख लो।

रहमत : वक्त बतायेगा कि क्या होगा। अभी से कुछ कहा नहीं जा सकता मालिक। बदलाव तो आयेगा ही। अपनी हुकूमत होगी तो जवाबदेही बढ़ेगी ही।

यशवन्त : रहमत, सच सच बताओ। अंगरेजों के जाने के बाद हमलोगों का क्या होगा?

रहमत : हुजूर, मुल्क की खास धारा में सबको आना होगा। नजरिया बदलना होगा। अगर आप गरीबों का ख्याल रखेंगे तो वो भी आपके साथ होंगे।

यशवन्त : लगता है, गाँधी बाबा आँधी लाकर ही रहेंगे वरना ये निहत्ये बेवकूफ इस तरह के नारे नहीं लगाते। मुझे तो लगता है कि भारी उपद्रव होगा। ये अंगरेज भी चुपचाप बैठने वाले नहीं हैं।

रहमत : कुछ भी हो सकता है मालिक। वक्त लग सकता है। लाशें गिर सकती हैं। लेकिन बदलाव आयेगा जरूर।

यशवन्त : तुम अपने काम पर मुस्तैद रहो। हमें तो तुम पर ही भरोसा है रहमत।
(प्रस्थान। दूसरी तरफ से रानी का प्रवेश। इधर उधर देखती है।)

रानी : रहमत!

रहमत : हाँ रानी माँ।

रानी : क्रांति की क्या प्रगति है रहमत?

रहमत : सब ठीक है रानी माँ। आज बगल के शहर से कुछ और इन्क्लाबी आये हैं। उनकी मीटिंग चल रही है।

रानी : कोई हंगामा नहीं होना चाहिये। कोई मारपीट न हो। उनके रहने और खाने-पीने का पूरा इन्तजाम होना चाहिये। सब काम चुपचाप हो।

रहमत : आपके हुक्म का पालन हो रहा है रानी माँ।

रानी : सुना है, अंगरेज एस. पी. दौरे पर आने वाला है। सबको खबरदार कर दो। यहाँ का दारोगा बड़ा जालिम है। उससे बच कर रहना होगा।

रहमत : आप ठीक कहती हैं रानी माँ।

रानी : कुछ रुपये पैसे की जरूरत हो तो मुझे कहना। हाँ, राजा साहब को कुछ मालूम न हो। अगर उनको भनक लग गयी तो अनर्थ हो जायेगा।

रहमत : आप ठीक कहती हैं रानी माँ।
(दोनों का दो ओर प्रस्थान)

Scanned with OKEN Scanner

चौथा दृश्य

स्थान : यशवन्त राव की हवेली

(एक कमरे में अंगरेज एस. पी. मिस्टर रेनर और यशवन्त राव बैठे चाय पी रहे हैं। दारोगा कड़े खाँ और रहमत अली अदब से खड़े हैं।)

यशवन्त : एस. पी. साहब, आप मेरी हवेली में पधारे। इसके लिए मैं बड़ा शुक्रगुजार हूँ।

रेनर : राजा साहब, आई ऐम रियेली ग्लैड टु मीट यू।

यशवन्त : रेनर साहब, आप पहली बार इधर आये हैं। हुक्म कीजिये, क्या खातिरदारी करूँ?

रेनर : नो खातिरदारी राजा साहब। नो फोर्मेलिटी। हम आपका बहुट टारीफ सुना। इसी से भेंट करने आया। जस्ट ए कर्टिसी काल। नो काम।

यशवन्त : हमारी तारीफ आपने सुनी। मैंने तो ऐसा कोई काम नहीं किया है एस. पी साहब। मैं तो ब्रिटिश सरकार का खैरखाह हूँ।

रेनर : दैट्स राइट। हमारा पुलिस डारोगा-आई मीन......**(जैसे नाम भूल गये हों-दारोगा की तरफ देखते हैं)**

कड़े : हुजूर, दारोगा कड़े खाँ। जी, बन्दे का यही नाम है।

रेनर : यस-यस-हम भूल गया था, तुम दारोगा कड़े खान।

कड़े : यस सर। **(सैल्यूट करना)**

रेनर : राजा साहेब। **(कुछ बोलना चाहते हैं, पर बोल नहीं पाते)** खान, टुम बाहर जाकर वेट करो। हम राजा साहब से कुछ जरूरी बाट करने मांगटा।

यशवंत : रहमत, तुम भी बाहर जाओ।
(दोनों सलाम करके बाहर चले जाते हैं।)

रेनर : राजा साहब, हम जानना मांगटा-आपका एरिया में गाँधी का आदमी क्या करता ?

यशवन्त : यहां तो कोई गड़बड़ नहीं है एस० पी० साहब। औल काम ऐण्ड क्वायट।

रेनर : नो राजा साहब, नो काम एण्ड क्वायट। पूरा मुलूक में प्रोसेशन निकलटा, स्लौगन होटा। खादी का कपड़ा पहनता। लाईन उखाड़टा। टेलीग्राफ वायर काटटा। फिर आपका एरिया मुलुक से बाहर नहीं। यहाँ भी डिसटर्बेन्स होटा। आपको मालूम नहीं।

यशवन्त : मि० रेनर, यह बात सही है कि बीच बीच में यहाँ भी इन्कलाब जिन्दाबाद, महात्मा गाँधी की जय के नारे सुनाई पड़ते हैं। लेकिन कोई गड़बड़ी नहीं है।

रेनर : एक्जैक्टली सो। वही स्लोगान तो बिगिनिंग है राजा साहब।

यशवन्त : (हंस कर) इसका एन्ड क्या है, एस० पी० साहब?

रेनर : ओनली गॉड नोज़, राजा साहब।

यशवन्त : इस इलाके के बारे में आपको मैं आश्वासन देता हूँ। आप बेफिक्र रहें। यहाँ कुछ नहीं होगा।

रेनर : नौट सो इज़ी टु बिलीव। हमको खुफिया महकमा से खबर मिला कि आपका एरिया ऐसा क्राइम में शामिल हय। शायद आपको मालूम नहीं।

यशवन्त : हमको भले मालूम नहीं हो। लेकिन आपका दारोगा कड़े खाँ तो सब कुछ जानता होगा।

रेनर : आई डाउट। कड़े खान भी कुछ नहीं जानता।

यशवन्त : फिर आपको कैसे पता लगा?

रेनर : हमारा स्पाई सब जगह फैला। हर बाट का खबर हमको डेटा।

यशवन्त : अगर आपको किसी आदमी पर शक हो तो मैं उसकी चमड़ी उतरवा लूँगा। मैं बड़ा भयानक आदमी हूँ एस.पी. साहब।

रेनर : (हंसते हुए) रियली?

यशवन्त : यस, मि० रेनर। वैसा आदमी मेरा भी दुश्मन है। मैं ब्रिटिश सरकार की पूरी मदद करूँगा। इसे आप सच मानें।

रेनर : आई ऐम ग्लैड टु हियर इट फ्रोम यू। यू आर माई बेस्ट फ्रेन्ड इन दिस एरिया। आप केयरफुल रहेगा। कभी भी, कुछ भी, होने सकेगा। आपको तैयार रहना होगा। बी रेडी ऐन्ड बी केयरफुल, माई फ्रेंड।

यशवन्त : मि० रेनर, आप मेरे स्वभाव को और मेरी ईमानदारी को अच्छी तरह जानते हैं।

रेनर : राजा साहब, आपका रानी साहबा कहाँ होने सकता?

यशवन्त : रानी यहीं है, एस० पी० साहब। उसके बारे में क्या जानना चाहते हैं?

रेनर : कुछ नहीं। हम रानी साहबा से भेंट करना मांगता। ऐनी ओबजेक्शन?

यशवन्त : नहीं। कुछ नहीं। लेकिन रानी एक हिन्दू नारी है। वो इस तरह एक विदेशी के सामने शायद नहीं आना चाहेगी।

रेनर : हम अंगरेज लोग औरत को रेसपेक्ट देना जानटा, राजा साहब। वी, इंगलिशमेन, नो हाउ टु रेसपेक्ट ए लेडी। नो फ़ीयर प्लीज़।

यशवन्त : क्या हम भी मौजूद रह सकते हैं, एस० पी० साहब?

रेनर : नो, प्लीज। डोन्ट हेज़िटेट, राजा साहब। प्लीज ब्रिंग हर इन। प्लीज़ ट्रस्ट मी। **(यशवन्त अन्यमनस्क भाव से जाते हैं। इस बीच रेनर कमरे का मुआयना करते हैं। फिर सिगार निकाल कर सुलगाते हैं और पीते हैं। यशवन्त के साथ रानी साहबा का प्रवेश। रेनर खड़े हो जाते हैं और सैल्यूट करते हैं। रानी मुस्कुरा कर हाथ जोड़ देती है।)**

रेनर : रानी साहबा, हम इस जिले का एस० पी० रेनर। आपसे मिल कर बहुत खुश-रियेली।

Scanned with OKEN Scanner

रानी : हमें भी खुशी हुई आपसे मिल कर, एस० पी० साहब। **(रेनर, यशवन्त की ओर देखते हैं। यशवन्त इशारा समझ जाते हैं।)**

यशवन्त : रानी, रेनर साहब, तुमसे अकेले में बातें करना चाहते हैं। इसलिए मैं जाता हूँ। **(यशवन्त का प्रस्थान। रानी कुर्सी पर बैठ जाती है। रेनर कुछ सोचने लगते हैं।)**

रानी : एस० पी० साहब, आप मुझसे कुछ बातें करना चाहते हैं।

रेनर : ओ, यस। रानी साहबा, मामला सीरियस है। सो आई हैव टु टेक दिस अनप्लेज़ेन्ट स्टेप। हम माफी मांगटा।

रानी : मि० रेनर, डोन्ट वेस्ट टाईम। हवाट डु यू वान्ट टु आस्क? **(रेनर, रानी के अंगरेजी ज्ञान पर चौंकते हैं।)**

रेनर : आप अंगरेजी बोल सकटा, रानी साहबा?

रानी : **(हंस कर)** आप क्या समझते हैं?

रेनर : यू नो गुड इंगलिश। आप अंगरेजी बढ़िया बोलटा। आपका एजुकेशन?

रानी : एम० ए०।

रेनर : वन्डरफुल। एम० ए०? क्या राजा साहब इस बाट को जानटा?

रानी : नो मि० रेनर। यह अंगरेजी का ज्ञान कोई भारतीय नारी अपने पति को नहीं दिखाती। यह उसकी अपनी चीज़ है।

रेनर : राइट यू आर, ग्रेट लेडी।

रानी : ग्रेट लेडी? नो मि० रेनर। मैं ग्रेट नहीं हूँ। महज़ एक हाउसवाइफ हूँ। बस।

रेनर : वेल, नाऊ कम टु दि प्वाइन्ट। हम जानने मांगटा...

रानी : **(हंस कर)** क्या जानने मांगटा, मि० रेनर ?

रेनर : इन्डिया में हर जगह बगावट होटा। सब लोग ब्रिटिश को निकालने मांगटा। आप जानटा ?

रानी : तो इसमें गलत क्या है, एस० पी० साहब ? हम इस देश के वासी हैं। कोई गैरमुल्की हम पर क्यों शासन करेगा ? किस अधिकार से ? - आप ही बतायें।

रेनर : रानी साहबा, इज इट राइट टु राइज इन रिबेलियन ? टेल मी।

रानी : इट इज सेन्ट पर सेंट राइट, मि० रेनर। आजादी हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है।

रेनर : हू सेज़ दिस ?

रानी : बाल गंगाधर तिलक। नाम नहीं सुना उनका ? वे महाराष्ट्र के थे- याने.

रेनर : तिलक! गांधी! - ओह!

रानी : गांधी नहीं, महात्मा गाँधी कहिये। वे इस आजादी की लड़ाई के कमान्डर हैं। भारत की आत्मा हैं, हमारी शान हैं। **(रेनर, रानी की तरफ देखता रहता है।)**

रेनर : हम आपसे जानना मांगटा कि क्या आप भी इस बगावट में शामिल हय ?

रानी : हूँ भी और नहीं भी।

रेनर : क्या मटलब ? बी क्लियर, ग्रेट लेडी।

रानी : **(हंस कर)** फिर ग्रेट लेडी। मैं एक साधारण नारी हूँ, एस० पी० साहब। आई ऐम ऐ मोस्ट ऑर्डिनरी लेडी-ए विलेज लेडी।

रेनर : विलेज लेडी इटना पढ़ा-लिखा नहीं होटा। इटना साफ साफ नहीं बोलटा। नो-नेभर।

रानी : हर गुलाम मुल्क के इतिहास में एक ऐसा समय आता है जब उसकी बहादुरी और अक्ल जागती है और वह आजादी के लिए जंग करता है। अमेरिकन वार आफ इन्डिपेंडेंस भी तो ऐसा ही था। जार्ज वाशिंगटन ने कार्नवालिस जैसे वीर के छक्के छुड़ा दिये थे। नाइंटीन्थ अक्टूबर सेवनटीन एटीवन। यही वह तारीख थी जब अंगरेज कमान्डर लौर्ड कार्नवालिस ने योर्क टाउन में सेरन्डर किया था। अमेरिका आजाद हुआ और अंगरेजों को वह मुल्क छोड़ना पड़ा।

रेनर : यू हैव गुड नालेज आफ हिस्ट्री। आई अप्रेशियेट दैट। बट इन्डिया इज नाट अमेरिका। माइन्ड इट।

रानी : यहाँ भी ऐसा ही होगा मि० रेनर। समय लग सकता है- लेकिन हम आजाद होकर रहेंगे। इसे जान लीजिये।

रेनर : रानी साहबा, इन्डिया इटना बड़ा मुलुक हय। आजाद होने के बाद इस मुलुक में भारी सिविल वार होगा। हिन्दू ओर मुसलिम लड़ेंगे। फिर कौन रूल करेगा ?

रानी : हिन्दू और मुसलमान दोनों इस मुल्क के रहने वाले हैं। लड़ेंगे, तो मिलेंगे भी। दोनों को इसी मुल्क में रहना है। और सच जानिये, एस० पी० साहब- इस मुल्क में राजाओं का शासन रहा, बादशाहों का शासन रहा। उन सैकड़ों सालों में ये क्यों नहीं लड़े ? आज क्या हो गया कि ये लड़ेंगे ? बताइये।

रेनर : दे आर अनफिट टु रूल। देअर विल बी ब्लड शेड-ब्लड बाथ। खून का रिवर बहेगा।

रानी : मि० रेनर, हिन्दू-मुसलमानों के बीच नफरत की दीवार अंगरेजों ने खड़ी की है। वे चाहते हैं कि हम लड़ते रहें और आप लोग रूल करते रहें, हमारे मुल्क को लूटते रहें।

रेनर : आप क्या चाहटा, मैडम ?

रानी : विदेशियों, भारत छोड़ो-क्वीट इंडिया। भारत छोड़ो।

रेनर : गुड। हम आपका हिम्मट डेखकर टाज्जुब करटा रानी साहबा।

रानी : क्योंकि हम औरत हैं, इसलिये। है न एस० पी० साहब ?

रेनर : एक्जैक्टली सो।

रानी : रेनर साहब, इतिहास के पन्ने उलट कर देखिये। झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई, बेगम हजरत महल, बेगम जीनत महल इसी मुल्क में हुई थीं। इन महिलाओं के नाम से अंगरेज कांपते थे।

Scanned with OKEN Scanner

रेनर : बट दोज़ डेज़ आर गौन, ग्रेट लेडी।
रानी : महात्मा गांधी की पत्नी कस्तूरबा, नेहरू जी की पत्नी कमला नेहरू, अरुणा आसफअली, सरोजिनी नायडू आदि महिलाओं ने हाल की आजादी की जंग में क्या कुछ नहीं किया। इनके रेकार्ड आपके यहाँ मौजूद हैं, मि० रेनर।
रेनर : हम जानने मांगटा, रानी साहबा- क्या आप रिबेल्स को मडड करटा ?
रानी : रिबेल्स कौन हैं एस० पी० साहब ? ये तो बिना हथियार के लड़ रहे हैं। ये हमारी रैयत हैं। क्या इन्हें अन्न जल भी देना आपकी नजर में गुनाह है ?
रेनर : नाट ऐट आल। गरीबों को मडड करना अच्छा काम है।
रानी : वही काम तो मैं कर रही हूँ। इसमें सरकार को कोई एतराज नहीं होना चाहिये।
रेनर : ग्रेट लेडी, योर आर्गुमेंट इज कन्विसिंग। अन्न जल-यू मीन फूड ऐन्ड वाटर। इज इट नौट ?
रानी : जी हाँ, एस० पी० साहब! आपने ठीक समझा। हम गरीबों की मदद करते हैं। नहीं जानते कि कौन बागी हैं और कौन बागी नहीं हैं।
रेनर : लेकिन उनको हथियार कौन डेटा ? आई मीन-आर्म्स?
रानी : हथियार ? **(हंसना)** नहीं मि० रेनर। आजादी के इन दीवानों को हथियारों की कोई जरूरत नहीं है। महात्मा गाँधी हिंसा याने वायलेन्स के खिलाफ हैं।
रेनर : आप ऐसा बोलटा, लेकिन सुभाष तो आर्म्ड स्ट्रगल के लिए टैयार।
रानी : यह मुल्क बहुत बड़ा है, एस० पी० साहब। यहां भिन्न भिन्न विचार के लोग रहते हैं। सुभाषचन्द्र बोस आजादी के लिए आर्म्स के प्रयोग को बुरा नहीं मानते। यह उनकी विचारधारा है, सारे भारत की नहीं।
रेनर : गुड। हम सब समझ गया। इट इज नाऊ क्रिस्टल क्लीयर टु मी। **(ताली बजाता है। दारोगा कड़े खां आकर सलाम करता है। यशवन्त और रहमत भी आते हैं।)**
रेनर : खान।
कड़े : सर।
रेनर : टुम्हारा हथकड़ी याने हैन्डकफ-कहाँ ?
कड़े : पास में है सर। दारोगा कड़े खां हथकड़ी साथ रखता है।
(हथकड़ी निकालना)
रेनर : गुड। खान, रानी को हथकड़ी पहनाओ।
यशवन्त : यह क्या एस० पी० साहब ? रानी को हथकड़ी ?
रानी : एस० पी० साहब, मेरे हाथ हाजिर हैं। दारोगा जी, पहनाइये हथकड़ी।
(हाथ फैला देती है। दारोगा हथकड़ी लेकर आगे बढ़ता है।)
रेनर : खान, स्टौप। नो हथकड़ी। **(कुछ रुक कर)** हम डेखना मांगटा था इस इंडियन लेडी का रियेक्शन। मेरा ख्याल था- यह नाराज होगा, गरम होगा। लेकिन ऐसा कुछ नहीं हुआ। आई एप्रिशियेट दि करेज ऐन्ड कूलनेस ऑफ दिस लेडी-ए ग्रेट लेडी। यस, ए ग्रेट लेडी। खान, कीप योर हथकड़ी।

(कड़े खाँ सलाम करके पीछे हट जाता है।)
रेनर : राजा साहब, यू आर फौरचुनेट टु हैव हर ऐज़ योर वाइफ। रियली सो इनलाइटेन्ड। ग्रेट लेडी, इन्डिया फ्री होकर रहेगा। टाइम लगने सकटा। यह मूवमेंट ब्रिटिश डबा नहीं सकटा। हिस्ट्री संज़ दिस। अगर मुलुक फ्री हुआ और हम इन्डिया में रहा टो हम फिर आयंगा। आपसे मिलने। गुड बाय ग्रेट लेडी। गुडबाय टु यू आल। थैंक यू।
(रेनर आगे-आगे, उनके पीछे कड़े खाँ का प्रस्थान)।

पाँचवा दृश्य

स्थान : नदी तट। पीपल का वृक्ष।

(दूर में नारे- "इंक्लाब जिन्दाबाद, भारत माता की जय, महात्मा गाँधी की जय।" शोर गुल। गाँव के सभी लोग स्त्री-पुरुष और बच्चे मौजूद हैं। यशवन्त, रानी, रहमत अली भी आते हैं और अपना-अपना स्थान लेते हैं। रहमत अली सबसे पीछे बैठता है। शोरगुल जारी।)
मंगरू : बहनो, भाइयो और बच्चो, शान्त! शान्त!
बेहस्पत : भाइयो, मंगरू कुछ बोल रहा है। शान्त होकर सुनो।
(सब शान्त हो जाते हैं।)
मंगरू : भाइयो! हमारी बरसों की तपस्या सफल हुई। हमारा देश आजाद हो गया। अंगरेज सात समुन्दर पार से आये थे। सब मायामोह त्याग कर अब वो सब विलायत लौटने लगे हैं। अब इस देश का शासन भार हमलोगों के कंधों पर है।
किसान-1 : मंगरूआ ठीके बोलता है। अब चलावो न राजकाज। काहे भैया हरखू सेठ ?
किसान-2 : अरे चमगादड़, मजाक काहे करता है ? अगर हम हरखू सेठ होते त हम भी उनके जयसन दोकान पर बैठते। लेकिन हम तो हरखुआ। सभ्भे लोग जानता है।
बेहस्पत : मंगरू ठीक बोलता है।
मंगरू : भाइयो, हमारा यह इलाका बहुत पिछड़ा है। इसे आगे लाना है। स्कूल खोलना है। उद्योग लगाना है। खेती को उन्नत करना है। लड़कियों को पढ़ाना है। इस तरह के अनेक काम करने हैं।
झगडू : हमलोग मंगरू की राय से सहमत हैं।
किसान-1 : झगडुआ ठीके बोलता हय। जब देश के आजादी मिल गेल तब गाँव के विकास के बारे में तो हम ही लोग के सोचे के काम हे।
किसान-2 : गाँव के विकास के बारे में सोचे के साथ-करे के भी जरूरत हे। एक्कर बादे हमलोग के जिनगी सुखी रह सकऽ हे।
बेहस्पत : मंगरू, यह बताओ कि इस बड़ी मीटिंग में और क्या करना है।

Scanned with OKEN Scanner

मंगरू : भाई, हमलोगों को मुखिया चुनना है। मुखिया को ही ये सब करना है। वही हमारा रहनुमा होगा। मुखिया ऐसा आदमी होना चाहिये जो हमारा हमदर्द हो और जिसको सबलोग पसन्द करें।

(भीड़ में लोग आपस में बातें करते हैं। घुनघुनाहट।)

किसान1 : मंगरू के मुखिया बना दवल जाये तब एकरा में का हर्जा होत ?

किसान2 : अरे बकलोल, मंगरूओ जाहिल हई। एकदम टिप्पा छाप। बड़का बड़का अमदी से राय सलाह करे में तरेंगन सूझे लगत। दूसर बात इ हे कि जाहिल अमदी के एतना पावर नय होवे के चाही कि बिहान होके उ भी राजा जयसन मोंछ अईठे लगे। पानी में आग लगावे लगे।

बेहस्पत : भाइयो, यह बात सच है कि मुखिया को समझदार और पढ़ालिखा होना चाहिये।

झगडू : गाँव में पढ़ा लिखा कौन है ?

किसान-1: हम सभ्भे तो अंगूठा छाप पब्लिक ही। काला अच्छर भैंस बराबर।

(सब हंसते हैं।)

बेहस्पत : जमीन्दार यशवन्तराव अगर मुखिया हों तो कैसा रहे। वे रोबदाब वाले आदमी हैं। पढ़े लिखे हैं।

रानी : मैं इस प्रस्ताव का विरोध करती हूँ।

(सबलोग रानी की तरफ देखते हैं।)

रानी : आपलोगों को ताज्जुब होगा कि मैंने राजा साहब के नाम का विरोध क्यों किया।

मंगरू : रानी साहबा हम लोगों को समझावें कि राजा साहब में कौन सा ऐब है कि वे मुखिया नहीं हो सकते हैं।

रानी : भाइयो, राजा साहब अंगरेजों के पक्षधर रहे हैं। उन विदेशियों की मदद करते रहे जो हम पर तरह तरह के जुल्म करते थे। आपलोगों को याद होगा कि जब आपलोगों के खेत सूख रहे थे और रेखानदी में पानी भरा था, तब आप लोगों को उन्होंने अपनी हवेली से भगा दिया था। यह तो पीपल के भूत की मेहरबानी थी कि आपके खेत पानी से भर गये थे। भूत को आपलोगों पर दया आयी, पर राजा साहब को नहीं।

किसान-1: रानी मां ठीके बोल रही हैं। भूतवा तो जादा दयालू है।

किसान-2: तो भूतवे को बना दो न मुखिया। रोकता कौन हय ?

किसान-1: तू चुप्पे रह बुद्धूदास। इहां तोर अक्किल के जरूरत नय हे।

रानी : अगर राजा साहब को ही मुखिया बनाना है तो हो गया गाँव का विकास। वे कभी नहीं चाहेंगे कि यहाँ के लोग पढ़-लिख कर समझदार हो जायें, अच्छे बुरे की पहचान करें। फिर आपकी इस आजादी का अर्थ क्या रह जायेगा ? कैसे करेंगे आप तरक्की ? - मुखिया का चुनाव बहुत सोच समझकर कीजिये। मुखिया का पढ़ा लिखा होना उतना जरूरी नहीं, जितना उसका हमदर्द होना।

जो आपके दुख में शरीक हो, जिसका अपना कोई स्वार्थ न हो, जो ईमानदार हो-वही व्यक्ति आपका मुखिया होने लायक है।

किसान1: रानी मां केतना बढ़िया से फरिया फरिया के एकक बात बता दिये। हमरा तो बुझाता है कि मुखिया के लायक रानी मां के अलावा कोय दूसर अमदी एतना समझदार नय हे।

किसान2 : सचमुच! रानी मां के मुखिया बनावे के चाही।

किसान1 : अरे बेवकूफ दास, आगे के बात तू काहे नय समझता है। औरत जात मुखिया बन के रोब गांठे और मरदाना सब चूड़ी पहिन के तमासा देखे। अगर अयसन हुआ तब समझो घरे में सुरू हो जायेगा महाभारत।

किसान2 : ई भी ठीके बात हे।

मंगरू : रानी मां का कहना ठीक है। लेकिन फिर मुखिया के लिए किसका नाम दिया जाये ?

बेहस्पत : है एक आदमी जो गरीबों का हमदर्द है, जो हम सबके दुख में साथ रहता आया है।

मंगरू : कौन है वह आदमी ?

बेहस्पत : इस सभा में वो सबसे पीछे बैठा है, जिसकी आंखें जमीन की तरफ हैं, जिसके बदन पर मैले कुचैले कपड़े हैं, वही होगा हमारा मुखिया-हमारा रहनुमा।

(सब पीछे मुड़कर देखते हैं। शोर।)

सब : कौन ? कौन है वह ?

मंगरू : काका रहमत अली। **(रहमत चौंकता है)**

बेहस्पत : हाँ, काका रहमत अली।

रहमत : ठहरो भाइयो। ऐसा फैसला लेने के पहले अच्छी तरह सोच लो। मैं जाहिल-गंवार हूँ। मुझे मुखिया मत चुनो। मैं इस पदवी के लायक नहीं हूँ।

बेहस्पत : जाहिल-गंवार होने से कुछ नहीं होता काका। हम सब आपके साथ हैं। आप हम सब के काका हैं। आप ही हमारे मुखिया होंगे। भाइयो!

(सब ताली बजाते हैं)

बेहस्पत : काका, आप हमारे पास आ जाइये। जाओ मंगरू, काका को यहाँ ले आओ।

(मंगरू, काका के पास जाता है। काका अपनी जगह से उठते नहीं हैं।)

रहमत : मुझे माफ करो भाइयो। मै जाहिल गंवार हूँ।

रानी : काका, अगर गाँव वाले तुम्हें यह सम्मान देना चाहते हैं तो तुम एतराज न करो। लोगों का दिल मत तोड़ो। इस पद को पाने के लिए लोग धन लुटाते हैं। सब तरह का कुकर्म करते हैं। आओ, सब की बात रखो। मैं भी तुमसे निवेदन करती हूँ।

रहमत : रानी मां, आपकी बात मैं उठा नहीं सकता।

(बेहस्पत रहमत के पास आता है। बेहस्पत उसे माला पहनाता है। तालियाँ)

बेहस्पत : काका रहमत अली की जय।!

Scanned with OKEN Scanner

सब : काका रहमत अली की जय! **(नारे बार बार)**

बेहस्पत : काका, तुम भी कुछ बोलो। लोग तुमसे कुछ सुनना चाहते हैं।

रहमत : गाँव के भाइयो, बहनो और बच्चो, इस पदके काबिल मैं नहीं हूँ। मुझसे जादा पढ़े लिखे, काबिल लोग इस सभा में मौजूद हैं। मैं कोई नेता या लीडर नहीं हूँ। मैं इस गाँव का अदना इन्सान हूँ। खुदा की इबादत और आपलोगों की खिदमत करना अपना फर्ज मानता हूँ। उस परवरदिगार से यह आरजू करता हूँ कि जिस यकीन के साथ आपलोगों ने मुझे मुखिया चुना है, उसके लायक मैं बन सकूँ। या खुदा!

(रो पड़ते हैं। कुरते की बाँह से अपने आँसू पोछते हैं। बेहस्पत संभालता है। रहमत बैठ जाते हैं। तालियाँ। सामने से एस० पी० रेनर साहब और दारोगा कड़े खाँ आते दिखाई पड़ते हैं। सबलोग खड़े हो जाते हैं।)

रेनर : हम टाइम पर आया। हलो राजा साहब। **(हाथ मिलाते हैं)** हलो रानी साहबा। **(रानी नमस्कार करती है)**

यशवन्त : एस० पी० साहब का हम सबलोग स्वागत करते हैं। एस० पी० साहब इस इलाके के शुभचिन्तक रहे हैं। हम उनके इस अहसान को नहीं भूल सकते।

रानी : मि० रेनर अंगरेज हैं और उन शासकों में एक हैं जो इस देश पर जुल्म करते आये हैं। फिर भी अपनी ऊँची जवाबदेही का निर्वाह करते हुए उन्होंने हमें बड़ी मदद की। हम उनके अहसान को कभी नहीं भूल सकते।

रेनर : ग्रेट लेडी को हम ग्रेट का ओहदा दिया, वह बेकार नहीं था। जिस मुलुक में ऐसा लेडी होता, वह गुलाम नहीं होने सकटा। नो, नेभर। हम बोला था कि हम यहां दुबारा आयेगा। इसलिए इंडिया के फ्री होने पर हम यहां फिर आया-आप सब को मुबारकबाड डेने के लिए। ओल्ड मैन माला पहन कर बैठा। यह आपका लीडर है। गुडा। यही है इन्डिया। आप जानटा, हम अंगरेज लोग इंडिया छोड़ कर जाटा। अब इन्डिया फ्री हय। आजाड हय। आपको अपना गवर्मेन्ट बनाना हय। डेमोक्रेसी चलाना हार्ड टास्क। वेरी डिफिकल्ट। लेकिन सब ठीक हो जायेगा। टाइम लगेगा। हम भी विलायट लौटनेवाला। लेकिन वहाँ से सब कुछ सुनेगा। अंगरेज आपका डोस्ट। फ्रेंड। इसको सच मानो। आपके टरक्की से हम खुश होगा। राइटो। थैंक यू आल। थैंक यू राजा साहब। थैंक यू ग्रेट लेडी।-हाँ, एक बाट याड रखो। बराबर यूनिटी रखो। थैंक यू आल।

(रहमत अली एक माला मि० रेनर को पहनाते हैं। तालियाँ)

नारे : भारत माता की जय! महात्मा गाँधी की जय!

(एस० पी० और कड़े खाँ जाते हुए फ्रीज। सभी लोग फ्रीज)

समाप्त

उर्वशी

(पौराणिक नाटक)

पात्र–परिचय

पुरुरवा	:	प्रतिष्ठानपुर के राजा
बुध	:	पुरुरवा के पिता
इला	:	पुरुरवा की माता
इन्द्र	:	देवराज
मातलि	:	इन्द्र के सारथी
केशि	:	दैत्यों का नेता
देवी	:	पुरुरवा की रानी
उर्वशी	:	अप्सराओं की रानी
भरतमुनि	:	नाट्यशास्त्र के प्रणेता
बृहस्पति	:	देवताओं के गुरु
सुकन्या	:	च्यवन ऋषि की पत्नी
आयु	:	उर्वशी का पुत्र
अन्य पात्र	:	चित्रलेखा, रम्भा, मेनका, दासी, प्रहरी, मंत्री आदि

उर्वशी

(पौराणिक नाटक)

(पृष्ठभूमि में ऋग्वेद-पाठ)

पहला दृश्य

(प्रतिष्ठानपुर में महाराज पुरुरवा की राजसभा। सभा में सेनापति, मंत्री तथा अन्य दरबारीगण। प्रहरी आकर प्रणाम करता है।)

प्रहरी : प्रतिष्ठानपुर-नरेश की जय!

पुरुरवा : प्रहरी, क्या बात है?

प्रहरी : स्वर्गपुरी से देवराज इन्द्र के सारथी मातलि आये हैं। महाराज के दर्शन करना चाहते हैं।

पुरुरवा : मातलि को यहीं ले आओ।

प्रहरी : जो आज्ञा। (अभिवादन करके जाता है। दरबार के सभी लोग एक-दूसरे की तरफ प्रश्नसूचक दृष्टि से देखते हैं।)

Scanned with OKEN Scanner

मंत्री : स्वर्गपुरी से मातलि के आने का अवश्य कोई विशेष अर्थ है।

पुरुरवा : मन्त्रीजी, मातलि इन्द्र का विश्वासपात्र है। अवश्य कोई खास बात है।

सेनापति : देवराज तो महाराज के परमप्रिय मित्र हैं। लगता है, स्वर्गपुरी पर कोई संकट है।

पुरुरवा : मुझे भी ऐसा ही लगता है।

(मातलि का प्रवेश। सबको अभिवादन।)

पुरुरवा : मातलि, स्वर्गपुरी में मेरे मित्र देवराज इन्द्र सुखी तो हैं?

मातलि : महाराज, देवराज के सुख पर शनि की छाया पड़ गयी है। देवराज चिन्ता में हैं।

पुरुरवा : कैसी चिन्ता?-जिनके आगे पीछे देवता की सेना हो, जिनकी सभा में अप्सराओं का नृत्य-गीत हो, जिनके सामने मेनका, रम्भा जैसी सुन्दरियां सोमरस का पात्र लिये खड़ी रहती हों, जिनके आचार्य बृहस्पति जैसे ज्ञानी हों, उन्हें किस बात की चिन्ता है?

मातलि : कुछ लोग ऐसे हैं जो देवराज के इस सुख और ऐश्वर्य को देख नहीं सकते। वे पहले भी स्वर्गपुरी की शान्ति भंग कर चुके हैं।

पुरुरवा : तुम्हारा संकेत कदाचित असुरों की ओर है।

मातलि : हाँ महाराज, असुर एक बड़ी सेना लेकर स्वर्गपुरी की तरफ बढ़ रहे हैं।

पुरुरवा : उद्देश्य?

मातलि : स्वर्गपुरी पर उनका अधिकार।

पुरुरवा : पिछले युद्ध में तो असुरगण मेरे हाथों पराजित हुए थे।

मातलि : मुझे याद है महाराज। देवराज इन्द्र आपकी इस कृपा को भूले नहीं हैं।

पुरुरवा : देवराज महान् हैं मातलि। उनका क्या आदेश है?

मातलि : आदेश नहीं, निवेदन है महाराज। वे चाहते हैं कि आप उन्हें इस विपत्ति से उबारें।-आपको बुलाने के लिए उन्होंने अपना रथ भेजा है। आप तत्काल प्रस्थान करने की तैयारी करें ताकि देवराज की चिन्ता दूर हो सके।

पुरुरवा : सेनापति!

सेनापति : आज्ञा महाराज!

पुरुरवा : आप शीघ्र सेना के साथ स्वर्गपुरी की ओर प्रस्थान करें। मैं मातलि के साथ प्रस्थान करता हूँ। मन्त्री जी, आप मेरी अनुपस्थिति में यहाँ का काम देखेंगे। चलो मातलि।

(सभी लोग खड़े हो जाते हैं)

दूसरा दृश्य

(देवताओं और दानवों के बीच युद्ध। देवताओं की ओर से अपने-अपने रथों पर सवार युद्धवेश में देवराज इन्द्र और महाराज पुरुरवा। युद्ध में दोनों ओर से धनुष-बाण, गदा, तलवार,बर्छी आदि हथियारों का उपयोग। देवताओं के सिर पर मुकुट। दानवों के शरीर पर जंगली कपड़े और सिर पर असुरों के मुकुट। कोलाहल और चीत्कार। पृष्ठभूमि में रणवाद्य। पुरुरवा के बाणों से असुरगण में अनेक गिरते हैं। मरते हैं। बाद में वे सब रण छोड़कर 'भागो' 'भागो' कहते हुए भागते हैं। इन्द्र अपना रथ दौड़ाते हुए पुरूरवा के निकट पहुँचते हैं। यह सब आकाश में होता है।)

इन्द्र : महाराज पुरुरवा, आपके वीरत्व के आगे असुरगण ठहर नहीं सके। स्वर्गपुरी पर अधिकार करने का इनका सपना पूरा नहीं हुआ।

पुरुरवा : देवराज, यह मेरा वीरत्व नहीं था, बल्कि आपका रणकौशल और देवसेना का पुरुषार्थ था जिसके कारण आपको विजयश्री मिली।

इन्द्र : महाराज पुरुरवा, यह आपकी महानता है कि आप इस विजय का श्रेय स्वयं नहीं लेना चाहते।

पुरुरवा : देवराज, मैं तो इसी से प्रसन्न हूँ कि स्वर्गपुरी के राजा इन्द्र ने एक मनुष्य को अपना मित्र बना लिया। कहाँ देवता और कहाँ मनुष्य? हम आपसे बहुत छोटे हैं देवराज।

इन्द्र : आपने अपने स्नेह के बन्धन में स्वर्गपुरी के सभी देवताओं को बाँध लिया है। हम देवगण आपके चिरकृतज्ञ रहेंगे। मेरी एक प्रार्थना है।

पुरुरवा : कैसी प्रार्थना?

इन्द्र : आप मेरे साथ देवलोक चलने की कृपा करें। हम वहाँ विजयोत्सव मनायेंगे। आपकी उपस्थिति से सभी देवगण प्रसन्नता का अनुभव करेंगे।

पुरुरवा : आपकी जैसी इच्छा। **(रथ वापस ले चलते हैं।)**

तीसरा दृश्य

(स्वर्गपुरी। सभी देवगण विराजमान हैं। सामने के दो सिंहासन इन्द्र और पुरुरवा के लिए खाली हैं। एक तरफ उर्वशी, मेनका, रम्भा, चित्रलेखा आदि अप्सरायें हैं जिनके हाथों के थाल में पुष्पादि हैं।)

सभी : महाराज पुरुरवा की जय!
महाराज पुरुरवा की जय!

Scanned with OKEN Scanner

(इन्द्र और पुरुरवा पधारते हैं। अप्सरायें उन पर पुष्प बरसाती हैं। दोनों देवगुरु बृहस्पति को प्रणाम करते हैं। बृहस्पति आशीर्वाद देते हैं। उनके आने के समय सबलोग खड़े हो जाते हैं। इन्द्र, पुरुरवा को बैठने के लिए इशारा करते हैं। उनके बैठने के बाद इन्द्र बैठते हैं। तत्पश्चात् अन्य लोग बैठते हैं। इन्द्र खड़े होकर सभा को सम्बोधित करते हैं।)

इन्द्र : परमपूज्य आचार्य बृहस्पति तथा स्वर्गपुरी के वासियो! इस देवासुर-संग्राम में हमें विजय मिली। असुरों की शक्ति से हम सब परिचित हैं। इस बार उनकी योजना थी स्वर्गपुरी पर रक्तध्वजा फहराने की और देवताओं को स्वर्गपुरी से निकालने की। मैंने अपनी सहायता के लिए प्रतिष्ठानपुर के महाराज पुरुरवा को निमन्त्रित किया। सूचना पाते ही वे मेरी सहायता के लिए आ गये। यह उनका ही पराक्रम था कि थोड़ी ही देर के युद्ध के उपरान्त असुर सेना मैदान से भागने के लिए बाध्य हो गयी। हम इस भरी सभा में उनके प्रति अपनी कृतज्ञता प्रकट करते हैं।

बृहस्पति : देवराज एक बात कहना भूल गये।

इन्द्र : कैसी बात आचार्य?

बृहस्पति : महाराज पुरुरवा मनुष्य हैं अवश्य। लेकिन उनका सम्बन्ध इस देवलोक से पुराना है। चन्द्रमा के पुत्र बुध उनके पिता और आदित्यकुल की कन्या इला इनकी माता हैं। उन्हीं बुध और इला के पुत्र हैं महाराज पुरुरवा।

पुरुरवा : आचार्य बृहस्पति ने जो रहस्योद्घाटन किया है, वह सही है। मेरी माता और पिता मेरे साथ ही प्रतिष्ठानपुर में रहते हैं। उन्होंने भी एकबार मुझे यह बात कही थी।

इन्द्र : यह तो और अच्छी बात है। महाराज पुरूरवा का सम्बन्ध देवलोक से बड़ा पुराना है.। अब उनकी निकटता हमसे और अधिक हो गयी।

पुरुरवा : देवराज इन्द्र के इस विजयोत्सव में सम्मिलित होने का जो गौरव मुझे प्राप्त हुआ है, उसके लिए किन शब्दों में आभार व्यक्त करूँ-समझ में नहीं आता।

इन्द्र : आभार व्यक्त करने की औपचारिकता अब हमारे और आपके बीच नहीं रही महाराज।-इस सभा में उर्वशी, रम्भा, मेनका, चित्रलेखा आदि ऐसी अप्सरायें हैं जिनपर देवलोक को गौरव है। ये कला की स्वामिनी हैं। नाट्य, गीत और नृत्य में इनका कोई मुकाबला नहीं है। हम अप्सराओं की रानी उर्वशी से यह अनुरोध करते हैं कि वे अपनी कला का प्रदर्शन हमारे सम्मानित अतिथि के सम्मुख करें।

(नृत्य-गीत का प्रदर्शन। पुरुरवा बड़े ध्यान से उर्वशी के अंग-संचालन को देखते हैं और मोहित होते हैं।)

चौथा दृश्य

(इन्द्रलोक से पुरुरवा अपने रथ पर लौट रहे हैं। आकाशमार्ग से बादलों के बीच उनका रथ चल रहा है। उड़ते बादलों का दिखलाया जाना।)

पुरुरवा : मातलि, नीचे देखो। त्रिवेणी-संगम पर बसा मेरा प्रतिष्ठानपुर नजर आ रहा है।

मातलि : देख रहा हूँ महाराज। त्रिवेणी का संगम अत्यन्त रमणीय है। गंगा, यमुना और सरस्वती की मिली-जुली धारायें किसका मन नहीं मोहतीं? आपके पूर्वजों का बसाया प्रतिष्ठानपुर आपके आगमन की प्रतीक्षा में मानो अधीर भाव में खड़ा है।

पुरुरवा : सच है मातलि। अब रथ नीचे उतारो-त्रिवेणी के तीर पर। पहले इन पवित्र नदियों की पूजा कर लूँ। तब महल में जाऊँगा।

मातलि : जो आज्ञा महाराज।

(रथ नीचे उतरता है।)

पाँचवाँ दृश्य

(प्रतिष्ठानपुर के महल का भीतरी भाग। एक दासी दौड़ती हुई रानी देवी के पास जाती है।)

देवी : कमला, तू दौड़ी क्यों आ रही है?

दासी : महारानी, महाराज आ गये।

देवी : **(प्रसन्नता से)** महाराज आ गये?

(दूर में-'महाराज पुरुरवा की जय' के नारे बार-बार-निकटतर)

दासी : सुनिये महारानी जनता की जय जयकार। महाराज विजयी होकर लौट रहे हैं।

देवी : कमला, मैं महाराज की आरती उतारूँगी। जल्दी से आरती सजाकर ले आ।

(दासी जाने लगती है।)

देवी : और सुन। **(दासी मुड़ती है)** पिताजी और माताजी को भी यह शुभ सम्वाद दे दे। महल के अन्य लोगों को भी कह दे कि वे सब चले आयें। शीघ्र!-समझ गयी?

दासी : हाँ महारानी। **(शीघ्रता में चली जाती है।)**

देवी : **(आँखें मूँद कर)** हे भगवन्! तुमने मेरी प्रार्थना स्वीकार कर ली। मेरे महाराज सकुशल लौट आये। मैं तुम्हारी पूजा करूँगी।

Scanned with OKEN Scanner

छठा दृश्य

(महल का मुख्य द्वार। पुरुरवा के पिता बुध, माता इला, रानी देवी तथा अन्य पुरुष-स्त्री खड़े हैं। दासी के हाथ में आरती की थाल है। देवी के हाथ में पुष्पमाला है। सभी प्रसन्न हैं। प्रसन्नतासूचक संगीत पृष्ठभूमि में। कुछ देर पश्चात् महाराज पुरुरवा का रथ आता है। साथ में सैनिक गण और जनता की भीड़। 'महाराज पुरुरवा की जय' के नारे। रथ रुकता है। महाराज उतरते हैं। वहाँ से मुख्य द्वार तक राह में कुमारियां पुष्प बिखेर रही हैं। महाराज मुख्य द्वार पर देवी के सामने खड़े हो जाते हैं। वे माता का, फिर पिता का चरणस्पर्श करते हैं। दोनों आशीर्वाद देते हैं। -फिर रानी देवी आरती उतारती है और पुष्पमाला उन्हें पहनाती है।-पिता बुध वृद्ध हैं। माँ इला सुन्दर कायावाली अधवयस हैं।)

सातवां दृश्य

(महल का शयनकक्ष। महाराज पुरुरवा एक पलंग पर लेटे हैं। पास ही रानी देवी श्रृंगार से युक्त उनके पास बैठी है।)

देवी : आर्यपुत्र की प्रतीक्षा में मेरे नयन कब से उदास थे। आज दर्शन से इनमें नये प्राण का संचार हुआ है।

पुरुरवा : रानी, मेरा भी यही हाल था। देवराज का बुलावा आया । मैं तुमसे मिल भी नहीं सका। अपनी सेना भी नहीं ली। देवराज के भेजे गये रथ में तत्काल स्वर्गपुरी की ओर चल पड़ा। वहाँ पहुँच कर मुझे लगा कि तत्काल प्रस्थान कर मैंने अच्छा ही किया। असुरों की भारी सेना स्वर्गपुरी में घुसने ही वाली थी। मेरे पहुँचने से देवताओं का मनोबल बढ़ गया।

देवी : युद्ध का क्या हुआ?

पुरुरवा : देवराज इन्द्र सैन्य संचालन कर रहे थे। मेरी सहायता से उन्होंने असुरों पर विजय पाई। असुर भाग खड़े हुए। देवराज ने मुझे विजयोत्सव तक रोक रखा। उनका अनुरोध मैं टाल नहीं सका। इसीसे वापस लौटने में कुछ विलम्ब हो गया। इसके लिए मैं तुमसे क्षमायाचना करता हूँ।

देवी : मुझे ऐसा लगा कि स्वर्गपुरी की अप्सराओं के नयनबाण के महाराज शिकार हो गये।

पुरुरवा : (हंसकर) ऐसा क्यों सोचती हो रानी? तुम्हारे नयनबाण क्या कम घातक हैं? अब भला किसमें साहस है कि दूसरा वार करे?-आओ, निकट आओ। (पुरुरवा रानी को अपनी ओर खींच लेते हैं)

आठवां दृश्य

(उर्वशी, मेनका, चित्रलेखा, रम्भा आदि अप्सरायें आकाशमार्ग से उड़ती हुई आती हैं और एक पर्वतखंड पर उतरती हैं। चारो ओर हरियाली और सुन्दर पुष्प। नदी बह रही है।)

मेनका : हमलोग कहाँ हैं?

चित्रलेखा : मनुष्य लोक में।

रम्भा : मनुष्य लोक में?-अरे, यहाँ कोई मनुष्य तो दिखाई पड़ता नहीं।

उर्वशी : मनुष्यलोक में यह वह स्थान है जहाँ मनुष्य बहुत कम आते हैं।

रम्भा : कम आते हैं?-कारण?

उर्वशी : यह स्थान धरती से काफी ऊँचाई पर है। यहाँ आने के लिए साहस की आवश्यता है।

मेनका : क्या किसी मनुष्य में वैसा साहस नहीं है?

चित्रलेखा : एक मनुष्य में वैसा साहस है।

सभी : कौन है वह?

चित्रलेखा : महाराज पुरुरवा। क्यों उर्वशी?

मेनका : उर्वशी से क्यों पूछती हो?-देखती नहीं?-महाराज पुरुरवा का नाम सुनते ही शर्मा गयी।-

मेनका : प्रश्न बड़ा गम्भीर है।

उर्वशी : कैसी हो तुमलोग ? क्या इसी के लिए तुमलोग यहाँ आयी हो? कितने दिनों के बाद तो यहाँ हँसने-खेलने का अवसर मिला है।

रम्भा : उर्वशी ठीक कहती है। इस रमणीक स्थान में हम नृत्य करें तो कैसा रहेगा?

मेनका : हमारे नृत्य को देखेगा कौन?

चित्रलेखा : यह प्रकृति, यह नदी, ये पुष्प, ये भौंरे, आकाश का चमकता सूर्य।-और कौन?-एकान्त में नृत्य का आनन्द कुछ और ही है। आओ उर्वशी, साथ दो।

(सभी अप्सरायें नृत्य करती हैं। आपस में चुहलबाजी करती हैं। बीच-बीच में हँसती हैं। आकाश में, दूर में भयानक गर्जन होता है। फिर आसुरी अट्टहास गूँजता है। नृत्य बंद। भय का भाव।)

Scanned with OKEN Scanner

नौवां दृश्य

(पर्वत का वही भाग। आसुरी अट्टहास करते आकाशमार्ग से केशि नामक असुर उतरता है।)

केशि : एक साथ स्वर्गलोक की इतनी सुन्दरियाँ? (अट्टहास)

चित्रलेखा : कौन हो तुम?

केशि : जान लोगी। ठीक है, तुम्हारे संतोष के लिए बता ही दूँ। मैं हूँ -केशि दैत्य। सुना है यह नाम?

रम्भा : केशि दैत्य?-

केशि : (अट्टहास) तुमलोग स्वर्गलोक से आयी हो न? बहुत दिनों तक इन्द्र की सेवा की है तुमलोगों ने। अब मेरे शत्रु उस इन्द्र को भूल जाओ। आज से तुम सब मेरे दरबार में नृत्य करोगी। बोलो, स्वीकार है?

मेनका : नहीं-सौ बार नहीं।

केशि : (उर्वशी के निकट जाकर, उसकी चिबुक पकड़कर)-वाह! लगता है-यही उर्वशी है-अप्सराओं की रानी। क्यों उर्वशी, तुम चलोगी मेरे साथ?

उर्वशी : नहीं। नहीं।

केशि : तुम्हें तो मेरे साथ चलना ही पड़ेगा। इन्द्र ने मुझे देवासुर संग्राम में परास्त किया है। तुम्हारा हरण करके मैं उस पराजय का प्रतिशोध लूँगा। अप्सराओं की रानी मेरे महल में रहेगी। (अट्टहास)

(उर्वशी का हाथ पकड़कर आकाशमार्ग में उड़ जाता है। उर्वशी 'रक्षा करो' की रट लगाती है। केशि का अट्टहास गूँजता है। अप्सरायें रोती हैं। चिल्लाती हैं- 'मेरी सखी की रक्षा करो। रक्षा करो।')

दसवां दृश्य

(आकाशमार्ग से रथ पर महाराज पुरुरवा जा रहे हैं। अप्सराओं का करुण क्रन्दन वे सुनते हैं और अपने सारथी को कहते हैं-)

पुरुरवा : सारथी, रथ नीचे उतारो।

(रथ नीचे आता है। पुरुरवा अप्सराओं के पास जाते हैं।)

पुरुरवा : कौन हो तुमलोग?-रो क्यों रही हो?

रम्भा : मेरी सखी की रक्षा कीजिए राजन्। वह संकट में है।

पुरुरवा : कौन सखी ?- कैसा संकट?

चित्रलेखा : राजन्, हमलोग स्वर्गलोक की अप्सरायें हैं। यहाँ विहार करने के लिए आयी हैं। इस बीच केशि दैत्य यहाँ आ गया। उसने हमारी सखी का हरण कर लिया।

पुरुरवा : कौन है तुम्हारी वह सखी?

मेनका : उर्वशी-अप्सराओं की रानी।

पुरुरवा : केशि किधर गया है?

रम्भा : पूरब की तरफ।

पुरुरवा : (चित्रलेखा से)-तुम्हारा नाम?

चित्रलेखा : चित्रलेखा।

पुरुरवा : चित्रलेखा, तुम मेरे साथ रथ पर चलो। उर्वशी बेहोश हो गयी होगी। उसे होश में लाना तुम्हारा कर्तव्य होगा। डरो मत। चलो मेरे साथ। और तुमलोग यहाँ मेरी प्रतीक्षा करो।

(चित्रलेखा रथ पर बैठ जाती है। पुरुरवा भी बैठते हैं।)

सारथी, आकाशमार्ग से पूर्व दिशा की ओर चलो। शीघ्र।

(रथ आगे बढ़ता है)

ग्यारवां दृश्य

(केशि दैत्य उर्वशी को साथ लेकर आकाशमार्ग से भाग रहा है। पुरुरवा पीछा कर रहे हैं। निकट आने पर, मंत्र पढ़ कर बाण चलाते हैं। केशि दैत्य खड़ा हो जाता है।)

केशि : कौन है तू?

(एक हाथ से पर्वत के एक हिस्से पर खड़ा हो जाता है और दूसरे हाथ से एक वृक्ष उखाड़ कर पुरुरवा की ओर फेंकता है। पुरुरवा बाण चला कर वृक्ष को काट देते हैं। केशि आश्चर्य करता है।)

केशि : फिर पूछता हूँ, कौन है तू?

पुरुरवा : मैं हूँ प्रतिष्ठानपुर-नरेश पुरुरवा।

केशि : पुरुरवा? इन्द्र का मित्र और मेरा शत्रु?

पुरुरवा : तुम्हारी मौत।

(बाण केशि की छाती में लगता है। वह गिरता है।)

Scanned with OKEN Scanner

बारहवां दृश्य

(वही पर्वतखंड जहाँ उर्वशी की सखियाँ हैं। चिन्तित और दुखी भाव में सखियां। उर्वशी बेहोश पड़ी है। चित्रलेखा अपने वस्त्र के एक भाग से पंखा झल रही है। पुरुरवा भी चिन्तित भाव में खड़े हैं। दूरी पर रथ खड़ा है सारथी के साथ।)

पुरुरवा : लगता है, भय के मारे उर्वशी होश खो बैठी है।

(मेनका भीगे वस्त्र से उर्वशी का मुँह पोछती है।)

रम्भा : सखी उर्वशी, आँखे खोलो। भय को दूर करो।

मेनका : रम्भा ठीक कहती है। उर्वशी आँखें खोलो।

चित्रलेखा : उर्वशी, आँखें खोलो। तुम्हारे रक्षक सामने खड़े हैं।

(धीरे-धीरे उर्वशी आँखे खोलती है। इधर-उधर देखती है। आँखों में भय।)

उर्वशी : मैं कहां हूँ?

चित्रलेखा : हिमालय के इस पर्वतखंड पर। याद करो उर्वशी-हमलोग यहाँ विहार करने आयी थीं! इसी बीच----

उर्वशी : और-और वह भयानक दैत्य?

चित्रलेखा : वह मारा गया उर्वशी।

उर्वशी : मारा गया?-किसने मारा?

चित्रलेखा : सामने देखो। इन्हीं वीर पुरुष ने केशि दैत्य को मारा और तुम्हारी रक्षा की। इन्हें प्रणाम करो। यदि ये नहीं होते तो पता नहीं क्या होता?

(उर्वशी अपनी दृष्टि पुरुरवा पर डालती है। पुरुरवा मुस्कुराते हैं। उर्वशी उठ कर बैठती है और पुरुरवा को हाथ जोड़ कर प्रणाम करती है। पुरुरवा भी हाथ जोड़ते हैं। उर्वशी जैसे कुछ याद करती है।)

उर्वशी : आप--आप----

मेनका : राजन्, आप अपना परिचय मेरी सखी को देने की कृपा करें।

पुरुरवा : मैं प्रतिष्ठानपुर-नरेश पुरुरवा हूँ।

उर्वशी : (लज्जा से) महाराज पुरुरवा?-याद आया। विजयोत्सव में इन्द्रसभा में आपके दर्शन हुए थे।

अन्य सखियाँ : महाराज पुरुरवा, हम सबका प्रणाम स्वीकार करें। अशिष्टता के लिए हमें क्षमा करें महाराज।

पुरुरवा : नहीं, कोई अशिष्टता नहीं की आपलोगों ने। मैं उर्वशी की रक्षा कर सका-इसकी मुझे प्रसन्नता है।-लेकिन एक बात--

रम्भा : कैसी बात महाराज?

पुरुरवा : इस क्षेत्र के आसपास असुरों का आना जाना होता रहता है। इसलिए आपलोग सावधान रहें। हो सके तो अपनी सखी के साथ इस स्थान को तुरत छोड़ दें। केशि-दैत्य के मरण का हाल जब असुरों तक पहुँचेगा तो वे और भी उपद्रव करेंगे। देवराज इन्द्र को मेरा प्रणाम कहना न भूलियेगा।

चित्रलेखा : आपने सावधान करके हमसब का बड़ा उपकार किया है। हम देवराज से इस घटना का वर्णन अवश्य करेंगी।

मेनका : उर्वशी, अब चलो। महाराज कब तक तुम्हारी रक्षा करते रहेंगे?

(सभी लोग हँसती हैं। उर्वशी लज्जा का अनुभव करती है।)

पुरुरवा : आपलोगों के लिए यह संकट की घड़ी थी। लेकिन मेरे लिए तो यह अनायास प्रसन्नता का अवसर था।

चित्रलेखा : कैसे महाराज?

पुरुरवा : अप्सराओं की रानी उर्वशी से भेंट कैसे होती है?

(उर्वशी प्रेमभाव से पुरुरवा की ओर देखती है। अप्सरायें हँसती हुई चलने लगती हैं।-उर्वशी जानबूझ कर सबसे पीछे रह जाती है। उसके वस्त्र का एक भाग काँटे में फंस जाता है। वह जानबूझकर रुक जाती है और पुरुरवा की ओर देखती है। पुरुरवा आगे बढ़कर वस्त्र को काँटे से छुड़ा देते हैं। फिर उर्वशी का हाथ पकड़ना चाहते हैं। उर्वशी हाथ छुड़ाकार हँसती हुई भागती है।)

तेरहवां दृश्य

(स्वर्गपुरी में देवराज इन्द्र और उर्वशी बातें कर रहे हैं। इन्द्र टहल रहे हैं।)

इन्द्र : फिर क्या हुआ?

उर्वशी : देवराज से अनुमति लेकर हम अप्सरायें विहार के निमित्त हिमालय के एक मनोहारी पर्वतखंड पर गयीं। वहीं केशि-दैत्य ने मेरा अपहरण कर लिया।

इन्द्र : केशि दैत्य ने?-फिर क्या हुआ?

उर्वशी : उसी समय प्रतिष्ठानपुर नरेश पुरुरवा ने केशि दैत्य का पीछा किया। अपने बाण से उस असुर का वध कर दिया और मेरी रक्षा की।

इन्द्र : महाराज पुरुरवा मेरे मित्र हैं। मैं पहले से उनका आभारी था। इस बार तुम्हारी रक्षा करके उन्होंने मुझ पर ऐसी कृपा की है जिसका बदला मैं कभी नहीं चुका सकता।

Scanned with OKEN Scanner

उर्वशी : उन्होंने आपको प्रणाम कहा है देवराज!

इन्द्र : लगता है, अप्सराओं की रानी उनके प्रति आकृष्ट हैं। ठीक कहता हूँ न उर्वशी?–

(हंसने लगते हैं। उर्वशी की लज्जामयी मुस्कुराहट)

इन्द्र : उर्वशी, तुम भूली नहीं होगी कि मेरे अनुरोध पर, भरत मुनि ने, एक नया नाटक तैयार कराया है। तुम्हीं उस नाटक की नायिका हो। भरतमुनि उसका प्रदर्शन मेरी राजसभा में शीघ्र से शीघ्र करना चाहते हैं।

उर्वशी : मैं तैयार हूँ–देवराज। भरतमुनि ने मेरे अभ्यास में काफी परिश्रम किया है। मैं उन्हें निराश नहीं करूँगी।

इन्द्र : तुमसे मुझे ऐसी ही आशा है। भरतमुनि नाट्यशास्त्र के प्रथम आचार्य हैं। अपना सारा जीवन उन्होंने नाट्य–नृत्य और संगीत को समर्पित कर दिया है। उनके नाट्यशास्त्र का बड़ा महत्व है उर्वशी। मैं शीघ्र मुनि से बातें करके प्रदर्शन की तिथि निश्चित करूँगा। तुम्हारा अभ्यास जारी रहे।

उर्वशी : जो आज्ञा देवराज।

(हाथ जोड़ती है।)

चौदहवां दृश्य

(प्रतिष्ठानपुर का महल। पुरुरवा की रानी देवी पूजा कर रही है।)

देवी : कमला!

(कमला दौड़ती हुई आती है)

दासी : आज्ञा महारानी जी!

देवी : तू कहाँ चली जाती है?–

देवी : मैं तो यहीं हूँ महारानीजी।

देवी : महाराज अभी तक नहीं आये।

दासी : मैंने उनसे निवेदन कर दिया है महारानी जी। यह भी कह दिया है कि महारानी जी पूजा पर बैठ चुकी हैं।–आते ही होंगे।

(पुरुरवा आ जाते हैं। बाहर ही अपना राजसी जूता उतार देते हैं)

पुरुरवा : मैं आ गया। विलम्ब के लिए क्षमाप्रार्थी हूँ। **(पूजा के स्थान को प्रणाम करके रानी के पार्श्व में बैठ जाते हैं। रानी उन्हें चरणामृत देती है। पुरुरवा सिर झुकाकर चरणामृत का पान करते हैं।)**

पंद्रहवां दृश्य

(पुरुरवा के पिता बुध और माता इला बातें कर रहे हैं। मुखमण्डल पर चिन्ता के भाव)

इला : आपने कुछ नहीं देखा?

बुध : कुछ नहीं।

इला : विचित्र बात है!–आप पुरुरवा के पिता हैं और इतना भी नहीं जानते कि पुत्र किस चिन्ता में घुला जा रहा है।

बुध : कैसी चिन्ता इला?–मैं समझ नहीं पा रहा हूँ।

इला : देवी ने मुझे बताया है कि पुरुरवा लम्बी अवधि तक शान्तभाव से बैठा रहता है। फिर लम्बी सांस लेता है। पूछने पर कुछ बताता नहीं । देवी ने यह सब मुझ से कहा है।

बुध : इला, तुम चिन्ता मत करो। मैं पुरुरवा से बातें करूँगा।

सोलहवां दृश्य

(पुरुरवा और उनके पिता बुध। पुरुरवा चिन्तित।)

बुध : पुत्र! इधर कुछ दिनों से हम तुम्हें चिन्तित देख रहे हैं। तुम्हारी माँ इला इससे बहुत दुखी है। तुम्हारी चिन्ता का क्या कारण है?

पुरुरवा : पिताजी, ऐसा कोई कारण नहीं है। आप चिन्ता न करें।

बुध : पुत्र! कुछ बात अवश्य है जो तुम मुझसे छिपा रहे हो।

पुरुरवा : पिताजी! **(रुँधा स्वर)**

बुध : पुत्र, मुझ से भी नहीं कहोगे?

पुरुरवा : मुझे–मुझे क्षमा करें पिताजी! **(चले जाते हैं)**

बुध : पुरुरवा! पुरूरवा!–पुत्र।

(भावावेश में पीछे–पीछे जाते हैं)

सतरहवां दृश्य

(पुरुरवा अपने महल में सोये हैं। स्वप्न में आकाश से उतरती उर्वशी दिखलाई पड़ती है । पुरुरवा के स्थूल शरीर से एक और पुरुरवा निकलता है और आकाश मार्ग पर ऊपर बढ़ता है। आकाश में अनगिनत

Scanned with OKEN Scanner

तारे। सुखद संगीत। पुरुरवा और उर्वशी एक-दूसरे का आलिंगन करते हैं। उर्वशी आलिंगनपाश से छूट कर और ऊपर जाती है और लुप्त हो जाती है। पुरुरवा पागल की तरह इधर-उधर देखते हैं। पर उर्वशी नहीं मिलती।)

पुरुरवा : (नींद में चिल्लाकर) उर्वशी!-उर्वशी!

(दूसरे कमरे से घबरायी रानी देवी आती है)

देवी : स्वामी! स्वामी! (पंलग पर बैठ जाती है और पुरुरवा का हाथ अपने हाथ में लेती है। पुरुरवा विक्षिप्त। माथे पर पसीने की बूँदें)

देवी : क्या हुआ स्वामी?

पुरुरवा : कुछ नहीं।

देवी : कोई स्वप्न देखा था?

पुरुरवा : हाँ।

देवी : भयानक स्वप्न था?

पुरुरवा : नहीं।

(कुछ देर मौन)

अठारवां दृश्य

(दूसरे दिन। पुरुरवा चिन्तित हैं। रानी देवी पूजा करके आती है। पुरुरवा को तिलक लगाती है। फिर चरणस्पर्श करती है। उसके आँसू पुरुरवा के चरण पर गिरते हैं। वह रो रही है। पुरुरवा उसे उठाते हैं।)

पुरुरवा : रानी, तुम रो रही हो?

(देवी चुपचाप रहती है।)

पुरुरवा : काशीराज की कन्या हो तुम। तुम्हारा रोना अच्छा नहीं लगता देवी।-मेरी ओर देखो।-देखो मेरी ओर।

(देवी सिर उठाकर देखती है। पुरुरवा के नेत्रों में भी आँसू उमड़ते हैं।)

पुरुरवा : तुम्हारी यह मूक व्यथा मैं सहन नहीं कर सकता देवी।

(अपने वस्त्र से उसके आँसू पोछते हैं।)

(कुछ देर मौन)

देवी : स्वामी!-आप दुखी हैं, इसलिए मैं भी दुखी हूँ।

पुरुरवा : मैं दुखी नहीं हूँ रानी!

देवी : आप बराबर चिन्तित रहते हैं। गुमसुम बने रहते हैं। यदि मेरे प्राण देने से भी आपकी चिन्ता दूर हो जाये तो मैं प्राण त्याग कर सकती हूँ।

(रोने लगती है।)

पुरुरवा : (भावावेश) रानी!-तुम्हारे प्राण में तो मेरे प्राण बसते हैं। तुम्हारे प्राण त्याग से मुझे संसार की सबसे अधिक वेदना होगी।

(फिर मौन)

देवी : मैं आपसे कुछ पूछना चाहती हूँ। प्रतिज्ञा करें, आप सही-सही उत्तर देंगे।

पुरुरवा : सही-सही उत्तर दूँगा। पूछो!

(फिर मौन)

देवी : उर्वशी कौन है?कल रात नींद में आप बार-बार 'उर्वशी' 'उर्वशी' चिल्ला रहे थे। कौन है यह उर्वशी?

(पुरुरवा मौन-उधेड़बुन में)

देवी : उत्तर दीजिए स्वामी! उत्तर दीजिये।

पुरुरवा : उर्वशी। हाँ, उर्वशी-स्वर्गलोक की एक अप्सरा है।

उन्नीसवां दृश्य

(स्वर्गपुरी। इन्द्र की राजसभा। इन्द्र अपने आसन पर विराजमान हैं। आसपास देवगण और ऋषि-मुनि बैठे हैं। थोड़ा सा नृत्य चला ही था कि भरतमुनि अपने आसन से, क्रोध में, उठ खड़े होते हैं। सभा के बीच में नृत्यमुद्रा में लक्ष्मी की तरह सजी उर्वशी तथा अन्य अप्सरायें।)

भरत : (क्रोध में) बन्द करो यह नाट्य प्रदर्शन।

(सभी स्तब्ध रह जाते हैं।)

इन्द्र : (घबराकर) क्या हुआ मुनिवर?

भरत : उर्वशी ने मेरा अपमान किया है। नाट्यकला का अपमान किया है। मेरे सारे परिश्रम पर पानी फेर दिया है।

इन्द्र : नाटक तो ठीक चल रहा था मुनिवर।

भरत : तुम दृष्टिहीन हो इन्द्र। तुम्हें कुछ पता नहीं कि उर्वशी ने क्या किया?

इन्द्र : क्या किया?

भरत : मैं इस लक्ष्मी-स्वयंवर नाटक का लेखक हूँ। अनवरत साधना से मैंने इस नाटक को तैयार कराया। उर्वशी को लक्ष्मी की भूमिका देकर मैं सन्तुष्ट हुआ। लेकिन अभिनय के दौरान उसने मेरे मुँह पर ऐसा तमाचा मारा कि मेरा नाटक हास्यास्पद बन गया।

उर्वशी : (रोती हुई) मुनिवर! मुझ से भूल हुई। क्षमा करें।

भरत : भूल हुई?-क्षमा कर दूँ-ऐसी भंयकर भूल के लिए क्षमा कर दूँ?-मैं शाप--

उर्वशी : क्षमा! गुरुदेव!

भरत : आप सबलोग कलाप्रेमी हैं। इसलिए उर्वशी के सम्मान के आगे आप सबलोग

Scanned with OKEN Scanner

नतमस्तक हैं। उर्वशी को स्वयंवर के दौरान बोलना था-'पुरुषोत्तम' अर्थात् विष्णु। लेकिन इसने कह दिया-'पुरुरवा।'-ओह! अनर्थ हो गया। क्या पुरुरवा ही लक्ष्मी का वरण करेगा? बताइये, एक शब्द के गलत उच्चारण से ही नाटक समाप्त हो गया। अब आगे यह प्रदर्शन नहीं होगा। मैं उर्वशी को क्षमा नहीं कर सकता। मेरा शाप है-

उर्वशी : क्षमा करें मुनिवर । अनजाने में यह भूल हुई।

भरत : **(कमण्डल से जल निकाल कर छिड़कते हुए)** उर्वशी!- मेरा शाप है कि जिस राजा पुरुरवा का ध्यान कर रही थी, उसको पाने के लिए तू मनुष्य लोक में चली जा। स्वर्गलोक से जो सम्मान तुझे मिला है, वह समाप्त हो जाये। तू उसी पुरुरवा की पत्नी बनेगी। तेरी स्थिति स्वर्ग की अप्सरा की नहीं होगी, बल्कि एक सामान्य मनुष्य की पत्नी की होगी।

(शाप के साथ ही बिजली की कड़क। भरत आवेश में चले जाते हैं। उर्वशी रोती रहती है।)

उर्वशी : देवराज! मुझे भरतमुनि के शाप से विमुक्त कीजिये। मैं स्वर्गलोक छोड़कर कहीं जाना नहीं चाहती।

इन्द्र : भरतमुनि का शाप सच होकर रहेगा उर्वशी। मैं उसे दूर नहीं कर सकता। उसमें संशोधन कर सकता हूँ।

उर्वशी : वह क्या देवराज?

इन्द्र : तुम्हारे जाने से स्वर्गलोक की शोभा समाप्त हो जायेगी। मैं यह भी नहीं चाहता। मैं जानता हूँ कि तुम गुप्तरूप से महाराज पुरुरवा से प्रेम करती हो। पुरुरवा भी तुम्हें चाहते हैं। वे मेरे मित्र हैं। इसलिए तुम मनुष्यलोक में जाओ। मेरे मित्र को प्रसन्न रखो। जिस दिन तुमसे उत्पन्न पुत्र के मुख को पुरुरवा देख लेंगे, उसी दिन तुम्हारे शाप की अवधि समाप्त हो जायेगी। तुम स्वर्गलोक लौट आओगी, अब यह तुम्हारी इच्छा पर निर्भर करता है कि कब तुम्हारे पुत्र का मुख पुरुरवा देखेंगे।-तुम्हें चुनना होगा पति या पुत्र!-

(उर्वशी रोती रहती है)

बीसवां दृश्य

(महाराज पुरुरवा का महल। चिन्तित पुरुरवा टहल रहे हैं। सामने एक दूसरे पुरुरवा नजर आते हैं। मन का अन्तर्द्वन्द्व।)

पुरुरवा2 : **(हँसते हुए)** क्यों महाराज पुरुरवा? उस रमणी में क्या है कि आप अपने कर्तव्य को भूल रहे हैं?

पुरुरवा1 : तुम कौन हो?

पुरुरवा2 : मैं वही हूँ जो आप हैं भी और नहीं भी।

पुरुरवा1 : क्या मतलब?

पुरुरवा2 : मैं आपका मन हूँ, आत्मा हूँ, छाया हूँ।

पुरुरवा1 : क्या चाहते हो?

पुरुरवा2 : मैं आपको सावधान करने आया हूँ। कहने आया हूँ कि आप मानव हैं और जिसकी याद में आप सब कुछ भूल बैठे हैं वह अप्सरा है, मानव नहीं है। आपका यह प्रणय दुखदायी होगा।

पुरुरवा1 : मुझे इस बात की चिन्ता नहीं है कि यह प्रणय दुखदायी होगा या सुखदायी।-मैं तो यही जानता हूँ कि उस अप्सरा ने मेरे शरीर पर, मन-प्राण पर, अधिकार कर लिया है।

पुरुरवा2 : आप विवेक से काम लें तो उससे छुटकारा पा सकते हैं।

पुरुरवा1 : यह असम्भव है।

पुरुरवा2 : राजन्, भूलिये मत कि आपकी पत्नी जिसका नाम देवी है, वह आपके इस नये प्रेम से कितनी दुखी होगी। उसने आपको ही सब कुछ माना है। प्रतिष्ठानपुर का इतना बड़ा राज्य आपसे बहुत कुछ अपेक्षा करता है। क्या आपने अपनी प्रजा के बारे में भी सोचा है?-आपकी वर्तमान उदासीनता आपके राज्य के लिए कलंक है।

पुरुरवा1 : **(क्रोध में)** चुप रहो। मैं राजा हूँ। प्रजा को मेरी इच्छा के अनुसार चलना होगा। मेरे प्रेम में, मेरे विलास में, मेरी इच्छापूर्ति में बाधा डालने का अधिकार किसी को नहीं है। तुम्हें भी नहीं है।

पुरुरवा2 : क्या यह आपका अन्तिम निर्णय है?

पुरुरवा1 : हाँ, हाँ, अन्तिम निर्णय है। अब तुम जाओ।

(पुरुरवा 2 लुप्त)

इक्कीसवां दृश्य

(आकाशपथ से उड़ती हुई उर्वशी और चित्रलेखा आती हैं।)

चित्रलेखा : उर्वशी, देवराज इन्द्र ने, अपने रथ पर, तुम्हें महाराज पुरुरवा के राज्य की सीमा तक पहुँचा दिया। मैं तुम्हें यहाँ तक ले आयी।-अब आगे जहाँ जाना है, जाओ।

उर्वशी : चित्रलेखा, तुमने मेरा साथ, मर्त्यलोक में, यहाँ तक दिया। मैं तुम्हें नहीं छोड़ सकती। जब तक महाराज से मेरी भेंट न हो जाये और मैं उन्हें अपने प्रेम बन्धन में बाँध न लूँ, तब तक तुम नहीं जा सकतीं। यह मेरा अनुरोध है सखी!

Scanned with OKEN Scanner

चित्रलेखा : (हँसती हुई) तुम चाहती हो कि मैं तुम्हारी प्रेमलीला देखने के लिए रुकी रहूँ?

उर्वशी : तुमने ठीक समझा चित्रलेखा।

चित्रलेखा : तुम तो महाराज की बाँहों में बँधी रहोगी। मैं क्या करूँगी?

उर्वशी : तुम्हारे योग्य एक प्रेमी मैं ढूँढ़ दूँगी। तुम भी उसकी बाँहों में झूलोगी।
(दोनों हँसती हैं)

बाईसवां दृश्य

(राजमहल। महाराज पुरुरवा बैठे हैं। मंत्री आकर प्रणाम करते हैं।)

मंत्री : महाराज की जय!

पुरुरवा : क्या समाचार है मंत्री जी?

मंत्री : द्वार पर दो महिलायें आपके दर्शनार्थ खड़ी हैं।

पुरुरवा : मेरे दर्शनार्थ? कौन हैं वे दोनों?

मंत्री : एक का नाम उर्वशी है, दूसरी का नाम चित्रलेखा है।

पुरुरवा : (खड़े होकर-प्रसन्नभाव) कहाँ से आयी हैं?

मंत्री : स्वर्गलोक से।

पुरुरवा : मैं समझ गया। उन्हें अतिथिशाला में ठहराइये। उन्हें किसी तरह की तकलीफ न हो। वे दोनों स्वर्गलोक की अप्सरायें होंगी-ऐसा मेरा अनुमान है।

मंत्री : अप्सरायें? वे क्यों आयेंगी इस मनुष्यलोक में?

पुरुरवा : वे कहीं भी जा सकती हैं। उनमे दैवी शक्ति होती है।

मंत्री : आप उन्हें दर्शन कब देंगे?

पुरुरवा : आज नहीं। कल या परसों।

तेईसवां दृश्य

(महल के एक कक्ष में रानी देवी महाराज पुरुरवा को सोमरस का पान करा रही है। पुरुरवा पलंग पर आधा लेटे हैं। पात्र उसके हाथ में देते हैं। फिर देवी को अपनी ओर खींचते हैं। द्वार पर कुछ शब्द।)

देवी : द्वार पर कोई है। छोड़िये भी।
(द्वार खुलता है। राजमाता इला अन्दर आती हैं। देवी लज्जावश बाहर चली जाती है। पुरुरवा पलंग से उतर कर माँ को प्रणाम करते हैं।)

इला : बेटे पुरु, आज अतिथिशाला में दो स्त्रियां आकर ठहरी हैं। वे दोनों कौन हैं?

पुरुरवा : स्वर्ग से दो अप्सरायें भेंट करने आयी हैं।

इला : क्या नाम है उनका?

पुरुरवा : (कुछ छिपाते हुए)- मुझे पता नहीं।

इला : लेकिन मुझे पता है। उनमें एक है उर्वशी और दूसरी है चित्रलेखा। हमारे घर में इनका आना शुभ नहीं जान पड़ता।

पुरुरवा : क्यों माँ?

इला : इन्द्र स्वभाव से ही कपटी है। वह किसीका उत्कर्ष नहीं देख सकता। ये अप्सरायें इन्द्र के अस्त्र-शस्त्र हैं। जिन्हें वह परास्त नहीं कर सकता, उन पर वह इन्हीं का प्रयोग करता है। सफल होना ही है। पता नहीं, अब तक कितने ऋषि-मुनियों के तप इन अप्सराओं ने भंग किये। इनके हावभाव में कामदेव और रति की शक्ति है। लगता है, इन्द्र को तुमसे ईर्ष्या है। इसलिए...

पुरुरवा : नहीं माँ, ईर्ष्या क्यों होगी? देवासुर संग्राम में मेरे ही कारण उन्हें विजयश्री मिली थी। वे तो मेरे आभारी हैं।

इला : मैं देवलोक में रह चुकी हूँ। इन्द्र को अच्छी तरह जानती हूँ। उसका अत्यधिक प्रेम तुम्हारे संकट का कारण हो सकता है। वैसे भी सुन्दर नारियां यदि अकारण प्रेम प्रदर्शित करें तो अनिष्ट की आशंका करनी चाहिए। तुम पहले उनके मन की थाह ले लो, तब भेंट करो।

पुरुरवा : यही करूँगा माँ। तुम चिन्ता न करो।

चौबीसवां दृश्य

(अतिथिशाला। भिन्न-भिन्न रंग के फूलों का उद्यान। उर्वशी श्रृंगार कर रही है। चित्रलेखा उसे सजा रही है। वक्ष पर फूलों की सजावट। सिर पर फूलों का मुकुट। हाथों पर भी फूलों की सजावट। गले में स्वर्ण की माला। पृष्ठभूमि में सुखद संगीत।)

चित्रलेखा : उर्वशी, यदि तुम्हारे इस रूप को कामदेव भी देख लें तो अपने को भूल जायें। उनकी पत्नी रति तो पहली दृष्टि में तुम्हारे चरणों में झुक जायें।

उर्वशी : (हास्य) सजाने की कला तो कोई तुमसे सीखे। लेकिन तुम्हारी असली परीक्षा तो अब होनेवाली है चित्रलेखा।

चित्रलेखा : कैसी परीक्षा?

उर्वशी : आज अपनी राजसभा में नृत्य करने के लिए महाराज पुरुरवा ने आदेश भिजवाया है। वहीं मेरे रूप को लोग देखेंगे।

चित्रलेखा : रूप ही नहीं, तुम्हारी कला को भी लोग देखेंगे।

उर्वशी : तुम क्या समझती हो?

Scanned with OKEN Scanner

चित्रलेखा : उर्वशी की सदा विजय होती रही है। आज भी उसे विजयश्री मिलेगी-यह निश्चित है।

(पुरुरवा के वृद्ध मंत्री आते हैं।)

मंत्री : आने के लिए मुझे क्षमा करें। राजसभा में सभी लोग आपकी प्रतीक्षा कर रहे हैं। चलने की कृपा करें।

उर्वशी : मैं तैयार हूँ मंत्री जी। चित्रलेखा, तुम भी चलो।

(सभी लोग प्रस्थान करते हैं।)

पच्चीसवां दृश्य

(प्रतिष्ठानपुर की राजसभा। सभी लोग यथास्थान बैठे हैं। राजसीवस्त्र। पहरे पर सैनिकगण। सभामंडप विशेष रूप से सजाया गया है। सिंहासन खाली है। मंत्री, आदर के साथ, उर्वशी और चित्रलेखा के साथ आते हैं। चित्रलेखा सुन्दर परिधान में है। उनके आते ही सभी लोग खड़े होकर उनका स्वागत करते हैं और ध्यानपूर्वक दोनों सुन्दरियों को देखते हैं। मंत्री दोनों को बैठाते हैं और फिर सिंहासन के पास के आसन पर स्वयं बैठते हैं।)

प्रहरी : प्रतिष्ठानपुर-नरेश, महाबली, देवताओं के परम मित्र, असुरों के शत्रु, आर्य बुध और देवी इला के सुपुत्र, महाराज पुरुरवा राजसभा में पधार रहे हैं-सावधान! सावधान!-

(खामोशी। महाराज पुरुरवा का प्रवेश। सिर पर राजमुकुट। दो दासियां पीछे-पीछे। उनके हाथ में चँवर। पुरुरवा के आते ही सब लोग खड़े हो जाते हैं और सिर झुकाते हैं। पुरुरवा सिंहासन पर बैठते हैं। मंत्री खड़े होकर हाथ जोड़ते हैं।)

मंत्री : महाराज के आदेशानुसार स्वर्गलोक की दोनों सुन्दरियां दर्शनार्थ यहां उपस्थित हैं। ये हैं अप्सराओं की रानी उर्वशी और उनके साथ ये हैं उनकी सखी चित्रलेखा।

(दोनों आगे बढ़कर पुरुरवा का अभिवादन करती हैं। फिर अपने-अपने स्थान पर बैठ जाती हैं।)

पुरुरवा : स्वर्गलोक से आयी हुई दोनों अप्सराओं का मैं प्रतिष्ठानपुर की इस राजसभा में स्वागत करता हूँ। कला की प्रतीक आप दोनों को मुझ से भेंट करने के लिए कुछ दिनों की प्रतीक्षा करनी पड़ी। इसके लिए मुझे खेद है। स्वर्ग का सुख तो मानवलोक में मिलना कठिन है। फिर भी मैंने आदेश दिया था कि अतिथिशाला में आपकी सुख-सुविधा का पूरा प्रबन्ध किया जाये। क्यों मंत्री जी?

मंत्री : महाराज की आज्ञा का पालन हो रहा है।

पुरुरवा : यह मैं अप्सराओं की रानी उर्वशी के मुख से सुनना चाहता हूँ।

उर्वशी : महाराज, मंत्रीजी ने जो कुछ कहा है, वह सत्य है। इस नई जगह पर आकर भी मुझे लगा कि मैं स्वर्गपुरी में ही हूँ। अतिथिशाला में हमें हर तरह की सुविधा उपलब्ध है।

पुरुरवा : उत्तम!-आज इस सभा में आपके नृत्य का आयोजन किया गया है-वह इसलिए कि एक साथ यहाँ के लोग आपके लावण्यमय रूप के साथ-साथ आपकी कला को भी देख सकें। इस कार्यक्रम के बाद आपसे विस्तार से बातें होंगी।

(उर्वशी मुस्कुराती है)

पुरुरवा : मेरा निवेदन है कि, बिना किसी औपचारिकता के, अप्सराओं की रानी उर्वशी, अपनी कला का प्रदर्शन करें।

(उर्वशी सामने आकर प्रणाम करती है। फिर नृत्य प्रारम्भ होता है। धीरे- धीरे द्रुत लय में आती है। पुरुरवा तथा अन्य लोगों की उत्सुकता। चित्रलेखा गायन करती है। एक-एक कर सबके चेहरे पर कैमरा। उर्वशी के पदताल पर कैमरा। नृत्य के बाद वह पुरुरवा तथा सभासदों को प्रणाम करती है। तालियों की गड़गड़ाहट। उर्वशी के चेहरे पर स्वेद बूँदें। चित्रलेखा अपने आँचल से उसके स्वेद को पोंछती है। पुरुरवा प्रसन्न।)

छब्बीसवां दृश्य

(उद्यान का एक भाग। महाराज पुरुरवा और उर्वशी उसी तरह आकर्षक और उत्तेजक आवरण में। पुरुरवा के नयनों में प्यास। उर्वशी लज्जा के भार से दबी हुई।)

पुरुरवा : उर्वशी, लगता है-मैं तुम्हारे प्रेम में सब कुछ भूल रहा हूँ।

उर्वशी : यह कैसी बात है महाराज? मैं तो एक अतिथि बन कर आई हूँ। कुछ दिनों के बाद लौट जाऊँगी।

पुरुरवा : ऐसा नहीं हो सकता उर्वशी। मैंने तुम्हें स्वर्गपुरी में देखा था। फिर दोबारा देखा तब, जब केशि दैत्य ने तुम्हारा अपहरण किया था। मैं तुम्हारी उस छवि को भूल नहीं पाया हूँ। तुमने जब मेरी राजसभा में नृत्य का प्रदर्शन किया तो मेरे मन का वह घाव हरा हो गया। अब तो तुम यहाँ से लौटने का नाम मत लो।

उर्वशी : आपका यह प्रेम नदी की वह धारा है जो गर्मी के दिनों में सूख जाती है। पुरुष का मैं विश्वास नहीं करती। जितनी जल्दी उसका प्रेम आगे बढ़ता है, समय के साथ उतनी ही जल्दी वह पीछे भी हटता है।

पुरुरवा : मैं पुरुरवा हूँ उर्वशी। मेरा प्रेम सागर की तरह विशाल है। उर्वशी, मुझे निराश मत करो।

Scanned with OKEN Scanner

उर्वशी : (हँसते हुई) मैं वायु हूँ राजन्। मेरी गति को किसी ने रोका नहीं है। कदाचित् आप नहीं जानते कि मैं उम्र में आपसे बड़ी हूँ।

पुरुरवा : आश्चर्य!-यह क्या कहती हो उर्वशी?-तुम मुझे हतोत्साह करने का प्रयत्न कर रही हो।

उर्वशी : (हँसती हुई) चिरयौवना हूँ मैं। क्या आप विश्वास करेंगे कि मेरा बीस साल का एक पुत्र भी है?

पुरुरवा : (आश्चर्य) बीस साल का पुत्र?-कौन है वह?

उर्वशी : वसिष्ठ। मैं उसे राजा बनाना चाहती थी। लेकिन उसे ऋषि का जीवन पसन्द आया। वह तपस्या करने लगा। फिर राजा दिवोदास का पुरोहित बन गया।

पुरुरवा : तुम्हारी उम्र क्या होगी?

उर्वशी : सुन्दर नारी की उम्र नहीं पूछा करते राजन्। मेरा शरीर ही मेरी उम्र का प्रमाण है। वैसे उम्र मेरे अधीन है। जो आप आज देख रहे हैं, वही बीस वर्ष बाद भी देखेंगे।

पुरुरवा : एक प्रश्न का उत्तर दे सकोगी?

उर्वशी : पूछिये महाराज।

पुरुरवा : वसिष्ठ के पिता कौन थे?

(उर्वशी अट्टहास करती है)

पुरुरवा : तुम हँस रही हो? उत्तर दो।

उर्वशी : क्या उत्तर दूँ? किसका नाम बताऊँ?

पुरुरवा : वसिष्ठ के पिता का।

उर्वशी : उसके पिता एक नहीं, दो थे। मित्र और वरुण। दोनों से मुझे एक साथ प्रेम हुआ! वसिष्ठ के जन्म के बाद दोनों ने उसे पिता का स्नेह दिया। मित्र और वरुण-दोनों ही उस पर पिता का अधिकार जताते थे। दोनों झगड़ पड़े। मुझे अच्छा नहीं लगा। मैं वसिष्ठ को लेकर उनदोनों से अलग हो गयी।

पुरुरवा : यह तो तुमने अच्छा नहीं किया उर्वशी।

उर्वशी : अच्छा नहीं किया? क्या उन दोनों को युद्ध करने देती? वसिष्ठ को मैंने जन्म दिया था। उसके पालन-पोषण का उत्तरदायित्व मुझ पर था, न कि उन दम्भी पिताओं पर।

पुरुरवा : एक प्रश्न और।

उर्वशी : वह भी पूछ लीजिए महाराज। अपनी जिज्ञासा को अच्छी तरह शान्त कर लीजिए।

पुरुरवा : तुम्हारे इस चिर यौवन का रहस्य क्या है?

उर्वशी : मेरा जन्म नारायण ऋषि के उरु से हुआ था। इसीलिए मेरा नाम उर्वशी पड़ा। आश्रम की एक तपस्विनी ने मेरा पालन-पोषण किया। उसके कहे अनुसार मैं आहार में केवल गोघृत लेती हूँ। साथ में जड़ी-बूटियाँ भी। मेरे अक्षय यौवन का मूल कारण यही है।

पुरुरवा : तुम मनुष्यलोक में आयी हो। यहाँ तो अन्न, माँस सबकुछ ग्रहण करना होगा। यहाँ का आहार यही है।

उर्वशी : आप चिन्ता न करें। मेरा आहार यहाँ क्या होगा-इसकी व्यवस्था मैंने कर ली है।

पुरुरवा : तुमने जो कहा है उर्वशी, मैंने सुन लिया। अब मेरा निवेदन स्वीकार करो।

उर्वशी : निवेदन?-

पुरुरवा : हाँ, मैं तुम्हें रानी का सम्मान दूँगा। तुम्हारी सन्तुष्टि के लिए मैं सब कुछ करूँगा। मेरी प्राणेश्वरी बनने की सहमति दो।

उर्वशी : (हँसकर)-स्वीकार है राजन्-स्वीकार है। लेकिन इसे याद रखें कि उर्वशी वायु है-वायु।-**(दोनों का आलिंगन। तालाब में कमल की कली का खुलना। सुखद संगीत।)**

सत्ताईसवां दृश्य

(रानी देवी मन्दिर में पूजा कर रही है। पुरुरवा पीछे से आते हैं और पूजा की समाप्ति की प्रतीक्षा करते हैं। रानी पूजा समाप्त कर पीछे देखती है। पुरुरवा नजर नीची किये दिखायी पड़ते हैं। दासी कमला पूजा का पात्र लेती है। रानी, पुरुरवा को तिलक लगाती है। फिर दुखी भाव से आगे बढ़ जाती है। पुरुरवा रानी को रोक लेते हैं।)

पुरुरवा : क्या मुझे क्षमा नहीं करोगी देवी?

(देवी कुछ उत्तर नहीं देती है।)

पुरुरवा : तुम्हारा यह मौन मुझे डँस रहा है रानी।

(देवी निरुत्तर। आंसू पोंछ लेती है।)

पुरुरवा : कल मैं गन्धमादन पर्वत पर जा रहा हूँ। उर्वशी भी जा रही है। तुमसे अनुमति माँगने आया हूँ।

(देवी आँसू पोंछती है। निरुत्तर, चली जाती है। पुरुरवा उसकी ओर देखते रहते हैं। फिर लम्बी साँस लेते हैं। कमला, रानी के पीछे-पीछे जाती है।)

Scanned with OKEN Scanner

अट्ठाईसवां दृश्य

(उर्वशी का नृत्य हो रहा। पुरुरवा अतृप्त नेत्रों से उसे देख रहे हैं। फिर खड़े होकर उर्वशी की ओर बढ़ते हैं और उसे आलिंगन-पाश में बाँध लेते हैं।)
(समय का अन्तराल)

उन्तीसवां दृश्य

(महल का एक भाग)
(बुध, इला और रानी देवी। देवी रो रही है।)

इला : बेटी, सुख और दुख तो सगी बहनें हैं। तुम यही मानकर चलो। पुरु को शीघ्र होश आयेगा-इसे तुम सच मानो।

बुध : इला, मैं बेटी देवी की दुर्दशा अब और नहीं देख सकता। मैं उर्वशी के चरित्र को जानता हूँ। उसने मेरे पुत्र को अपने मोहजाल में फँस लिया है। शाप देने की क्षमता अभी मुझ में शेष है। मैं उर्वशी को भस्म कर दूँगा। इसे सच मानो।

देवी : (रोती हुई) नहीं, नहीं पिताजी, इतना क्रोध मत कीजिए। उर्वशी के भस्म हो जाने पर आपके पुत्र की क्या दशा होगी-इस पर भी विचार कीजिये।

इला : देवी सच कहती है स्वामी। इतना क्रोध न कीजिये।

तीसवां दृश्य

(गन्धमादन पर्वत। सभी ओर मुस्कुराते पुष्प। प्रपात से जल प्रवाहित हो रहा है। दूर में पर्वतखंड पर हिमपात। एक शिलाखंड पर पुरुरवा और उर्वशी। पुरुरवा के वक्ष से सटा उर्वशी का मस्तक। कुछ देर बाद।)

पुरुरवा : उर्वशी, यह गन्धमादन पर्वत है-नर-नारायण का निवास। यह जम्बू द्वीप का मुकुट है- तुषारमुकुट। यह वह स्थान है जहाँ देवगण निवास करते हैं। यहीं भगवान विष्णु ने तप किया था।

उर्वशी : महाराज एक बात तो कहना भूल ही गये।

पुरुरवा : वो क्या?

उर्वशी : इसी पुण्यभूमि में नारायण के उरु से मेरा जन्म हुआ था। यहीं मैंने बरसों पहले प्रथम बार संसार का प्रकाश देखा था। यहीं एक तपस्विनी ने मुझे माँ का स्नेह दिया था। यह तो मेरी जन्मभूमि है प्रतिष्ठानपुर-नरेश। इसलिए मुझे अत्यन्त प्रिय है।

पुरुरवा : उर्वशी, तुम्हारे साथ रहने से मुझे मालूम हुआ कि सौन्दर्य, प्रेम और आकर्षण जीवन के सनातन सत्य हैं।

उर्वशी : एक और सनातन सत्य है महाराज।

पुरुरवा : वो क्या?

उर्वशी : मृत्यु। सदा के लिए वियोग।

पुरुरवा : नहीं, नहीं, ऐसा मत कहो प्राणेश्वरी। मैं इतने सुख में हूँ कि मृत्यु की कल्पना भी नहीं कर सकता।

उर्वशी : मृत्यु सनातन सत्य है प्राणेश्वर। आप तो मनुष्यलोक के प्राणी हैं-वहाँ तो हर जीव मरणशील है।

पुरुरवा : (चिल्लाकर)-नहीं, मैं मरना नहीं चाहता। मरना नहीं चाहता।
(उर्वशी का अट्टहास)

इकतीसवां दृश्य

(गन्धमादन पर्वत! वही दृश्य। प्रसन्न मुद्रा में पुरुरवा। उर्वशी का उत्तेजक नृत्य। पुरुरवा, उर्वशी को पकड़ना चाहते हैं। उर्वशी लुप्त। पुरुरवा परेशान। फिर उर्वशी प्रकट होकर नृत्य करती है। फिर लुप्त। ऐसा कई बार होता है।)

बत्तीसवां दृश्य

(च्यवन ऋषि का आश्रम। ऋषि पत्नी सुकन्या आँखों पर पट्टी बाँधे दस वर्ष के बच्चे 'आयु' के पीछे-पीछे दौड़ रही है। आयु हँसता हुआ भागता चलता है।)

सुकन्या : अरे, कहाँ छिप गया बेटे?

आयु : (हँसते हुए) मैं यहाँ हूँ माँ। (फिर भागता है।)
(सुकन्या परेशान। ऐसा कई बार होता है।)

सुकन्या : मैं थक गयी रे। अब मिल भी जा।
(आयु मुस्कुराते हुए, धीरे-धीरे आकर, सुकन्या के सामने खड़ा हो जाता)

आयु : मैं तुम्हारे सामने खड़ा हूँ माँ।
(सुकन्या उसे पकड़ लेती है। आयु पट्टी खोलता है। सुकन्या उसे गोद में लेकर चूमती है)

Scanned with OKEN Scanner

तैंतीसवां दृश्य

(उसी आश्रम का दूसरा भाग। आकाश मार्ग से उड़ती हुई चित्रलेखा आती है। इधर-उधर देखती है।)

सुकन्या : कौन?

चित्रलेखा : मैं हूँ चित्रलेखा।

सुकन्या : चित्रलेखा? बहुत दिनों पर आयी हो।

चित्रलेखा : हाँ, माँ, बहुत दिन हो गये। तुम जानती हो कि उर्वशी की अनुपस्थिति के कारण स्वर्गलोक सूना हो गया है। देवराज इन्द्र बराबर उर्वशी की याद करते हैं। माँ, एक बात पूछूँ?

सुकन्या : हाँ, हाँ अवश्य पूछ।

चित्रलेखा : मेरा बेटा कैसा है?

सुकन्या : तुम्हारा बेटा या उर्वशी का बेटा?

(चित्रलेखा हँसती है। सुकन्या भी साथ देती है।)

चित्रलेखा : एक ही बात है माँ! तुम्हारे आश्रम में तो उस बच्चे को मैं ही लायी थी। उर्वशी तो उस बच्चे को जन्म देकर फुर्सत पा गयी। उसकी विलासलीला तो बरोकटोक चल रही है।

सुकन्या : कैसी माँ है वह?–अपने बेटे को देखने तक नहीं आयी। अपने विलास में बेटे को भी भूल गयी।

चित्रलेखा : माँ, तुम तो सब कुछ जानती हो। यदि उर्वशी अपने पुत्र का मुँह देख लेती है तो महाराजा पुरुवा से यह रहस्य छिपा नहीं रहेगा। वैसी दशा में उर्वशी को चुनना पड़ेगा–पति या पुत्र–इसी दुश्चिन्ता में उर्वशी पड़ी है।

सुकन्या : मैं उर्वशी की इस चिन्ता से अवगत हूँ चित्रलेखा। लेकिन यह बालक इस आश्रम में कब तक रहेगा? वैसे मेरे पति–स्वयं च्यवनऋषि– उस बालक को हर तरह की शिक्षा दे रहे हैं। युद्ध और अन्य कलाओं में उसकी अद्भुत क्षमता है।

(दौड़ते हुए आयु आता है। उसके हाथ में धनुषबाण है। वह चित्रलेखा को आश्चर्य से देखता है। चित्रलेखा उसे ममता से देखती है और गोद में लेती है।)

चित्रलेखा : मैं तुम्हारी माँ हूँ बेटे।

(आयु पहले चित्रलेखा की ओर देखता है। फिर सुकन्या की ओर मानो जानना चाहता है कि सुकन्या कौन है। सुकन्या और चित्रलेखा उसके भाव को देखकर हँसती हैं। आयु झेंप जाता है।)

चौतीसवां दृश्य

(महल। उर्वशी और चित्रलेखा)

उर्वशी : चित्रलेखा, तुम च्यवन ऋषि के आश्रम से आ रही हो। बतला न, कैसा है मेरा बेटा?

(चित्रलेखा हँसती है)

उर्वशी : तुम हँस रही हो! बताओ न, कैसा है मेरा बेटा?

चित्रलेखा : यदि बेटे का इतना मोह है तो वहाँ जाकर उसे देख क्यों नहीं लेती?

(उर्वशी सांस लेकर उदास)

उर्वशी : तुम कारण जानती हो चित्रलेखा। लगता है, पति से मेरा वियोग शीघ्र होनेवाला है। मैं वैसी स्थिति में महाराज पुरुवा को लेकर चिन्तित हूँ।

चित्रलेखा : लेकिन उर्वशी, यह तो होना ही है। भरतमुनि का शाप काटना है।

(उस अंश का फ्लैशबैक जिसमें भरतमुनि ने शाप दिया था।)

चित्रलेखा : यह तो देवराज इन्द्र की कृपा थी कि उन्होंने उस शाप में संशोधन किया था।

(उस अंश का फ्लैशबैक जिसमें इन्द्र ने शाप का संशोधन किया)

(उर्वशी रोने लगती है। चित्रलेखा उसे सम्भालती है।)

पैंतीसवां दृश्य

(प्रतिष्ठानपुर की राजसभा। महाराज पुरुवा, उर्वशी, रानी देवी, मंत्री, सेनापति आदि उपस्थित हैं। नर्त्तकी नृत्य कर रही है। नृत्य समाप्त होता है। प्रहरी आकर प्रणाम करता है।)

प्रहरी : महाराज की जय हो!–द्वार पर तापसी सुकन्या एक ऋषि कुमार के साथ खड़ी है।

(सभी स्तम्भित। उर्वशी की आँखों में भय।)

पुरुवा : तापसी सुकन्या?–महर्षि च्यवन की धर्म पत्नी? क्या कारण हो सकता है?

देवी : ऋषि पत्नी की आगवानी के लिए मैं जाती हूँ।

पुरुवा : हाँ रानी, ऋषि पत्नी को आदर के साथ ले आओ।

**(सिर झुकाकर, देवी जाती है और फिर सुकन्या और आयु के साथ वापस लौटती है। आयु अब सोलह वर्ष का सुन्दर नवयुवक है। वेशभूषा ऋषि कुमार की तरह। पुरुवा सिंहासन से नीचे उतर कर सुकन्या

Scanned with OKEN Scanner

को प्रणाम करते हैं। उर्वशी तथा अन्य लोग भी सिर झुका कर सुकन्या के प्रति सम्मान प्रकट करते हैं। आयु महाराज और उर्वशी के चरण स्पर्श करता है। उर्वशी उदास है। उसके नेत्रों में नीर।)

पुरुरवा : महर्षि च्यवन की धर्मपत्नी सुकन्या आज दर्शन देने स्वयं आयी हैं।-मैं किन शब्दों में अपनी कृतज्ञता प्रकट करूँ? मुझे आदेश मिलता तो स्वयं आपके आश्रम में जाकर दर्शन कर कृतार्थ होता।

सुकन्या : महाराज, मैं स्वयं आकर आपको कुछ देना चाहती थी। इसलिए यहाँ आने का लोभ संवरण नहीं कर सकी। महर्षि च्यवन का भी ऐसा ही आदेश था।

(बीच-बीच में उर्वशी के मुख पर कैमरा। वह रो रही है।)

पुरुरवा : तापसी सुकन्या मुझे जो भी देंगी वह मेरा सौभाग्य होगा, सबसे मूल्यवान निधि होगी।

सुकन्या : महाराज ने सत्य कहा है। वह सबसे मूल्यवान निधि है।

(सभी प्रश्नसूचक मुद्रा बनाते हैं। एक-एक चेहरे पर कैमरा।)

पुरुरवा : (उत्सुकता से) कौन सी-कौन सी है वह निधि माँ?

सुकन्या : आपका पुत्र जो मेरे साथ आया है। आयु है इसका नाम।

पुरुरवा : लेकिन इसकी जननी?

सुकन्या : उर्वशी है इसकी जननी। पुत्र आयु, अपने पिता और माता के आशीर्वाद प्राप्त करो।

(आयु दोनों के चरण छूता है। पुरुरवा उसे छाती से लगा लेते हैं उर्वशी भी अपने पुत्र का आलिंगन करती है और उसे चूमती है।)

सुकन्या : आयु, इधर आओ।

(आयु सुकन्या के निकट जाता है)

सुकन्या : बेटे, तुम्हारी बड़ी माँ इधर है। उसका आशीर्वाद प्राप्त करो।

(आयु, देवी के चरण छूता है। देवी के नेत्रों में नीर। प्रसन्नमुख। आयु को चूमती है।)

पुरुरवा : (खूब प्रसन्न) माँ, आपने मुझे ऐसी निधि दी है जिसके लिए मैं अब तक तरसता रहा। मेरा योग्य उत्तराधिकारी मिल गया। मेरे समस्त राज्य की प्रजा के लिए यह उल्लास का विषय है। मंत्री जी, सारे राज्य में उत्सव मनाया जाये।

मंत्री : वैसा ही होगा महाराज।

पुरुरवा : (उर्वशी की ओर देखकर) उर्वशी, सभी लोग प्रसन्न हैं। लेकिन तुम रो रही हो?-क्या पुत्र-मिलन की तुम्हें कोई प्रसन्नता नहीं।

उर्वशी : है महाराज-है। सोलह साल के बाद जिस अभागिन माँ को पुत्र मिला हो, उसके हर्ष का क्या ठिकाना? मैंने इसके जन्मते ही, माँ सुकन्या के पास इसे रख दिया था। महर्षि च्यवन ने इस बालक को सभी विद्याओं में पारंगत बना दिया है। आज यह बालक सोलह साल का है। सच मानो पुत्र, इन वर्षों में एक दिन भी ऐसा नहीं बीता जब मैं तुम्हारी याद करके रोयी नहीं। इन अश्रुकणों को हृदय में सुखाती रही, और ऊपर से सुख का नाटक करती रही। मुझे क्षमा करो पुत्र। मैं लाचार थी।

आयु : माँ, तुमने मेरा त्याग किया। लेकिन मेरे मानसपटल पर माँ सुकन्या ने तुम्हारी छवि अंकित कर दी थी। मैं। उसी छवि में तुम्हारे दर्शन करता था।

पुरुरवा : उर्वशी ने यह नहीं बताया कि वह कैसी लाचारी थी कि सोलह साल तक मेरा पुत्र मुझसे अलग रहा? मेरे हृदय में उथल पुथल मची है कि मैं अपने पुत्र की तोतली बोली न सुन सका। उसे अपनी गोद से वंचित रखा। उर्वशी! उर्वशी!-तुमने ऐसा क्रूर दण्ड मुझे क्यों दिया? क्यों दिया?

(उर्वशी रोती रहती है।)

सुकन्या : महाराज, उर्वशी की लाचारी मैं जानती हूँ। उर्वशी ने सच ही कहा है कि उसके हृदय में दुख के आँसू सूखते रहे और ऊपर से वह सुख का नाटक करती रही। कैसी मार्मिक वेदना रही होगी उस नारी की जिसे पति और पुत्र में एक का चुनाव करना था।

पुरुरवा : क्या कह रही हैं आप? पति और पुत्र में......

सुकन्या : हाँ। भरतमुनि ने उर्वशी को शाप दिया था मानव लोक में आने का। उसमें संशोधन किया इन्द्र ने।

(फ्लैश बैक-वह अंश जहाँ स्वर्ग लोक में उर्वशी शापग्रस्त होकर रो रही है और इन्द्र शाप में संशोधन करते हैं।)

सुकन्या : उर्वशी शापग्रस्त है महाराज। आपके पुत्र को जानबूझकर इतने साल तक आपसे दूर रखा गया। यदि आप पुत्र को देख लेते तो आज से बहुत पहले वह यहाँ से चली जाती। आपके प्रेम में वह पुत्रवियोग सहती रही।

पुरुरवा : उर्वशी! **(उर्वशी लुप्त हो जाती है)**

पुरुरवा : **(चिल्लाकर)** उर्वशी! तुम कहाँ हो?

सुकन्या : उर्वशी को अब भूल जाइये महाराज।

पुरुरवा : कहाँ गयी उर्वशी?

सुकन्या : स्वर्गलोक।

Scanned with OKEN Scanner

पुरुरवा : स्वर्गलोक?-इन्द्र के पास?-सेनापति, सेना सुसज्जित करो। हम स्वर्गलोक पर आक्रमण करेंगे। देवराज इन्द्र से युद्ध करेंगे। जैसे भी होगा, उर्वशी को पृथ्वीलोक में आना ही पड़ेगा। ओह!-

(इला का प्रवेश।)

इला : पुत्र!-ऐसी मूर्खता न करो। देवराज से युद्ध करने का परिणाम शुभ नहीं होगा। उर्वशी एक अप्सरा थी। अप्सराओं का ऐसा ही चरित्र होता है। यह मानकर चलो। क्यों सुकन्या?

सुकन्या : इला ठीक कहती है महाराज। युद्ध की इच्छा त्याग दें।

(पुरुरवा उद्विग्न हो जाते हैं। आवेश में चले जाते हैं।)

छत्तीसवां दृश्य

(महल का एक भाग। सुकन्या, रानी देवी और इला। बीच में आयु)

इला : आयु, पौत्र को देखने के लिए मैं कब से तरस रही थी? आज सुकन्या ने मुझे पौत्र देखने का अवसर दिया। **(विराम)** सखी सुकन्या, मुनिवर कैसे हैं?

सुकन्या : अच्छे हैं, उन्हीं की देखरेख में तो आयु ने हर तरह की शिक्षा पायी है।

आयु : कैसा अभागा हूँ मैं?- जननी की गोद नहीं मिली, पिता का प्यार नहीं मिला। मेरे आते ही जैसे भूचाल आ गया। हे भगवान्!

देवी : पुत्र, उर्वशी चली गयी, लेकिन मैं तो हूँ-तुम्हारी बड़ी माँ। तुम्हीं तो मेरे बेटे हो-राज्य के एकमात्र उत्तराधिकारी। सब कुछ तुम्हारा है। तुम हम सब के जीवन हो आयु। प्रजा तुम्हें पाकर उल्लास में है। तुम्हारे दादा और पिता ने जिस परम्परा का निर्वाह किया, तुम्हें उसी का अनुसरण करना है पुत्र।

सुकन्या : इला, अब मुझे लौटने की अनुमति दो। बेटा, मुझे जाने दो।

आयु : नहीं तापसी माँ, मैं तुम्हारे बिना रह नहीं सकूँगा। मुझे छोड़कर मत जाओ।-मत जाओ। **(हाथ फैला देता है। सुकन्या रो पड़ती है। निकट आकर स्नेह से आयु के सिर पर हाथ फेरती है।)**

सुकन्या : मुनि अकेले होंगे। मुझे जाने दो आयु।

आयु : एक माँ ने मुझे जनम दिया। दूसरी माँ ने मेरा पालन-पोषण किया। तीसरी माँ ने अपने हृदय में मुझे जगह दी। **(रोकर)** जाओ तापसी माँ, लेकिन मैं तुम्हें भूल नहीं सकूँगा।भूल नहीं सकूँगा।

सैतीसवां दृश्य

(जंगल में पगडण्डी जिससे होकर सुकन्या जाती दिखाई पंड़ रही है। दूर, महल की छत पर से, आँसू भरे नयन से, आयु देख रहा है।)

अड़तीसवां दृश्य

(आकाश मार्ग। उर्वशी हवा में उड़ रही है। नीचे पर्वत खंड पर महाराज पुरुरवा-विक्षिप्त भाव।)

पुरुरवा : उर्वशी! एक बार-केवल एक बार मुझ से बातें कर लो।

(उर्वशी आकाश मार्ग में रुक जाती है। पीछे मुड़कर देखती है। उसके नेत्रों में नीर है। आकाश में बादल उड़ रहे हैं।)

पुरुरवा : उर्वशी!-मुझे छोड़कर मत जाओ। मैं तुम्हारे बिना नहीं रह सकता।

उर्वशी : महाराज, मैंने एक पुत्र आपको दिया जो सब तरह से योग्य है। आपकी पत्नी देवी इतने दिनों तक प्रतीक्षा करती रही। रोती रही। जाकर उसके आँसू को अपना प्यार दीजिए। शासन की व्यवस्था कीजिये। चन्द्रवंश का नाम उज्ज्वल कीजिये।

पुरुरवा : उर्वशी! **(रो पड़ते हैं)** उर्वशी! इतने वर्षों तक तुमने जिस प्रेम का सुधादान दिया है, उससे मैं अभी तक तृप्त नहीं हो सका हूँ।

उर्वशी : इच्छा का कहीं अन्त नहीं है महाराज पुरुरवा। इच्छा को नियन्त्रित कीजिये। आप अपनी राह भूल रहे हैं।

पुरुरवा : उस सुन्दर भूल में ही मेरा जीवन है उर्वशी। यदि तुम मेरे साथ वापस नहीं चल सकती तो मुझे ही अपने साथ स्वर्गलोक ले चलो।

उर्वशी : असम्भव!

पुरुरवा : तुम्हारे लिए कुछ भी असम्भव नहीं है उर्वशी।

उर्वशी : महाराज, मैंने कई बार आपसे कहा है कि मैं वायु हूँ अर्थात् वायु के समान ही दुष्प्राप्य नारी हूँ। उषा के समान आपके पास आयी थी। अब लौट रही हूँ।

पुरुरवा : मैं तुम्हारे वियोग से सन्तप्त हूँ उर्वशी।

Scanned with OKEN Scanner

उर्वशी : आपका यह वार्तालाप व्यर्थ है। आप अब मुझे कभी नहीं पा सकते- कभी नहीं। क्षमा करें! (लुप्त। थोड़ी देर बाद वह ऊपर बादलों के बीच उड़ती नजर आती है। पुरुरवा नेत्र पोंछते हैं।)

उन्तालीसवां दृश्य

(पहाड़ की पगडंडी पर से नीचे उतरते हुए पुरुरवा। उनके दोनों ओर रानी देवी और पुत्र आयु। कोई संवाद नहीं। फिर तीनों की पीठ दिखाई पड़ती है। रास्ता टेढ़ा-मेढ़ा। नदी का दृश्य। सामने महल-सूरज डूब रहा है।)

समाप्त

शेरशाह

(ऐतिहासिक नाटक)

Scanned with OKEN Scanner

पात्र परिचय

बाबर	:	मुग़ल सम्राट्
हुमायूँ	:	बाबर के पुत्र
बैरम ख़ाँ	:	मुग़ल सेनापति
शेर ख़ाँ(शेरशाह)	:	अफ़ग़ान सरदार
खवास ख़ाँ	:	शेर ख़ाँ के सेनापति
लाड़ मलिका	:	शेर ख़ाँ की पत्नी
बेगम	:	हुमायूँ की पत्नी
अन्य पात्र	:	सफ़ीर, सैनिक, पहरेदार आदि

शेरशाह

(ऐतिहासिक नाटक)

पहला दृश्य

(मुगल सम्राट् बाबर का दरबार । नाच हो रहा है। बीच बीच में वाह वाह और अट्टहास)

बाबर : माबदौलत अपने दरबार में आप सब लोगों का इस्तक़बाल करते हैं।

सब : यह जहाँपनाह की मेहरबानी है।

बाबर : आप सब लोगों की मदद से हमने पानीपत के मैदान में इब्राहिम लोदी को शिकस्त दी, कनवा के मैदान में मेवाड़ के बहादुर संग्राम सिंह को सर किया। आज फ़रग़ना का ज़हीरुद्दीन मुहम्मद बाबर शाहंशाहे हिन्दोस्तान है। बैरम खां, हमने अपने बेटे हुमायूँ की सालगिरह के मौके पर कई राजाओं और नवाबों को शरीक होने के लिए लिखा था। क्या वे सब आ गये?

बैरम : जी हाँ जहाँपनाह। कुछ लोग खुद इस जलसे में शरीक हो रहे हैं और कुछ लोगों ने अपने खास आदमियों की मार्फत तोहफे आलाहज़रत की ख़िदमत में भेजे हैं। लेकिन जहाँपनाह, बेअदबी माफ़ हो। बिहार से........

बाबर : बिहार से? क्या मतलब? तुम रुक क्यों गये बैरम खां?

बैरम : जहाँपनाह, बिहार के सुल्तान बहार ख़ाँ लोहानी ने कोई खबर नहीं भेजी है।

Scanned with OKEN Scanner

बाबर : बहार खाँ लोहानी? लोदी हुकुमत की कमज़ोरी से फ़ायदा उठा कर उसने अपने को खुदसर एलान कर दिया है। लगता है, मुग़लों की ताकत का उसे कुछ भी अन्दाजा नहीं है।
बैरम : जहाँपनाह का ख़्याल दुरुस्त है।
बाबर : इस जलसे के बाद हम खुद बिहार की तरफ कूच करेंगे। बहार ख़ाँ लोहानी को सज़ा देंगे।
बैरम : जहाँपनाह, बिहार से एक सफ़ीर आया है।
बाबर : बिहार से सफ़ीर? सफ़ीर को माबदौलत के रूबरू हाज़िर किया जाये।

(शेर खाँ का प्रवेश)

शेर खां : शहंशाहे हिन्द को गुलाम कोर्निश करता है।
बाबर : जवान, तुम कौन हो?
शेर खां : जहाँपनाह, मैं बिहार के सुल्तान बहार ख़ाँ लोहानी का सफ़ीर हूँ। मेरा नाम शेर ख़ाँ है।
बाबर : बहार ख़ाँ क्यों नहीं आया?
शेर : वो बीमार हैं। उन्होंने मुझे जहाँपनाह की ख़िदमत में भेजा है।
बाबर : शेर ख़ाँ, क्या तुम सच बोल रहे हो?
शेर : झूठ बोलने की कौन सी वजह हो सकती है आलीजाह?
बाबर : बहार ख़ाँ दरबारे मुग़लिया में आने से ख़ौफ़ खाता है।
शेर : ग़लत बात है।
बाबर : (क्रोध में) शेर ख़ाँ!
शेर : जहाँपनाह गुलाम की बेअदबी माफ करें।
बाबर : शेर ख़ाँ, तुम मुग़ल दरबार के अदब-क़ायदे नहीं जानते।
शेर : यह सही बात है जहाँपनाह। मैंने इसे अब तक जानने की कोशिश भी नहीं की।
बाबर : अगर तुम मुग़ल दरबार के अदब कायदे से नावाकिफ़ हो तो बहार ख़ाँ ने तुम्हे यहां भेजा क्यों?
शेर : जहाँपनाह, उनका ख्याल था कि शहंशाह एक बहादुर इन्सान हैं और बहादुर इन्सान की इज्जत करते हैं। उन्हें शायद मालूम नहीं था कि शहंशाह बहादुरी से ज़ादा दरबारी अदब क़ायदे को जगह देते हैं।
बाबर : शेर ख़ाँ, तुम बेअदब की तरह बातें कर रहे हो। दरबारे मुग़लिया की तौहीन कर रहे हो।
शेर : नहीं जहाँपनाह, गुलाम का ऐसा इरादा बिल्कुल नहीं है। लेकिन हुज़ूर ने मेरी और मेरे मालिक की तौहीन की है।
बाबर हम बहार ख़ाँ को भी बहुत जल्द देख लेंगे।

शेर : जहाँपनाह, मैं एक अफ़ग़ान हूँ। जहाँपनाह के अल्फ़ाज़ बड़े कड़े हैं। बर्दाश्त के बाहर हैं।
बाबर : तुम शायद जोश में आ रहे हो।
शेर : जहांपनाह चुनौती न दें। बेअदबी के लिए माफ़ी का तलबगार हूँ।
बाबर : बहुत खूब। शेर खाँ हमने तुम्हारे बारे में जैसा सुना, वैसा पाया। हम तुम्हारा इमतिहान ले रहे थे। माबदौलत तुम पर खुश हैं। मुग़ल फ़ौज में हम तुम्हें एक ऊँची जगह दे सकते हैं। अगर तुम चाहो तो आ सकते हो।
शेर : मुझे सोचने का मौक़ा दीजिये जहांपनाह।
बाबर : हम तुम पर बहुत खुश हैं बहादुर जवान। खुदा गवाह है, जहीरुद्दीन बाबर के सामने अब तक किसी इन्सान ने ऐसी जुर्रत न की थी। वक्त आने पर हम तुम्हारी तलवार का इमतिहान लेंगे। हां, आज रात शाही दस्तखान पर तुम मिलो।
शेर : जहांपनाह के एहसान के लिए शुक्रगुजार हूँ।

दूसरा दृश्य

(बाबर और हुमायूँ)

बाबर : शहज़ादे, तुमने शेर खाँ को देखा?
हुमायूँ : देखा अब्बाहुज़ूर।
बाबर : उससे खबरदार रहना। उसके इरादे बुलन्द हैं। उसकी आँखों में एक ऐसी चमक है जो दिल को दहलानेवाली है।
हुमायूँ : लेकिन मुग़लों की ताक़त का उसे अन्दाज़ा नहीं है आला हज़रत।
बाबर : दस्तरखान पर शेर खाँ चुपचाप बैठा था। हमारे अमीर उमरा की निगाहें उसके ख़ौफ़नाक चेहरे पर टिकी थीं। तुमने देखा था कि उसने गोश्त का टुकड़ा कैसे काटा।
हुमायूँ : देखा था अब्बाहुज़ूर, उसने गोश्त का टुकड़ा अपनी कटार से काटा था। लोग हैरत में थे और वो बेफ़िक्र खाना खा रहा था।
बाबर : तुम नहीं जानते शहज़ादे। शेर खाँ एक मामूली जागीरदार का लड़का है। सुना है, अपनी तलवार के एक वार से इसने एक शेर को मार डाला। बहार खाँ लोहानी ने तभी इसे शेर खाँ का ख़िताब दिया। सुनने में आया है कि शेर खाँ के मशविरे के बग़ैर बहार खाँ कुछ भी नहीं करता।
हुमायूँ : अगर यह बहादुर इन्सान मुग़लों का साथ दे तो बड़ा काम हो।
बाबर : हम इसी कोशिश में हैं। अगर यह आज़ाद रहा तो हमारे लिए एक ख़तरा भी बन सकता है।

Scanned with OKEN Scanner

हुमायूँ : आला हज़रत सही फ़रमाते हैं।

बाबर : तुम्हें उस पर निगाह रखनी है हुमायूँ, वरना यह चिनगारी कभी भी ख़तरनाक शोला बन सकती है। हमने बैरम खाँ को भी ख़बरदार कर दिया है।

हुमायूँ : जो हुक्म अब्बा हुज़ूर।

बाबर : हिन्दोस्तान! मुग़ल! अफ़ग़ान!

तीसरा दृश्य

शेर : हिन्दोस्तान! मुग़ल! अफ़ग़ान! नहीं-क्या-नहीं। वो एक सपना है। हिन्दू और मुसलमान दोनों को एक कड़ी में बांधना है। दोनों को मिलाकर एक नये मुल्क को जन्म देना है। सारे मुल्क की फैली हुई ताक़तों को एक डोर में बांधना है। अल्लाह! परवरदिगार! इस इन्सान में वो ताक़त दे कि इस काम को पूरा कर सके।

(एक सफ़ीर का प्रवेश)

सफ़ीर : चुनार का यह सफीर हुज़ूर को आदाब बजा लाता है।

शेर : सफ़ीर, क्या ख़बर है?

सफीर : चुनार की हालत बहुत खराब है। क़िले के मालिक ताज खाँ का खून हो गया है। उनकी बेगम खतरे में हैं। उन्होंने आपकी याद की है।

शेर : चुनार का क़िला? लेकिन मैं उस झगड़े में क्यों पड़ूँ? मुझे मिलेगा क्या?

सफ़ीर : हुज़ूर, आपको सब कुछ मिलेगा। धन-दौलत, किला और.........

शेर : और क्या?

सफ़ीर : बेगम लाड़ मलिका भी मिल सकती हैं।

शेर : ये क्या कहते हो?

सफ़ीर : ठीक कहता हूँ। अगर आप चाहें तो वो आप से शादी भी कर सकती हैं। मेरा ख्याल है कि इससे ज़ादा आप को और क्या चाहिये? बेगम ने आपकी बहादुरी के बारे में सुना है-और उन्होंने अपनी यह दिली मन्शा मुझ से कही है।

शेर : अच्छी बात है। तुम जाओ। मैं फौरन चुनार पहुंचता हूँ। तुम लाड़ मलिका से कह देना वो फिक्र न करें। मुझ पर भरोसा रखें।

सफ़ीर : जो हुक्म।

शेर : शायद खुदा मेरी मदद कर रहा है। चुनार का क़िला हमारी कामयाबी की पहली सीढ़ी होगा।

चौथा दृश्य

(शेर खाँ और बेगम लाड़ मलिका)

मलिका : लाड़ मलिका हुज़ूर का इस्तक़बाल करती है।

शेर : हमने बेगम के हुक्म के मुताबिक़ दुश्मनों को सर कर दिया।

मलिका : मैं शुक्रिया अदा करती हूँ।

शेर : **(हंस कर)** यह अदा भी बहुत खूबसूरत है बेगम।

मलिका : खुदा ने मेरी ख्वाहिश पूरी की। मेरी तमन्ना थी कि मुझे ऐसा शौहर मिले जिसमें शेर की ताकत हो और जिसके दिमाग में कुव्वतेबर्क़ी हो। वो सब आप में है। मैंने ताज खाँ को खो दिया, उसका ग़म कम है। लेकिन मैंने हुज़ूर को पाया इसकी खुशी ज़ादा है।

शेर : मलिका, आज से कई साल पहले मैं जौनपुर गया था, ताज खाँ ने मेरी मदद की थी। उसी मौके पर मैंने आप को देखा था। वो सूरत मैं भूल नहीं पाया। क्या जानता था कि किसी रोज मैं आप के हाथ पकड़ने का मौका भी पा सकता हूँ।

मलिका : हम मिलना चाहते थे, मिल गये। यह खुदा की कुदरत है।

शेर : ज़हे किस्मत! कुआँ प्यासे के पास आया। मैं तो एक लम्बे अरसे से आप का तालिबेदीदार हूँ।

मलिका : मैं उम्र में आप से बड़ी हूँ। लेकिन यह बात पता नहीं क्यों मैं भूल रही हूँ। लगता है, मेरी मुहब्बत आज ही शुरू हुई है। दिल की उमंग आज उमड़ पड़ी है।

शेर : बेगम? अपने ग़म को भूल जाओ। आओ, हमलोग छत पर चलें और चांद की ठण्ढक में अपने दिल को ताजगी दें, रात हमलोगों का बेसब्री से इन्तेज़ार कर रही है। मालिका, तुम उम्र में बड़ी हो। तुम्हारा 'तुम' ही मुझे सुनने में अच्छा लगता है।

मलिका : बहुत खूब! अब मैं 'तुम' ही कहूंगी, आप नहीं। **(हंस पड़ती है)**

पाँचवाँ दृश्य

(हुमायूँ और बैरम)

हुमायूँ : बैरम खाँ, क्या यह ख़बर ठीक है कि ताज खाँ की विधवा ने शेर खाँ से शादी कर ली है?

Scanned with OKEN Scanner

बैरम : ठीक है आलीजाह, और यह ख़बर भी ठीक है कि चुनार पर शेर खाँ का कब्ज़ा है। वहाँ उसे काफ़ी दौलत मिली है। और सुनने में आया है कि चुनार में वह एक बड़ी फ़ौज तैयार कर रहा है।

हुमायूँ : सबब?

बैरम : उसके इरादे बड़े बुलन्द हैं आलीजाह। ससराम के एक मामूली जागीरदार का लड़का आज एक क़िला का मालिक है।

हुमायूँ : मरहूम शहंशाह बाबर ने-हमारे अब्बाजान ने-चुनार के क़िले पर मुग़लिया झंडा फहराया था। अगर शेर खाँ ने चुनार पर कब्ज़ा किया है तो हम उसे सज़ा देंगे। सिपहसालार हिन्दूबेग को हुक्म दिया जाये कि कल वो शाही लश्कर के साथ चुनार के लिए रवाना हो जाये। बाद में हम भी चुनार पहुंचेंगे।

छठा दृश्य

(शेर खाँ और लाड़ मलिका)

मलिका : क्या तुम सचमुच जा रहे हो शेर?

शेर : हाँ, मलिका जा रहा हूँ।

मलिका : अपनी मलिका से नाराज होकर?

शेर : नहीं, ऐसा न कहो। तुमने मुझे जो खुशी- जो मुहब्बत दी है उसका मैं बयान नहीं कर सकता। चुनार में जितने दिनों तक रहा, बाहरी दुनिया को भूला रहा। मैं अपने तक को भूल गया।

मलिका : और इसी से मैं तुम्हें जाने देना नहीं चाहती। इस उमर में जब मेरा खून ठण्डा हो गया था, तुमने उसमें गर्मी डाल दी।

शेर : यही हाल तो मेरा रहा, जो इन्सान शुरू से गर्दिश में रहा, जो तलवार से खेलता रहा, जिसके कानों में जंगी बाजे बजते रहे, उसे तुमने अपने रूप के जादू से मात कर दिया। लेकिन मलिका, तुम नहीं जानतीं। फ़र्ज़ भी एक चीज़ होती है। मैंने मुगलों को इस मुल्क से निकाल बाहर करने की क़सम खायी है।

मलिका : मुग़लों ने तुम्हारा क्या बिगाड़ा है? मुग़लों की मातहती ताज खाँ ने मान ली थी तो इस में क्या नुक़सान हो गया?

शेर : मैं नहीं मानता। मुग़ल ग़ैरमुलकी हैं-हमारी आज़ादी के दुश्मन हैं।

मलिका : शेर-फिर कहती हूँ-मत जाओ।

शेर : मलिका खबर मिली है कि बादशाह हुमायूँ चुनार के क़िले पर हमला करने वाले हैं। मुग़ल फ़ौज कूच कर चुकी है।

मलिका : तो क्या इसी से तुम मुझे छोड़ कर जा रहे हो?

शेर : मेरा बेटा जलाल खाँ इस किले की हिफ़ाजत करेगा। बादशाह ज़िन्दगी भर कोशिश करके भी इस क़िले पर फ़तह नहीं पा सकते।

मलिका : क्यों? मुग़ल फ़ौज अफ़गान फ़ौज से कमज़ोर है?

शेर : नहीं, बादशाह हुमायूँ की अक्ल शेर खाँ की अक्ल से कमज़ोर है।

मलिका : तुम चुनार से जाना क्यों चाहते हो?

शेर : मलिका, चुनार में तो मेरा दिल क़ैद है। भला मैं जा भी कहाँ सकता हूँ? मैं बाहर से कुमक भेजता रहूँगा। जलाल खाँ क़िले में रहकर शाही लश्कर का मुक़ाबला करेगा। सच मानो मलिका, मैं फिर आऊँगा।

मलिका : शेर, तुमने जो कुछ भी कहा है-उसे निभाना होगा।

शेर : वायदा करता हूं-क़सम खाता हूं। मेरा घोड़ा तैयार है। अलविदा!

मलिका : खुदा हाफ़िज़।

(घोड़ा जाने की टाप ध्वनि)

सातवां दृश्य

(शेर खाँ और खवास खाँ)

शेर : खवास खाँ, हिन्दुस्तानियों में मिल्लत नहीं थी, इसी से बाबर को फतहयाबी मिली। आज हम एक हैं तो मुग़लों को शिकस्त देंगे। हिन्दुस्तानी तलवार पर काई नहीं जमी है। तय है कि मुगल हुकूमत हम ख़त्म करके रहेंगे।

खवास : लेकिन हुज़ूर हम शाही फ़ौज का मुक़ाबला नहीं कर सकते।

शेर : अभी हम मुक़ाबला करना चाहते भी नहीं। शाही फ़ौज जब थक कर चूर हो जायगी तो खुद घुटने टेक देगी। यही तो चुनार में भी हुआ था।

खवास : लेकिन इस वक्त चुनार तो हुमायूँ के कब्ज़े में है।

शेर : कोई बात नहीं। बादशाह को बंगाल तक जाने दिया जाये। हमारी फ़ौज उनका मुक़ाबला न करे। बादशाह को बंगाल में फंसाकर इधर हम अपना काम करेंगे। उनके लश्कर में इतने आदमी हैं, ऐशो आराम के इतने सामान हैं कि आगे बढ़ने की तेज़ी उनमें आ ही नहीं सकती।

खवास : हुज़ूर को इन सब बातों का पता कैसे चला?

शेर : खवास खाँ, मैं बाबर के साथ रह चुका हूँ। मुग़लों के लड़ने के तरीक़े भी जान गया हूँ। हम हुमायूँ को शिकस्त दे सकेंगे। ऐसा हमारा पक्का यक़ीन है।

खवास : हमारे लिए क्या हुक्म है?

शेर : छिप कर रहो। शाही फ़ौज हमारा पता न पा सके। हुमायूँ बंगाल की तरफ़ बढ़ते जायें। पीछे से हम अपने गये इलाक़े वापस लेते जायें। इसमें ख़तरा भी है। लेकिन शेर खाँ ख़तरे से नहीं डरता।

Scanned with OKEN Scanner

खवास : हुजूर, मुझे ताज्जुब है। आप में कैसी हिम्मत है। हिन्दोस्तान के बादशाह का मुक़ाबला कोई मामूली इन्सान नहीं कर सकता।

शेर : खवास खाँ, मैं एक इन्सान हूँ-मामूली इन्सान। लेकिन मैं हिम्मत और मेहनत में यक़ीन करता हूँ। मेरी फ़तहयाबी का यही राज़ है। खुदा हमारा मददगार है। अच्छा ख़वास ख़ाँ, अब तुम जाओ।

आठवां दृश्य

(तूफान और वर्षा)

हुमायूँ : लगता है, कयामत आ गई । बंगाल की बरसात तो और भी खतरनाक है। नदियां उमड़ आई हैं। राह बन्द हैं।

(धीरे-धीरे तूफान और वर्षा का जोर कमता है)

पहरेदार! सिपहसालार बैरम खाँ को हाजिर करो। **(कुछ देर बाद बैरम प्रवेश)**

हुमायूँ : बैरम ख़ाँ, हम बिहार और बंगाल को जीत कर आज इस गौड़ में खेमा डाल कर पड़े हैं। लेकिन शेर ख़ाँ हमारे सामने अब तक नहीं आया।

बैरम : जहांपनाह, शेर ख़ाँ बड़ा चालाक है। शाही फ़ौज का मुक़ाबला करना उसके लिए नामुमकिन था। इसलिए वह छिप गया। लेकिन जब जहांपनाह इस बरसात में बंगाल में घिर गये हैं तो वह फिर मैदान में उतर आया है। अभी अभी ख़बर मिली है कि चुनार का किला उसने फिर जीत लिया है।

हुमायूँ : बैरम! क्या तुम सच कह रहे हो?

बैरम : हां, जहांपनाह।

हुमायूँ : लेकिन हम उसका मुक़ाबला कैसे कर सकेंगे? हमने फ़ौज का एक बहुत बड़ा हिस्सा आगरा भेज दिया । जो लोग यहां हैं, उनमें ज्यादातर बीमार हैं। वे लड़ नहीं सकते। बरसात में बंगाल की ये नदियां भी राह रोके खड़ी हैं। हम क्या करें?

बैरम : जहांपनाह, फिर कहता हूँ, ये सब मुसीबत हमने खुद मोल ली है। हमने बार-बार उस पर यक़ीन किया। उसे शरारत करने की छूट दी।

हुमायूँ : छूट दी?-यह क्या कहते हो बैरम?

बैरम : जहांपनाह, आज जब शेर खाँ हमारी पीठ पर इस तरह बढ़ता चला आ रहा है, तो हमें मरहूम बादशाह बाबर के ये अल्फ़ाज़ याद आ जाते हैं। उन्होंने मरते वक्त कहा था-बैरम, शहजादे हुमायूँ का जिम्मा तुम्हारे ऊपर छोड़ कर जा रहा हूं। मैंने उन्हें दिलासा दिया था कि आपकी इज्जत, हार-जीत, सब का जिम्मेदार मैं रहूंगा। आज सल्तनतेमुग़लिया की कमजोरी से फ़ायदा उठाकर एक मामूली इन्सान सिर उठाये खड़ा है, और हम कुछ नहीं कर सकते।

हुमायूँ : बैरम, तुम हमें बहुत अजीज हो। हम तुम्हारी नेक राय लेकर ही सब कुछ करते रहे। अब यह बताओ कि हम क्या करें?

बैरम : हमें शेर ख़ाँ का मुकाबला करना होगा। जब तक उस सांप को कुचला न जायेगा, मुग़ल सल्तनत ख़तरे में रहेगी।

हुमायूँ : क्या इस बरसात में हमारी फ़ौज आगे बढ़ सकेगी?

बैरम : हमें आगे बढ़ना ही होगा, वरना शेर खाँ की फ़ौज हम पर टूट पड़ेगी।

हुमायूँ : ठीक है। देर न करो। फ़ौज को आगे बढ़ने का हुक्म दो। शेर खाँ जहां भी मिले, मुक़ाबला करो।

नौवां दृश्य

(गंगा की लहरें)

शेर खाँ : खवास खाँ।

खवास : हुक्म सरदार।

शेर खाँ : यही वह जगह है जहां हिन्दुस्तान की किस्मत का एक बार फिर फैसला होगा। गंगा के किनारे बसा यह "चौसा" तवारीख में एक खास नाम रहेगा।। हम यहीं पर शाही फ़ौज का मुक़ाबला करेंगे।

खवास : लेकिन बादशाह हुमायूँ आज तीन महीने से यहां पड़े हैं। न तो हम पर हमला करते हैं, न आगे बढ़ते हैं। मामला क्या है?

शेर खाँ : बादशाह अफ़ीम के नशे में हैं। कुछ तय नहीं कर पाते कि क्या करना है। हमने एलान करा दिया है कि हम पीछे हट रहे हैं।

खवास : क्या मतलब?

शेर खाँ : मुगल फ़ौज हमारी तरफ से बेफ़िक्र हो जायेगी, और हम आज रात में बादशाह पर हमला करेंगे।

खवास : आज रात में?

शेर खाँ : हां, आज रात में। हम मादरेवतन के लिये यह जंग कर रहे हैं। बादशाह हुमायूँ की फ़ौज आराम करती रहेगी। उधर आगरे पर उनके भाई हिन्दाल ने कब्जा कर लिया है। कामरान लाहौर में है और दिल्ली के तख्त पर उसकी आंखें लगी हैं। मुग़ल सल्तनत के पाये कमजोर हो गए हैं। एक धक्के की जरूरत है। फिर बाबर की क़ायम की हुई मुग़ल सल्तनत की यह दीवार मिसमार हो जायेगी।

खवास : हम तैयार हैं सरदार। शाही फौज पर हम कहर बनकर टूट पड़ेंगे।

शेर खाँ : शाबाश! लेकिन एक बात जान लो। हम मुग़ल सल्तनत के दुश्मन हैं, हुमायूँ की जान के नहीं। हम हुमायूँ की जान नहीं लेना चाहते। इसलिए हमारी फ़ौज

Scanned with OKEN Scanner

का कोई सिपाही बादशाह को हाथ में पाकर भी नहीं मारे। अगर हुमायूँ का खून हमारी फ़ौज के किसी आदमी ने किया तो शेर खाँ का वह सबसे दुश्मन होगा।

खवास : लेकिन सरदार, हुमायूँ हमारे दुश्मन हैं.........

शेर खाँ : सिपहसालार, तुम नहीं जानते। हुमायूँ में इन्सानियत है, रहम है, जज़्बात हैं। उन्होंने रानी कर्णावती की राखी की लाज रखने के लिए अपनी सल्तनत दांव पर लगा दी। ठीक है कि कोई हुक्मरां ऐसी ग़लती नहीं कर सकता, लेकिन इन्सानियत की यह एक बहुत बड़ी मिसाल है। हम ऐसे इन्सान की जान नहीं ले सकते।

खवास : आप फिक्र न करें। बादशाह को भागने का मौक़ा दिया जायेगा। आज रात को हम हमला करेंगे।

दसवां दृश्य

(घन गर्जन । गंगा की लहरों की आवाज)

हुमायूँ : बैरम खाँ, शेर खाँ ने क्या जवाब दिया?

बैरम खाँ : जहांपनाह, शेर खाँ कहता है कि बादशाह ने हमारे साथ बहुत जुल्म किये, हमें कमजोर पाकर बार बार सताया, आज जब वे अपनी शिकस्त सामने देख रहे हैं तो सुलह करना चाहते हैं।

हुमायूँ : शेर खाँ को शायद हमारी कमज़ोरी का पता चल गया है। हिन्दुस्तान के बादशाह ने आज तक किसी के सामने सुलह का हाथ नहीं बढ़ाया। बदतमीज़ शेर खाँ ने हमारी तौहीन की है।

बैरम खाँ : आलमपनाह, सुलह की कोई ज़रूरत नहीं। हम जंग के लिये तैयार हैं।

(दूर में रण-घोष । क्रमशः निकटतर)

हुमायूँ : ये क्या?

बैरम खाँ : शायद इस अन्धेरी रात में शेर खाँ ने हम पर हमला किया है।

हुमायूँ : बैरम, ये कैसी बात है? सुलह की बात चल रही है। इस बीच हमला.....

बैरम खाँ : शेर खाँ सब कुछ कर सकता है। जहांपनाह फिक्र न करें। हम शेर खाँ से जंग करेंगे।

(रणघोष बहुत निकट)

बैरम खाँ : मैं बाहर जा रहा हूँ। आप खीमे से दूर चले जायें।

(घोड़ा आने की आवाज)

हुमायूँ : या खुदा। अब क्या होगा? बेगम! बेगम! शायद दुश्मनों ने बेगम का ख़ीमा घेर लिया है। कौन?

(कई घोड़ों की टाप निकटतर)

खवास : मैं हूँ खवास खाँ-शेर खाँ का एक सिपहसालार। क्या आप ही बादशाह हैं?

हुमायूँ : बदतमीज! बादशाह हुमायूँ को पहचानना क्या इतना मुश्किल है?

खवास : बादशाह से मेरी इल्तिजा है कि वे खीमे के बाहर चले जायें।

हुमायूँ : तुम्हारी ऐसी गुस्ताख़ी! अरे कोई है? बदमाश को क़ैद कर लो।

खवास : बादशाह सलामत की फ़ौज तितर-बितर हो गई है। हुजूर की शिकस्त होगी। अगर जहांपनाह अपनी जान बचाना चाहते हैं तो जल्द भाग जायें।

हुमायूँ : यह नहीं हो सकता। तलवार हमारे हाथ में है। जंग करो। बाबर का बेटा बुजदिल नहीं है कि मैदानेजंग से भाग जाये।

खवास : जहांपनाह की जान ख़तरे में है। मैं हुजूर पर हाथ उठाना नहीं चाहता।

हुमायूँ : आखिर क्यों?

खवास : शेर खाँ का यही हुक्म है कि बादशाह की जान न ली जाये।

हुमायूँ : हम शेर खाँ के दुश्मन हैं, दोस्त नहीं।

खवास : लेकिन शेर ख़ाँ मुगल सल्तनत के दुश्मन हैं, हुजूर की जान के नहीं। देर न करें जहांपनाह, अफ़ग़ान फ़ौज आपके ख़ीमे में आग लगा रही है। आप क़ैद कर लिये जायेंगे। जान बचा कर आप फिर जंग कर सकते हैं। ख़ीमे के बाहर घोड़ा तैयार है। आप उस पर सवार होकर किसी तरह गंगा के पास पार चले जायें।

हुमायूँ : अच्छी बात है। लगता है खुदा को यही मंजूर है।

(गंगा में छपाक की आवाज। रणघोष। खेमे का जलना। कोलाहल)

ग्यारहवां दृश्य

(शेर खाँ का दरबार)

खवास : (आते हुए) मैं हिन्दुस्तान के नये शहंशाह की क़दमबोसी करता हूँ और ख़िदमत में एक चीज पेश करता हूँ।

शेर खाँ : हम तुम्हारी बहादुरी से खुश हैं खवास खाँ। लेकिन तुम्हारे साथ यह कौन है?

खवास : एक तोहफ़ा।

शेर खाँ : तोहफ़ा? यह तो कपड़ा में लिपटा कोई इन्सान है। इसके मुंह पर का कपड़ा हटाओ। (थोड़ा पौज) यह क्या?-यह तो कोई औरत है।

खवास : जहांपनाह, यह बादशाह हुमायूँ की बेगम हैं-मलिका मुअज्जमा।

शेर खाँ : (चीखकर) सिपहसालार! ये तुमने क्या किया?

खवास : (भयभीत स्वर) जहांपनाह।

Scanned with OKEN Scanner

बेगम : शेर खाँ, तुम्हारे सिपहसालार का इसमें कोई कसूर नहीं है। तुम्हारे हुक्म से इसने मुझे कैद किया है और तुम्हारे रूबरू पेश किया है। मैं एक तोहफा हूँ न?

शेर खाँ : बेगम, हम शर्मिन्दा हैं। खवास खाँ ने हमारे मुंह पर तमाचा मारा है।

बेगम : शेर खाँ, यह किस्मत की बात है। किसी रोज तुम हाथ बांधे मरहूम बादशाह बाबर के दरबार में खड़े थे। आज हिन्दोस्तान के शहंशाह हुमायूँ की मलिका तुम्हारे रूबरू एक कैदी बनाकर लाई गई है। तुम्हारे सिपाहियों ने मुगल खेमे में काफी लूटमार की है। उसी लूट का हिस्सा मैं हूँ।

शेर खाँ : मलिका मुअज्जमा, आप गलत न समझें। हमारे सामने आप महफूज हैं। हम मुग़ल सल्तनत के दुश्मन हैं, लेकिन आप की इज्जत और आबरू के नहीं। हिन्दुस्तान में औरतों की इज्जत मर्दों से ज़्यादा है। हम अपनी ग़लती के लिये आपसे माफी मांगते हैं।

बेगम : शेर खाँ, यह ग़लती नहीं है लड़ाई में ऐसा ही होता है। तुमने शहंशाह से तख्तोताज छीना। अगर बेगम को भी तुमने छीन लिया तो अपने लायक़ ही काम किया।

शेर खाँ : मलिका मुअज्जमा शायद हमारी ईमानदारी का कोई बड़ा सबूत चाहती हैं। हमारे सिपहसालार ने अपकी बेईज्जती की है, उसके लिए हम गुनहगार हैं। यह कटार लीजिये। और हमें सज़ा दीजिए।

बेगम : **(आश्चर्यचकित)** शेर खाँ!

शेर खाँ : मलिका, हमारा यक़ीन कीजिए। मुग़ल सल्तनत का सबसे बड़ा दुश्मन आपके सामने खड़ा है। हमने आज तक शहंशाह बाबर और शहंशाह हुमायूँ के सामने भी गर्दन नीची न की थी, लेकिन आपके सामने कर रहा हूँ।

बेगम : शेर खाँ, मैं तुम्हारा यकीन करती हूँ। कटार वापस लो। अब मेरी एक इल्तिजा है।

शेर खाँ : हुक्म कीजिये मलिका।

बेगम : इस कटार से तुम मेरा खून कर दो।

शेर खाँ : सबब?

बेगम : चौसा की लड़ाई में बादशाह शायद मारे गये। उनका कुछ पता नहीं है। उनके बिना मैं ज़िन्दा रहना नहीं चाहती। **(रो पड़ती है)**

शेर खाँ : बादशाह ज़िन्दा हैं मलिका। हमने उन्हें जानबूझ कर छोड़ दिया है। वे गंगा पार करके आगरे की तरफ़ चले गये हैं। आप अगर चाहें तो हम अपने सिपाहियों की देखरेख में आपको आगरे भिजवा दें।

बेगम : शेर खाँ, यह तुम्हारा बहुत बड़ा एहसान होगा। आज मुझे मालूम हुआ कि शेर खाँ कितना अज़ीम है। शेर खाँ, इस औरत की दुआ तुम्हारे साथ रहेगी। काश, शहंशाह जान पाते कि शेर खाँ की क़ीमत क्या है।

शेर खाँ : खवास खाँ, मलिका मुअज्जमा को आगरे भेजने का बन्दोबस्त करो। मलिका तब तक आप आराम फरमायें।

बारहवां दृश्य

(कालिंजर का किला। तोपों और बन्दूकों की आवाज)

शेर : कालिंजर का किला। सामने खड़ी यह ऊँची, अकड़ी, पहाड़ी। सात महीने हो गये। मेरी फ़ौज यहां खड़ी है, पर फ़तह की उम्मीद नहीं। जहां भी शेरशाह की फ़ौज गई, फ़तहयाबी का सेहरा मिला। लेकिन यह कालिंजर! पत्थरों की मार हमारी तोपों को आगे बढ़ने नहीं देती। सिपाहियो! आगे बढ़ो। हथगोलों को किले की तरफ फेंकते जाओ।

(रणघोष। हथगोलों की आवाज)

यह क्या ! **(चीख कर)** आह ! -मैं मरा ।

(घोड़े पर सवार खवास खाँ आता है)

खवास : **(घबराहट)** जहांपनाह! यह क्या! हुजूर तो बुरी तरह ज़ख्मी हो गये हैं?

शेर : आह ! एक गोला बारूद की ढेर में गिरा और मैं बारूद की लपटों में आ गया। बुरी तरह जल गया हूँ। शायद.........

खवास : नहीं, जहांपनाह ऐसा नहीं हो सकता । ऐसा नहीं हो सकता।

शेर : जंग चलने दो सिपहसालार। कालिंजर की फ़तह के बाद ही मेरी मौत होगी। आह! जंग चलने दो।

शेर : आह ! जिस्म में आग लगी है, लेकिन कालिंजर का किला अभी तक सीना ताने मेरे सामने खड़ा है। क्या मैं हार जाऊँगा? नहीं, ऐसा नहीं हो सकता। शेरशाह की फ़ौज फ़तहयाब होकर रहेगी। आह! कौन?

खवास : मैं हूँ-शहंशाह का गुलाम-खवास खाँ!

शेर : **(उत्कंठा से)** खवास खाँ, बताओ, जंग की क्या खबर है?

खवास : शहंशाह का झण्डा कालिंजर के किले पर फहरा रहा है।

शेर : खुदा ! तुम्हारा लाख लाख शुक्र है। खवास खाँ, मेरा काम पूरा हो गया। कुछ दिन और ज़िन्दा रहता तो और काम करता, लेकिन खुदा को यह मंजूर नहीं।

खवास : जहांपनाह!

शेर : इरादा था कि हिन्दोस्तान की छोटी बड़ी रियासतों को एक डोर में बांध दूँ ताकि बाहरी हमले से......लेकिन वैसा हो न सका.....शायद मेरे बाद और कोई बादशाह ऐसा सोच सके-कर सके।

खवास : जहांपनाह!

शेर : मेरे लिए फ़िक्र न करो भाई ! खुदा का शुक्रगुजार हूँ। उसने मेरी खाहिश पूरी की। कालिंजर.....आह! ससराम में मुझे दफन किया जाये। आह! हिन्दोस्तान! या खुदा !

(मृत्यु)

करुण संगीत । दूर में अज़ान ।

Scanned with OKEN Scanner

चतुर्भुज-साहित्य

नाटक : रावण, सिकन्दर-पोरस, पीरअली, झांसी की रानी, शिवाजी, मुद्राराक्षस, शकुन्तला, पाटलिपुत्र का राजकुमार, बहादुरशाह, नूरजहाँ, अरावली का शेर, कुँवर सिंह, सिराजुद्दौला, मीरक़ासिम, मोर्चे पर, कंस-वध, श्रीकृष्ण, कलिंग-विजय, कृष्णकुमारी, कर्ण, मेघनाद, भगवान बुद्ध, भीष्म-प्रतिज्ञा, बन्द कमरे की आत्मा, कालसर्पिणी, बाबू विरंचीलाल, विजय-तिलक (एकांकी-संग्रह), झेलम के किनारे (एकांकी-संग्रह), नदी का पानी एवं अन्य नाटक।

उपन्यास : समुद्र का पक्षी (ऐतिहासिक), राजदर्शन (ऐतिहासिक)

कहानी-संग्रह : कमरे की छाया, इतिहास बोल उठा

इतिहास : औरंगजेब

अंगरेजी में : Memoirs of William Tayler of 1857,
The Great Historical Dramas, The Rani of Jhansi

अन्य साहित्य

पत्रकारिता-जगत : लेखक-अशोक प्रियदर्शी और सुनील कुमार सिन्हा (मूल्य-60/-)
नेहरू को अपना कानूनी वारिस मैंने कभी नहीं कहा : गाँधी विचार :
लेखक-सुनील कुमार सिन्हा (मूल्य-15/-)

मगध कलाकार प्रकाशन

106, श्रीकृष्णनगर, पटना - 800 001

Scanned with OKEN Scanner

डॉ०चतुर्भुज

एम० ए०, पी-एच० डी०

जन्म 1928 ई०। पालि और बौद्ध साहित्य में एम०ए०। नालन्दा में रहकर बौद्ध साहित्य का अध्ययन। हिन्दी में रंगमंचीय नाटकों का अभाव देखकर नाटक-लेखन और अभिनय की ओर प्रवृत्त। 'मगध कलाकार' (मगध आर्टिस्ट्स) नामक नाट्य संस्था की स्थापना 1952 ई० में जिसका मुख्य उद्देश्य है ऐतिहासिक, सांस्कृतिक, और पौराणिक नाटकों का मंचन। 'मीरकासिम' नाटक पर उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा पुरस्कृत। रेलवे की सेवा की। फिर अन्तरराष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त नव नालन्दा महाविहार, नालन्दा में कई वर्षों तक रहे। इतिहास, पुराण और बौद्ध साहित्य से सम्बन्धित हिन्दी और अंगरेजी में अनेक पुस्तक और लेख प्रकाशित। आकाशवाणी में केन्द्र निदेशक पद से सेवा निवृत्त। नाटक के प्रचार-प्रसार, पठन-पाठन के लिए संघर्षशील। इनके प्रयास से ल. ना. मिथिला विश्वविद्यालय में एम. ए. स्तर पर नाट्यशास्त्र का अध्यापन, जहां ये प्रथम नाट्य शिक्षक के रूप में रहे। रंगमंच, टी.वी. और रेडियो के सफल लेखक, निर्देशक और कलाकार के रूप में बहुचर्चित।

Scanned with OKEN Scanner